ॐ ओ३म् ॐ

कलौतु केवला भक्तिः ।

# सत्य शब्द संग्रह

प्रकाशक व मुद्रक

भूमानन्द ब्रह्मचारी "भक्ति प्रेम"

श्रीभगवद्भक्ति आश्रम रेवाड़ी ।

अष्टदशावृत्ति १००० | सम्वत् २०१३ | मूल्य १।)

भू

करुणावरुणालय भगवान
कृपा से हमें आज इस
शित करने का शुभावसर प्राप्
कम नहीं कर सके थे। इस
यथाक्रम रख कर सर्व प्रकार से
ज्ञानी जीव माया जाल में फंस
ता है जो जनक रूप होकर इस
कटित विश्व का पालन करता है
त्र कहलाने के लिये सब से
भी कीर्तन रूपी भक्ति एवं
कठिन परिश्रम से कबीर सूरदास
पूजनीय महात्माओं की वाणियों
भक्ति से युक्त है और जिनको
उद्धार हो सकता है यह संग्रह
वाणियों का सार है इसका पूर्ण
के चरण की कृपा से इनका
हमारी यही प्रार्थना है कि जो
में प्रीति हो और वह भगवान

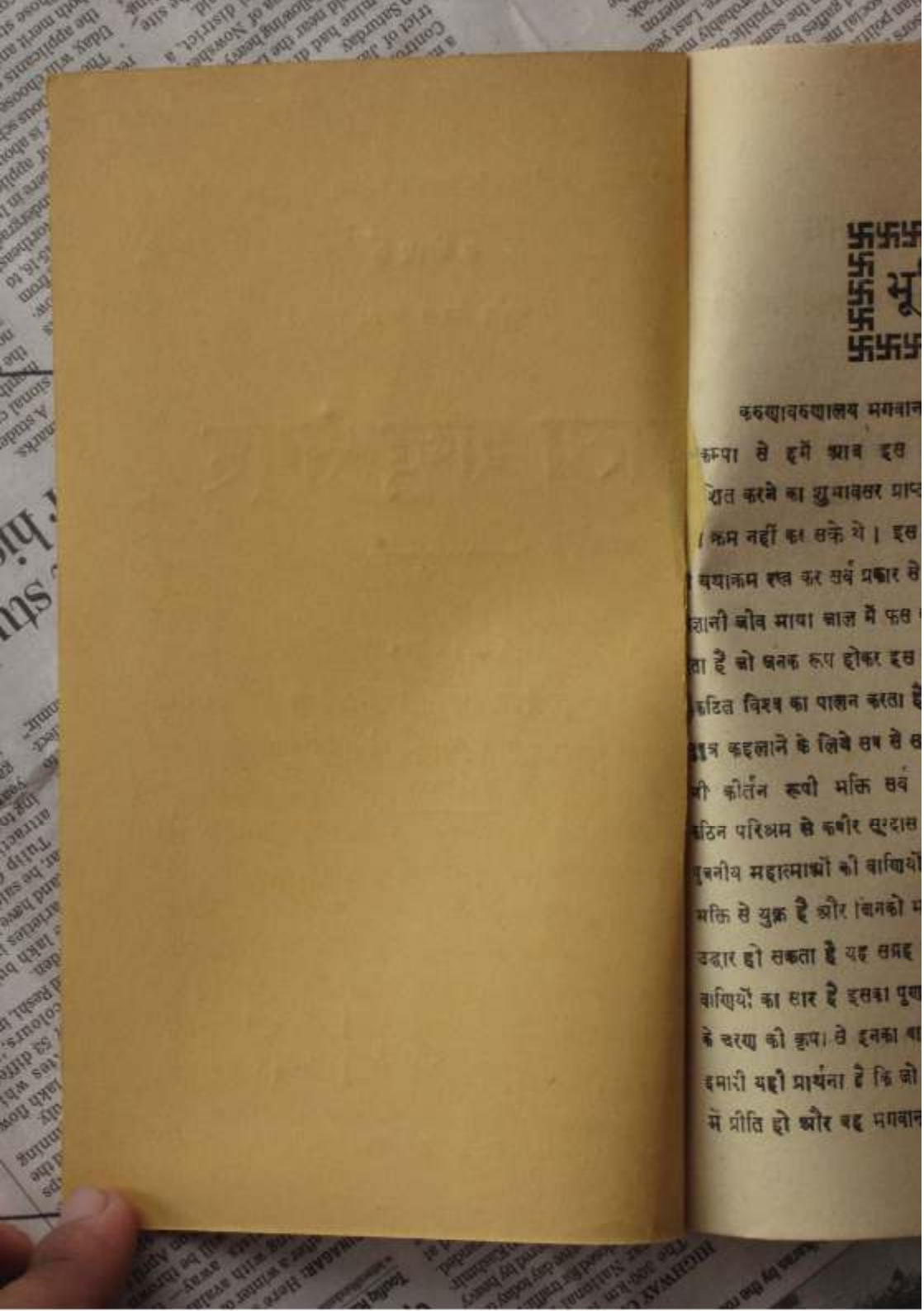

# भूमिका

करुणावरुणालय भगवान को कोटिशः धन्यवाद है जिनकी महती कृपा से हमें आज इस सर्व जनोपयोगी पुस्तक का १३वां संस्करण प्रकाशित करने का शुभावसर प्राप्त हुआ है। पहले संस्करणों में हम इसे क्रम नहीं कर सके थे। इस संस्करण में इस पुस्तक के सब विषयों को यथाक्रम रख कर सर्व प्रकार से रुचिकर बनाने का प्रयत्न किया है। अज्ञानी जीव माया जाल में फस कर उस परम पिता परमात्मा को बिसार देता है जो जनक रूप होकर इस समस्त संसार को प्रकट करता है और पुनः प्रकटित विश्व का पालन करता है। इस कलिकाल में ऐसे भगवान् के पुत्र कहलाने के लिये सब से सरल मार्ग उनकी भक्ति है। नवधा भक्ति में भी कीर्तन रूपी भक्ति सर्व श्रेष्ठ है। इसी हेतु भक्त जनों के लाभार्थ कठिन परिश्रम से कबीर सूरदास तुलसीदास मीरां नानक रैदास दादू आदि पूजनीय महात्माओं की वाणियों का जिनके एक २ शब्द परम श्रद्धा और भक्ति से युक्त है और जिनको भक्ति युक्त गाने से जीव का संसार सागर से उद्धार हो सकता है यह संग्रह किया है। यह उन महात्माओं की ऐसी पवित्र वाणियों का सार है इसका पूर्णानन्द वो वही प्राप्त कर सकेंगे जो श्री सद्गुरु के चरणों की कृपा से इनका बार बार मनन व निदिध्यासन करेंगे। अन्त में हमारी यही प्रार्थना है कि जो इस पुस्तक को पढ़े उनको श्रीसद्गुरु के चरणों में प्रीति हो और वह भगवान् की भक्ति के अनुरागी होकर भवसागर में

तने के अधिकारी हों।

भूमानन्द ब्रह्मचारी

श्री भगवद्भक्ति आश्रम रेवाड़ी।

# साधारण नियम

१—मनुष्य का पहिला कर्तव्य है कि सद्गुरु की शरण में जावे और उनकी कृपा सम्पादन करने के लिए शुद्ध चित से उनकी सेवा करें।

२—उन सद्गुरु के वचनों पर दृढ़ विश्वास रक्खें।

३—साधु सज्जन का सत्संग करें।

४—एक ही मत मार्ग का अनुसरण करें।

५—विषयों के आधीन न हो।

६—शत्रुओं को मित्र बनावे।

७—अधिक उपाधि न बढ़ावे।

८—निरन्तर सारासार का विचार करता रहे।

९—भूत मात्र पर दया रक्खे।

१०—अहर्निश परमात्मा का ध्यान करके उन पर आस्था रक्खे।

---

* ओ३म् *

# ॐ भूर्भुवः स्वः । ओं तत्सवितुर्वरेण्यं । भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ॥

ओं=सर्वव्यापक सबकी रक्षा करने वाले ।

भूः=सत्तास्फूर्ति देने वाले सत्य स्वरूप परमात्मा ।

भुवः=सर्व दुखों के नाशक, चैतन्य स्वरूप और ज्ञान स्वरूप ।

स्वः=सुख स्वरूप, सबको सुख देने वाले ।

तत्=अनन्त अपार परब्रह्म ।

सवितुः=सब जगत् के उत्पन्न करने वाले, प्रेरणा करने वाले पवित्र करने वाले सविता देव ।

वरेण्यम्=भजनीय, उपासनीय, वर्णन करने योग्य तारीफ के लायक ।

भर्गो=सब पापों के भर्जन नाश करने वाले शुद्ध तेजः स्वरूप, ज्योति स्वरूप परब्रह्म परमात्मा ।

देवस्य=ज्ञान, आनन्द और प्रकाश के देने वाले, विजय कराने वाले, दिव्य स्वरूप, पूर्वोक्त गुण युक्त ऐसे आप परमात्मा का ।

धीमहि=हम ध्यान करते हैं, हम तुम्हारी शरण होते हैं हम में हम पना आप ही हैं ।

यः=वह परमात्मा ।

नः=हमारी ।

धियः=बुद्धियों को ।

प्रचोदयात्=धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में प्रेरणा करे । संसार से हटा कर अपने स्वरूप में लगावे और शुद्ध बुद्धि और प्रेम रूपी भक्ति प्रदान करे ।

गायत्री मन्त्र सब मन्त्रों में बड़ा है । इस मन्त्र का स्वयं परमात्मा ने ब्रह्मादि ऋषि मुनियों को उपदेश किया है । मनुष्य

ऐसा कल्याणकारी मन्त्र अब तक नहीं बना सका है। इस मन्त्र में भगवान् के ओं, भूः, भुवः, स्वः तत् सवितुः, वरेण्यम्, भर्गः, और देवस्य यह नौ नाम हैं। इन नौ नामों पर नौ श्लोक भी हैं। नौका में बैठ कर जैसे नदी से पार होते हैं वैसे ही नौ नामों के जपने से संसार सागर को पार कर मुक्ति को प्राप्त होते हैं। नौ नामों में ही भगवान् की स्तुति इसलिये की गई है कि इन नौ नामों में भगवान् के अनन्त नाम आ जाते हैं क्योंकि गिनती नौ तक ही है। आगे तो एक पर ही शून्य रख दिया जाता है। चारों वेदों में यह मन्त्र समान रूप से आया है इस मन्त्र से प्रातःकाल, मध्याह्न काल, सायंकाल और अर्द्ध रात्रि के समय इस प्रकार चार बार सन्ध्या करनी चाहिये। अर्द्ध रात्रि के समय सन्ध्या करने के लिये जब मनुष्य उठेंगे तो उनके घरों में चोरी आदि कोई बुरे काम न होंगे क्योंकि यह कर्म आधी रात के लगभग ही होते हैं। इस समय सन्ध्या निमित्त जाग हो जावेंगे रात्रि को भजन करके जब सोयेंगे तब बहुत अच्छे स्वप्न आवेंगे और बहुत लाभ होगा। उपनिषद् में कहा है:—

सायमधीयानो दिवस कृतं पापं नाशयति।
प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति।
सायप्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति।
निशीथ तुरीय सध्यायां जप्त्वा वाक् सिद्धिर्भवति।

गायत्री का सायंकाल में जप करने वाला दिन में किये पापों का नाश करता है। प्रातःकाल में जप करने वाला रात्रि में किये हुवे पापों का नाश करता है। दोनों समय जप करने वाला निष्पाप होता है। मध्य रात्रि में जप करने से वाक् सिद्धि प्राप्त होती है।

गायन्त्री मन्त्र का सविता देवता है। अग्नि मुख है, विश्वामित्र ऋषि है, गायत्री छन्द है और उपनयन प्राणायाम

और जप में विनियोग (इस्तेमाल) है। यह मन्त्र आदि मन्त्र है। भगवान् के भजन में स्तुति प्रार्थना और उपासना यह तीन बात होनी चाहियें। यह ऐसा मन्त्र है कि इस एक ही मन्त्र में स्तुति, प्रार्थना और उपासना यह तीनों बातें हैं। ओं भूर्भुवः स्वः आदि नौ नामों में भगवान् की स्तुति की गई है। 'धीमहि' में उपासना (ध्यान) है 'धीमहि' से भगवान् का ध्यान इस प्रकार करे:- योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहमस्मि ओं खं ब्रह्म कि जो सूर्य में स्वर्ण जैसे रंग का प्रकाश स्वरूप पुरुष है वह मैं हूं। धियो यो नः प्रचोदयात्' यह प्रार्थना है। इससे भगवान् से शुद्ध बुद्धि और परा भक्ति की प्रार्थना करे इस मन्त्र में पांच अवसान है, 'भूर्भुवः स्वः' पर दूसरा, 'तत्सवितुर्वरेण्यम्' पर तीसरा, भर्गो देवस्य धीमहि' पर चौथा और 'धियो यो नः प्रचोदयात्' यहां पर पांचवां अवसान है। प्रत्येक अवसान पर मन्त्र जपते समय कुछ ठहर कर अर्थ का चिन्तन करता हुआ मन्त्र जपे।

समस्त मुसलमानों का एक मन्त्र (कलमा) है। जिस जाति का एक मन्त्र नहीं है उसका संगठन नहीं हो सकता। भगवान् वेद में आज्ञा करते हैं कि समानो मन्त्र' तुम्हारा मन्त्र समान अर्थात एक हो। अतः सबका एक मन्त्र होना चाहिये।

सारभूतास्तु वेदानां गुह्योपनिषदो मताः।
ताभ्यः सारस्तु गायत्री तिस्रो व्याहृतयस्तथा॥

चारों वेदों का सार उपनिषद् हैं और उपनिषदों का सार

गायत्री है। इसलिए गायत्री ही एक ऐसा मन्त्र है जो सबका एक मन्त्र हो सकता है। जो गायत्री को नहीं जानता वह चारों वेदों का पारगामी भी क्यों नहीं हो शूद्र के समान है।

'या सन्ध्या सैव गायत्री'।

शास्त्रों में गायत्री को ही सन्ध्या कहा है।

'गायत्री प्रोच्यते तस्मात् गायन्तं त्रायते यतः'।

इसका नाम गायत्री इसलिये है कि यह गाने वाले को संसार सागर से पार कर देती है।

गायत्री वेद जननी गायत्री पापनाशिनी।
गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवं चेह च पावनम्॥

यह मन्त्र वेद की माता है, पाप नष्ट करने वाला है। इस मन्त्र के अतिरिक्त भूलोक तथा स्वर्ग लोक में पवित्र करने वाला और मन्त्र नहीं है।

मनु भगवान ने कहा है कि विधि यज्ञ से जपयज्ञ दश गुणा फलदायक है, इसमें भी जिसमें होठ ही हिलें शतगुणा और मानसिक सहस्र गुणा फल देता है। लेटा लेटा, बैठा बैठा, डोलता फिरता जिस भी अवस्था में हो मनुष्य गायत्री का मानसिक जप कर सकता है। इसके जपने में किसी प्रकार का भी दोष नहीं है। पुण्य ही पुण्य है। इसके जपने से सब कामना पूरी होती हैं और अन्त में स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति होती है। अर्थ सहित चाहे एक भी मन्त्र दिन में चार बार जपो वह भी कल्याण का देने वाला है। वेद का मन्त्र है, भगवान् की आज्ञा है, इससे पाप नष्ट होते हैं और ज्ञान का प्रकाश होता है।

# ❀ प्रार्थना ❀

ओं यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवेति दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकन्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥१॥

ओं येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥२॥

ओं यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥३॥

ओं येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥४॥

ओं यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु। ५॥

ओं सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥६॥

ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ओं ॥

यत्तेजः सवितुर्देवस्य वरेण्यं तदुपास्महे।
तत्तेजोऽस्माकं बुद्धीः श्रेयस्करेषु नियोजयेत् ॥

हे तेजः पुञ्ज ज्योतिः स्वरूप परमात्मन ! ज्ञान और आनन्द के देने वाले ! विजय कराने वाले ! प्रार्थना और स्तुति करने योग्य, सब को उत्पन्न करने वाले ! सबको प्रेरणा करने वाले ! अनन्त, अपार आनन्द स्वरूप, ज्ञान स्वरूप परमात्मन हम तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम्हारे गुण हम में प्रकट हों और हम तुम को प्राप्त हों। जो तुम हो सो ही हम हैं और जो हम हैं सो ही तुम हो। ऐसे ऐक्य भाव से हम तुम्हारा ध्यान करते हैं, तुम हमारी बुद्धियों को पवित्र और धर्मार्थ, काम और मोक्ष में प्रेरणा करो। हम में तेरी सच्ची भक्ति और प्रेम प्रकट होवे, सब को हम अपनी ही आत्मा समझें और हमारे शत्रु नाश को प्राप्त हों। भीतर काम क्रोध इत्यादि और बाहर हमारी उन्नति में बाधक, विघ्नकारक शत्रु सब नष्ट हों। जिससे आनन्द पूर्वक हम आपको प्राप्त हों, धन्यवाद पूर्वक हमारी आपको अनन्तबार नमस्कार हो। हमारी रक्षा करो, एक मात्र आपही हमारे रक्षक हो।

—×—

## ॥ आरती ॥

ओ३म् निरञ्जनं दुःख भञ्जनं ररंकार ओंकार ।
सत्य पुरुष, सोऽहं तुही अलखं सर्वाधार ॥
ओ३म् निरञ्जन ररंकार प्रभु, सोऽहं सत्य नाम करतार ।
अच्युत गुरु गोविन्द दातार, परमानन्द रूप निरधार ।
एक अखण्ड ज्ञान भण्डार, तुमरी ज्योति का उजियार ।
मैं, मैं, मैंपन सर्वाधार, नेति नेति कर वेद उचार ।

एक आत्मा अपरम्पार, शंकर ब्रह्म सर्वका सार ।
ओत प्रोत सबमें निरंकार, जीवन प्राण आप ओंकार ।
हरि नारायण अग्नि तार, देव देव मैं करहुं पुकार ।
कृष्णानन्ताऽचलहं गौड़, हूं फट अल्ला सर्व पसार ।
बिनवौं तुमको बारम्बार, प्रीतम प्यार करो उद्धार ।
तद्वन गणपति नैनमंझार, होवे अनन्त तुम्हें नमस्कार ।

ममात्मा परमात्मा विश्वात्मा विश्वस्वरूप ।
ब्रह्मात्मा सर्वात्मा सूर्यात्मा ज्योतिःस्वरूप ।
अखण्डात्मा पूर्णात्मा ज्ञानात्मा ज्ञानस्वरूप ।
सुखात्मा चिदात्मा सदात्मा सत्यस्वरूप ।
भावात्मा भवात्मा शुभात्मा शुभस्वरूप ।
ज्ञातात्मा ज्ञेयात्मा ध्येयात्मा ध्यानस्वरूप ।

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ।

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्ति र्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वंशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

६(ख)

# ॐ गुरु वन्दना ॐ

श्रीगुरुं परमानन्दं वन्दे स्वानन्द विग्रहम् ।
यस्य सान्निध्य मात्रेण चिदानन्दायते तनुः ॥१॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥२॥

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥३॥

यत्सत्येन जगत्सत्यं यत्प्रकाशेन भातियत् ।
यदानन्देन नन्दन्ति तस्मै श्री गुरवे नमः ॥४॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥५॥

# ❀ श्री सद्गुरु की वाणी ❀

दोहा-ओ३म् निरंजनं दुःख भंजनं ररंकार ओंकार।
सत्य पुरुष सोऽहं तुही अलखं सर्वाधार ॥

ओ३म् निरंजन ररंकार प्रभु सोऽहं सत्य नाम करतार।
अच्युत गुरु गोविन्द दातार परमानन्द रूप निरधार।
एक अखण्ड ज्ञान भण्डार तुमरी ज्योति का उजियार।
मैं, मैं, मैं पन सर्वाधार नेति नेति कर बेद उचार।
एक आत्मा अपरम्पार शंकर ब्रह्म सर्व का सार।
ओत प्रोत सब में ओंकार जीवन प्राण आप ओंकार।
हरि नारायण अग्नि तार देव देव मैं करहूँ पुकार।
कृष्णानन्ताऽचलहं गौड़ हूँ फट अल्ला सर्व पसार।
विनवो तुमको बारम्बार प्रीतम प्यार करो उद्धार।
तद्वन गणपति नैनमझार होवे अनन्त तुम्हें नमस्कार।

---

१

लहरा रही है ज्योति चिदानन्द की।
सब ब्रह्माण्डों के पृष्ठ भाग पर,
सत्ता स्फूर्ति सब को दे रही है निजानन्द की।
सारे विश्व के बाहर भीतर,
हृदय कमल में सूर्य मण्डल में।
जगमगा रही है ज्योति महानन्द की ॥२॥

यह संसार असार है अन्तिम,
एक ज्योति है अखण्डानन्द की ॥३॥
सूर्य चांद विद्युत और तारे,
अग्नि ज्योति है भवानन्द की ॥४॥
ज्योति बिना कछु और नहीं है,
अहं ज्योति है ज्ञान वही है।
अहं ब्रह्मास्मि ज्ञान की ज्योति,
जग रही है घट घट परमानन्द की ॥५॥

२

ब्रह्म का है आनन्द स्वरूप ॥टेक॥
निराकार निर्विकार निरंजन, ज्योति स्वरूप अरूप ॥१॥
अध ऊरध दायें और बायें, एक अखंड अनूप ॥२॥
आनन्द को सब चाहें प्राणी, कहा रंक कहा भूप ॥३॥
एक ही परमानन्द बिराजे, नहिं छाया नहिं धूप ॥४॥

३

भजो रे मन शुद्ध सच्चिदानन्द ॥ टेक ॥
सकल ब्रह्मण्ड पुकारें जिनको, अनन्त अपार अखंड ॥ १ ॥
पुष्प कुमार गमन में तारे, वरणत सूरज चन्द ॥ २ ॥
सभी वस्तु की सुन्दरताई, जितलावें गोविन्द ॥ ३ ॥
ओंकार अज ज्योति स्वरूपा, पूरण परमानन्द ॥ ४ ॥

४

प्रभु मैं शरणागति तेरी, निवारो शीघ्र विपत मेरी ॥ टेक ॥
अज्ञानी जानत नहीं, धर्माधर्म विचार।
जो तोहे भावे धर्म है, दूजा सभी असार ॥

नाथ काटो ममता मेरी ॥१॥
निराश्रयों का आसरा, निरधारण आधार ।
मेरा तुम बिन कोई नहीं, ऐ ! मेरे सिर्जनहार ॥
करो भव पार नाव मेरी ॥२॥
तू प्रभु अगम अपार है, बेहद और बेथाह ।
निराकार परमात्मा, सब से बे परवाह ॥
न जाने क्या मरजी तेरी ॥३॥
जो जो मैं हूँ सो सो तू है, तुझसा और न कोय ।
अहं आत्मा ब्रह्म हूँ, यह ज्ञान समर पूं तोय ॥
प्रगट हो अब न करो देरी ॥४॥

५

गई रजनी हुवा सवेरा, उठके जप लो तुम ओंकार ॥टेक॥
ब्रह्म मुहूर्त में उठ गाओ, गुण ईश्वर का ध्यान लगाओ।
परमानन्द मग्न हो जाओ, शोभन समय विचार।
आया दिन गया अंधेरा ॥ १ ॥
पूर्व दिशा अब अरुण भई है, प्रकृति देवी पट बदल रही है ।
यम ने तम की बांह गही है, जागे सब नर नार ॥
हिये में हरि को हेरा ॥ २ ॥
प्रमुदित नलिनी विहंस खिली है, प्रिय सभीर से सुरभि मिली है
अति शोभामय वनस्थली है, अलिगण करे गुंजार ॥
लसैं आम आवरे केरा ॥३॥
ऊषा देवी के दर्शन पाकर, हुये प्रफुल्लित सभी चराचर ।

तुम क्यों सोये शीश झुकाकर, जागो सब संसार ॥
करो भारत का सुलझेरा ॥४॥

वेद धर्म का सूर्य चढ़ा है, जामें ज्ञान अनन्त भरा है।
सुनो पढ़ो होय लाभ निरा है, जिससे होय उद्धार ॥
सब मिट जांय तेरा मेरा ॥५॥

नव जीवन संचार हुवा है, ऐक्य भाव विस्तार हुवा है।
सुखमय सब संसार हुवा है, ज्योति स्वरूप निहार ॥
हरि का हिरदे में डेरा ॥ ६ ॥

आश्रम में चिड़ियां चह चहावें, पक्षी मिल हरि गीत सुनावें।
नर नारी सब तुमको ध्यावें, कर रहे जय जय कार ॥
धन्यवाद कहें तेरा ॥७॥

६

सब दुःख में करें पुकार आहि मेरी मय्यारी, अरी मेरी मय्यारी
गर्भवास में रक्षा कीनी, जन्मत ही कुच मुख में दीनी।
क्षण २ में सुध हमरी लीनी, अवगुण सभी बिसार ॥
पार करी नय्यारी ॥ १ ॥

पूत कपूत भले हो जावें, मात कुमात कभी न कहावें।
बहुत दया हिरदे में आवे, जब कहै पुत्र ढिग न जाय ॥
मार मोय मय्यारी ॥ २ ॥

शक्ति रूप होय सबमें व्यापक, ब्रह्मा विष्णु रुद्र करि थापक।
जपें निरन्तर तुमको जापक, निर्मल ज्योति अपार ॥
लखै न लखय्यारी॥ ३ ॥

तात गुरु भ्राता अरु राजा, दोष क्षमा करते सब लाजा।
क्षमा स्वरूपिणी करे सब काजा, मात करे उद्धार ॥
वही रखवय्यारी ॥ ४ ॥

भक्तों में विष्णु भक्ति हो, शिव के संग आदि शक्ति हो।
बन्धन ते देती मुक्ति हो, मन में यही विचार ॥
जाऊं बलय्यारी ॥ ५ ॥

७

जय जय सीताराम मुख से बोलो रे ॥ टेक ॥

बड़े भाग्य मानुष तन पावा, सुर दुर्लभ सद् ग्रन्थन गावा।
राम भजन करो सुकरम बाबा, तज दो खोटे काम।
वृथा मत डोलो रे ॥ १ ॥

राम नाम है रत्न अमोला, एक रत्ती और बावन तोला।
सन्त जनों ने खूब टटोला, पूर्ण करदे काम।
हिय बिच तोलो रे ॥ २ ॥

अष्ट प्रकार काम को त्यागो, भगवद्भक्ति में नित लागो।
सोये बहुत दिन अब तो जागो, कौड़ी लगे ना दाम ॥
त्यार तुम होलो रे ॥३॥

इष्ट धर्म आश्रम का राखो, मुख से झूठ कभी मत भाखो।
गांव गाँव हों आश्रम लाखों, बने देश हरि धाम ॥
पाप को धोलो रे ॥ ४ ॥

८

श्रीराम चलावे काम राम रखवारा है ॥टेक॥

गर्भवास में ख्वावन हारा, उसी ने दूध कुचन में डारा।
एक उसी का लेऊ सहारा, उसी से चलता काम ॥
विश्व आधारा है ॥ १ ॥

वही राम जिन रावण मारा, सब भक्तन का कारज सारा।
उसी राम का सकल पसारा, वही मुक्ति का धाम ॥
बड़ा दातारा है ॥ २ ॥
महादेव विष्णु भगवाना, ऋषि मुनि सुर सन्त सुजाना।
राम नाम का करें बखाना, शास्त्र ऋग्यजु साम।
जिसे उच्चारा है ॥३॥
राम रमा सब के घट माहीं, राम बिना कोई अक्षर नाहीं।
राम प्रकाशे सब के माहीं, जपलो उसका नाम ॥
यही जग सारा है ॥४॥
अनन्त आकाश सूर्य शशि तारे, पृथ्वी सागर पर्वत भारे।
एक उसी के रहें सहारे, बोलो सीताराम ॥
यही एक प्यारा है ॥५॥

९

जपोरे मन मूल मन्त्र ओंकार ॥ टेक ॥
ओंकार ते बेद प्रगट भये, विद्या का भण्डार ॥ १ ॥
ओंकार का ध्यान धरे जो, हो जावे भव पार ॥ २ ॥
वेद के आदि अन्त और मध्य में, ऋषि करें उच्चार ॥३॥
चारों वेद पुराण अठारह, सर्व शास्त्र का सार ॥४॥
निरंकार और और ज्योति स्वरूपा, आप में आप निहार ॥५॥

१०

धर्म मत हारोरे जग में जिन्दगी दिन चार।
अगम लोक से चलकर आया, पल्ले खर्ची कुछ नहीं लाया।
यहां आकर गढ़ कोट चिनाया, योंहि जाता संसार ॥ १ ॥
धर्मराज के जाना होगा, सारा हाल सुनाना होगा।
फिर पाछे पछताना होगा, करलो न सोच विचार ॥ २ ॥

अब तो चेत करो मेरे भाई, तैंने वृथा उमर गवांई ।
तैं धोके काया लुटवाई, भज राम नाम है सार ॥ ३ ॥
बार बार सत्गुरु समझावें मिनखा जन्म बहुर नहीं पावे ।
गया वक्त फिर हाथ न आवे, श्री स्वामीजी कहैं हरबार॥ ४ ॥

११

म्हारे प्रेम विरह के बाण लगेंगे काहू हरि जन के ॥ टेक ॥
माया वस हो रहा अज्ञानी, जिनके सत्गुरु लगे नहीं कानी ।
चुबक चुबक रह जाय हथोड़ी जैसे घन पट के ॥ १ ॥
धन संपति में फिरत भुलाया गुरु का शब्द नहीं चितलाया ।
अन्त समय पछताय नर्क में जब लटके ॥ २ ॥
विरही की तो विरही जाने, बेदरदी नहीं पीड़ पिछाने ।
फटा कलेजा जाय बीच गया सब तन के ॥३॥
जो दीखे सो रूप हमारा, अलख लखे सोही लखने हारा ।
रोम रोम के बीच एक हुवा हरि चमके ॥४॥
शुद्ध सच्चिदानन्द अमाया, ओंकार अज ध्यान लगाया ।
परमानन्द प्रकाश हुवा, गया जम नसके ॥५॥

१२

भगवद्भक्ति आश्रम का होवे सब जग में प्रचार ॥
देश नरेश महेश की भक्ति, करो दूर जिससे हो कुमति ।
ईश्वर दे सब को मिलि सुमति, जिससे हो उद्धार ॥
मिट जाय सब दुख श्रम का ॥१॥
ग्रामों में आश्रम बनवाओ, विद्यालय वहां पर खुलवाओ ।
लड़का लड़की साथ पढावो, परदा देवो डार ॥
सब कर दो नाश भरम का ॥२॥

गऊ वृक्षों की नसल बढ़ावो, इनको कटने से बचवाओ।
जो तुम भारत का सुख चाहो, करो विद्या प्रचार ॥
हैगा यह काम धर्म का ॥ ३ ॥
गोबर का तुम खाद बनाओ, डार खेत में रतन कमाओ।
चूल्हे में नित लकड़ी जलाओ, होय सुखी नर नार ॥
है बुरा काम थापन का ॥४॥
हवादार तुम महल बनाओ, खिड़की झरोके खूब लगाओ।
पशुओं से तुम मनुष्य बनाओ, त्रेन रहा ललकार ॥
अब है यह समय करम का ॥ ५ ॥

१३

आश्रम के गाऊं गीत सुनो तुम नर नारी ॥
है राम सरोवर तीर्थ भाई, मिट्टी खोदें लोग लुगाई।
हिन्दू मुसलमान ईसाई, सब तीरथ के भये सहाई ॥
है आश्रम के बीच शोभा अति भारी ॥ १ ॥
चहुं ओर हैं तरुवर लागे, पीपल अर्जुन आम विराजे।
सीशम, कदम्ब, आंवला लागे, भोर होत ही पक्षी जागे ॥
मिल गावें संगीत उठे हैं ब्रह्मचारी ॥ २ ॥
गुरुकुल बना यहां पर भाई, दूर २ से कन्या आई।
विद्या पढ़ती चित्त लगाई, देश उन्नति होय सहाई ॥
ढ़वे अविद्या भीत होयगा सुखभाई ॥ ३ ॥
दलितोद्धार पाठशाला है, एक समीप औषधालय है।
इसका काम बड़ा आला है, साथ ही एक पुस्तकालय है।
है यह सब का मीत पत्र भक्ति जारी ॥ ४ ॥

उत्तम एक गऊशाला है, ठैरन को अतिथिशाला है।
भक्ति प्रेस खुला आला है, भक्तों ने देखा भाला है॥
जिनकी प्रभु से प्रीत धर्म पर बलिहारी ॥५॥
निष्काम कर्म सभी करते हैं, वृक्षों में पानी भरते हैं।
ध्यान प्रभु का नित धरते हैं, नहीं किसी से भी डरते हैं॥
यही जो उनकी रीत, वेद पढ़ैं ब्रह्मचारी ॥ ६ ॥
शंकर काम करै है भारी, नारायण गौशाला सुधारी।
दलसुख गावे भजन मुरारी, भूमानन्द कहे ब्रह्मचारी॥
करो शम्भू से प्रीत, हरैं संकट भारी ॥ ७ ॥

१४

दोहा–पुरुष प्रकृति ईश मिल अकार उकार मकार।
सर्व वेद का मूल है एक शब्द ओंकार ॥
राम नाम के लेत ही, होत पाप का नाश।
ज्यों चिनगारी आग की पड़े पुरानी घास ॥
तुलसी अपने राम को रीझ भजो चाहें खीज।
उलटा सीधा जामिये पड़े खेत में बीज ॥

१५

हमारे प्रभु एक तुमही ओंकार ॥ टेक ॥
मात पिता गुरु बन्धु सहोदर धन विद्या परिवार ॥ १ ॥
मन बल बुद्धि प्राण तुमही हो नयनन में उजियार ॥ २ ॥
हरि होकर हरे रंग में दीसो पत्र पुष्प फलडार ॥ ३ ॥
धरणी आकाश शशि और तारे बिजली में चमकार ॥ ४ ॥
ऊपर नीचे पर्वत सागर सब तुम अपरम्पार ॥ ५ ॥

तुम ही सूरज में हो गरजो वर्षो अमृत धार ॥ ६ ॥
एक धुनि हो तुमसे सबकी तुमरा वार न पार ॥ ७ ॥
सुन्दर शक्ति विकाश शुद्धता हमको दे दातार ॥ ८ ॥
काम क्रोध मद लोभ निवारो परमानन्द दो प्यार ॥ ९ ॥

१६

दोहा-अच्युत अगम अपार तुम तद्वन ब्रह्म अनन्त ।
परमहंस अज ईश शिव सबके आद्यरु अन्त ॥

भजोरे मन शुद्ध सच्चिदानन्द ॥टेक॥

सकल ब्रह्माण्ड पुकारे जिनको अनन्त अपार अखण्ड ।
पुष्प कुमार गगन में तारे वरणत सूरज चन्द ॥
सभी वस्तु की सुन्दरताई जितलावें गोविन्द ।
ओंकार अज ज्योति स्वरूपा पूरण परमानन्द ॥

१७

दोहा-धजा फड़के सुन्न में बाजे अनहद तूर ।
तकिया है मैदान में पहुंचेगा कोई सूर ॥

गगन मण्डल में जो जन जाकर सुने बेहद अनहद बानी ।
सातों रंग निरखता यहां पर होजावे पूरण ज्ञानी ॥ टेक ॥
श्याम पुतलिया बदल आंख की रूप रंग देखो सारे ।
सप्त ऋषियों ने सात घाट पर भिन्न भिन्न आसन मारे ॥
जिसमें थाना सहस्र कमल का तीन लोक यहां विस्तारे ।
जनिता सविता देव सवन के इध्म रूप सातों धारे ॥
चूं चूं चैकुंला झाल समध की घंटा शंख बजें न्यारे ।

धूम निहार गगन में धंसिचल ज्योति जरें नौलख तारे ॥
पांच कमल के बीच कुण्डलिनी सहज सहज ही फुंकारे ।
मेरूदण्ड से सीधा होकर तोड़ दिये नभ के तारे ॥
तीन लोक की रचना रहां पर होजावे पूरण ज्ञानी ॥१॥

दर्शन यहां तिरलोक पति के पावो मन में हर्षावो ।
सूची अग्र छिद्र में होकर बंकनाल में घुस जावो ।
तिरछा मार्ग बंक नाल का बिन सत्गुरु कुछ नहिं पावो ॥
ऊंचा नीचा ऊंचा होकर, त्रय मण्डल पर चढ़ जावो ॥
प्रत्याहार धारणा धारो सिमट बीच सुख मन आवो ।
पीपी पपीहा ऊपर बोल्यो कूर्म बन कर छिप जावो ॥
और मरे सब जग का मरना तुम जीते जी मर जावो ।
भृङ्गी गुरु का शब्द सुनो तुम चरण गुरु के चितलावो ।
तन मन सौंपो अपना उनको हो जावो सर्वस्व दानी ॥२॥

यह ब्रह्माण्ड फोड़ अण्डे से त्रिकुटी का मण्डल साजा ।
योजन लक्ष लक्ष का घेरा सहे जीव का सब काजा ॥
हास्य विलास यहां पर अद्भुत ओ३म् ओ३म् हू हू बाजा ।
रस का उठे सरूर यहां पर अनहद का बादल गाजा ॥
ज्ञान विज्ञान हुए यहां से जब मोह जाल टूटा तागा ।
गङ्गा यमुना और सरस्वती इनके भीतर तू आजा ।
अमृत रस में न्हा कर यहां पर विश्वनाथ दर्शन पाजा ।
योजन कोटि सुरत फिर जाकर दशों शून्य में मगनानी ॥३॥
द्वादश गुण प्रकाश यहां का त्रिकुटी से शून्य में आई ।

रूपवंत देवों से मिलकर सिंधु सरवर जा न्हाई ॥
महा शून्य की छवि को कोई कहो सके कैसे पाइ ।
मान सरोवर अमृत धारा आनन्द की नादयां पाइ ॥
सारंगी सितार बजे हैं श्रुति शब्द में ठहराई ।
वसु मरुत वहां बांस करैं हैं कहा कहूँ सुन्दरताई ॥
अग्नि चन्द्र समान मुखों से मंद मंद ही मुसकाई ।
आयु षोडश वर्ष सवन की ऐसी ही अबला पाई ॥
सूर्य कान्त की भूमि बनी वहां अमृत रस बरसे पानी ॥४॥

रिम झिम रिम झिम ज्योति झलके उठे प्रेम की लहर घनी ।
बाग बगीचे अमर फलों के लालों की वहां सड़क बनी
अभी सरोवर बाग बाग में तट उनका पारस की मणी ।
कैसे शोभा कहूँ यहां की सब कछु जाने आप धनी ॥
स्वयं प्रकाश रूप को लकर सुरति फिर आगे को चली ।
योजन अरब गई ऊपर को आगे मिल गई प्रेम गली ॥
दशों दिशा में घोर अंधेरा मगन भई नहीं छली बली ।
योजन खरब गई नीचे को यहां से देखी सैर भली ॥
इस पद में दस नील अंधेरा यहां से सुरती उलटानी ॥५॥

योजन खरब गई नीचे को थाह यहां की नहीं पाई ।
धर सत्गुरु का ध्यान सुरतिया उलट गगन पर चढ़ि आई ॥
महा शून्य से आगे आकर सिताऽसिता नदियां छाई ।
मण्डल चारि पुरुष दर देखा भंवर गुफा झूली जाई ॥
एक हिंडोला, यहाँ पर अद्भुत झूल रहे मुनिवर राई ।

इड़ा पिङ्गला रज्जु करके सुषमन की पटली लाई ॥
कुण्डली को लङ्घर जब खींचा पींग गगन झोका खाई।
पारा पश्यति और मध्यमा सखियों ने वाणी गाई ॥
अनहद घोर घटा विच बंसी बजते मधुरी मन मानी ॥६॥
गोपी मधुरी वाणी गावें बन्सी बजावें नन्दकुमार।
एक एक गोपी संग मिल कर सोऽहं सोऽहं रहै उचार ॥
हियरा से हियरा मिलि बैठे आनन्द को को करे सुमार।
और देव की गम नहीं यहाँ पर महादेव लई मन में धार ॥
गोपी बन कर मिले गले से चरणों से गल बैयां डार।
एक होगये स्वयं रूपमें नयनों से नयनों की धार ॥
गङ्गा यमुना अचल होगई ऐसा अद्भुत किया विहार।
रुद्र साध्य मुनी एक होगये ताड़ी लागी अगम अपार ॥
नाका टूटा सत्य लोक का उड़ गये हंसा सैलानी ॥७॥
ज्योति हंस यहां बास करे हैं सूक्ष्म चैतन्य ही दर्शाया।
जड़ स्थूल नहीं है यहां पर नहीं यहां पर काया माया ॥
प्रेम दिवानी हुई यहाँ पर सत्य सत्य आपा पाया।
हक्क हक्क धुनि सुनके बीन की फिर आपे में मगनाया ॥
रूपा स्वरूपा नदिया यहां पर सोना रूपा जलछाया।
बन उपवन हैं यहां पै अद्भुत कोटि चार इनकी छाया ॥
कोटिन सूरज चांद समाना पहुप वृक्ष पर लगि आया।
परम हंस यहां बास करें हैं एक भुशुण्ड काग पाया ॥
रस बस के सीकारे यहां पर हंस करैं मधुरी बानी ॥८॥

सत्य पुरुष का दर्शन कीया क्या वरणों सुन्दरताई।
कोटिन सूर्य्य चांद देख लो एक रोम से शर्माई ॥
पद्म त्रिलोक वरावर उनकी बिछी सेज सुख की पाई।
जाकर सोई पिया संग अपने सुध बुध अपनी बिसराई ॥
संत कहैं अब अनख लोक की महिमा और उत्तम ताई।
अरबन खरबन ज्योति चमके कोट शंख जा मलूकाई ॥
अगम लोक की गम नहीं मुझको गूंगे ने मिसरी खाई।
परमानंद गुरु चरणों पर कोट कोट ही बल जाई ॥
गुरु मिला आपा जब मेटा श्रुति शब्द में मगनानी।
सातों रंग निरखता यहां पर होजावे पूरण ज्ञानी ॥६॥

## १८

भजो राधे कृष्णा राधे कृष्णा राधे गोविन्द ॥टेक॥
केशोजी कल्याण गिरि धरण छबीला लाल।
मदन मोहन श्री वृन्दावन चन्द ॥ १ ॥
देवकी को छय्या वलभद्र जी को भय्या लाल।
जाके मुख देखेते मिटत दुःख द्वन्द्व ॥ २ ॥
ब्रज पति ब्रजराय सन्तन सदा सहाय।
मुरली धरन नैना देखे ते आनन्द ॥ ३ ॥
जादों पति जादों राज सूरन के सारे काज।
याही धुनि गावें स्वामी परमानन्द ॥ ४ ॥

---

१६

# गुरु महिमा

उनके सत्संग में जब भी हम जाते थे ॥टेक॥

मीठी वाणी से सत्कार करते थे वो,
करुणा दृष्टि से चिन्तायें हरते थे वो।
भाग दिल से हमारे सारे गम जाते थे ॥१॥

कैसा अद्भुत विलक्षण था उनका कथन,
शान्त हो जाते वहां जाके हम सब के मन।
भाग द्विविधा भरम एक दम जाते थे ॥२॥

प्रबल युक्तियां थी मनोहर वचन,
उनके उपदेश से भगवत में लगती लगन।
शब्द सद्गुरु के नस २ में रम जाते थे ॥३॥

करते हरीकीर्तन खुद कराते हमें
शब्द द्वारा अलंख को लखाते हमें,
घन की नांहीं बरस करके थम जाते थे ॥४॥

परोपकार सम्बन्धी जो होती बात,
उसको स्वीकार करते थे तज पक्ष पात,
ऐसी बातों पर फौरन ही जम जाते थे ॥४॥

करते निन्दा किसी की न स्तुति बड़ी,
शान्त और मग्न रहते थे वो हर घड़ी।
मोहन खण्डन के मार्ग में कम जाते थे ॥५॥

२०

हमारे गुरु ने ज्ञान गठड़िया खोली ॥टेक॥
उत्तराखाण्ड आदि से लाये कई वस्तु अनमोली ।
कुरुक्षेत्र कश्मीर भ्रमण कर धर काटे पर तोली ॥१॥
केसर क्षमा सुमति कस्तूरी दया सुगन्धित रोली ।
सत रूपी गोरोचन इसमें भक्ति विजिया घोली ॥२॥
लख सद्गुरु का लक्ष श्रवण सुन उनकी मधुरी बोली ।
ग्राहक आये दूर दूर से बांध बांध कर टोली ॥३॥
कई अजान पुरुष परदेशी कई हमरे हम जोली ।
सबको मिला प्रसाद भजन का जिन किन श्रद्धा डोली ॥४॥
कई एक सत्पुरुषों की थोड़े में ही तृप्ति होली ।
गुरु कृपा से यह जन मोहन लाये भरकर झोली ॥५॥

२१

आओ आओ श्री महाराज, आओ आओ योगीराज ।
आओ आओ ऋषिराज आओ आओ ॥ टेक ॥
टेर रहे हैं भक्त तुम्हारे, विकल सकल हैं दीन विचारे ।
हृदयेश्वर हे नाथ हमारे, हृदय में आन समाओ ॥१॥
तुम्ही हमारे भाग्य विधाता, हो इस जीवन के निर्माता ।
ढूंढत हैं हम क्यों नहीं पाता, आकर धीर बन्धाओ ॥२॥
आश्रम था प्राणों का प्यारा क्रीड़ास्थल था नाथ तुम्हारा ।
रो रो करता याद विचारा, क्यों नहीं सुन कर आओ ॥३॥
याद कर रहे सब ब्रह्मचारी, अर्ज सुने अब कौन हमारी ।

अशरण शरण नाथ हितकारी, अपने अङ्ग लगाओ ॥४॥
विरह निशा छाई है काली, देवी ढूंढत डाली डाली ।
कृपा सिंधु-वन अंशु माली, दया की ज्योति जगाओ ॥ ५ ॥
गृही वानप्रस्थी संन्यासी, नगर बनों में फिरत उदासी ।
अब तो दर्शन दो अविनाशी, अब न अधिक तरसाओ ॥६॥
गौवें बिलख रही हैं सारी, दुग्ध पिलावें किसे बिहारी ।
नाथ तुम्हारी है आभारी, दिल की तप्त बुझाओ ॥७॥
जय जय श्री गुरुदेव दयामय, परमानन्द निरीह निरामय ।
जयति अभीष्ट आर्त जनाश्रम, निज आनन्द लखाओ ॥८॥

## २२

योगेश्वर गुरुदेव दयामय परमानन्द अपार ।
शान्त अनीह प्रणत भयहारी शुद्ध ज्ञान भण्डार ॥टेक॥
तुम्हीं हमारे पिता औ माता, तुम्हीं सकल परिवार ।
तुम्हीं हमारे हो जीवन धन, तुम्हीं हो प्राणाधार ॥ १ ॥
तुम गति हो तुम ही मति हो, तुम्हीं हो खेवनहार ।
तुम बिन जग में कोई न हमारा, जिससे करें पुकार ॥२॥
तुमको ही ध्यावें तुमको ही पावें, गावें नाम तुम्हार ।
तव उद्देश पूर्ति हित स्वामिन, तन मन धन हो निसार ॥३॥
दिव्य ज्ञान दो भक्ति दान दो, दो निज प्रेम अपार ।
जन्म जन्म पद पद्म मधुप तव, होवे चित्त हमार ॥४॥

२३

बसो जी मेरे मन में सद्गुरु देव ॥टेक॥

छाय रहा अज्ञान अन्ध तम, सिर पर भारी खेव ॥१॥
दुस्तर गर्त नाथ माया मग, कण्टक कपट कुटेव ॥ २ ॥
भटक रहा हूँ अति व्याकुल अब, सूझत नहीं कछु भेव ॥३॥
दिव्य ज्ञान का करहू उजाला, निशिदिन करूं तेरी सेव ॥४॥

२४

आओ रलमिल हम सब गायें प्रेम प्रीत का गान।
शुद्ध भावनाओं को लेकर, धरें गुरु का ध्यान ॥ टेक ॥
गुरु हमारे कैसे दाता, मानें एक भक्ति का नाता ।
हरि भजन ही उनको भाता, देते सबको ज्ञान ॥१॥
साम्राज्य शान्ति का तब होवेगा अहंकार को जो खोवेगा।
गुरु चरणन गह जो रोवेगा पावे पद निर्वाण ॥ २ ॥
पूर्व जन्म फल सुन्दर पाये गुरु चरणन में हम सब आये।
गुरु ने आश्रम खोल दिखाये, जिनसे हो कल्याण ॥३॥
तन मन धन सब अर्पण करदो, गुरु चरणन में जीवन धरदो।
भगवां झण्डा ऊंचा करदो, चूम रहे शशि भान ॥४॥

२५

सतचित आनन्द रूप तुम्हारा परमानन्द गुरुदेव उदारा ॥टेक॥
अज्ञान निशाको नाथ नशाकर, दिव्यज्ञान का उदय हो प्रभाकर
ऐसी प्रेमामृत बहे धारा, पावन हो प्रभु यह जग सारा ॥१॥
तव पद चिह्नों पर हे स्वामी, एक ध्येय पथ के हो गामी।

उर विचधरे पद कमल तुम्हारा, पथ कंटक कोई बने न हमारा॥२
अष्ट उद्देश्यों को अपनावें. जग विच आश्रम खोल दिखावें।
बोल उठे तब यह जग सारा, इन्हीं से हो उत्थान हमारा ॥३॥

२६

गुरूजी म्हारे पूर्ण परमानन्द ॥टेक॥
समदृष्टि और शीतल ताई जैसे पूरण चन्द ॥ १ ॥
रहनी अगाध न जानी जाय कहत सुनत कटें फन्द ॥२॥
जहां २ जांय होत मुद मंगल नाशत सब दुःख द्वन्द ॥३॥
जीव उभारण देह धरि आये सद्गुरु आनन्द कन्द ॥४॥
गुरु गोविन्द जो दो कर जाने सूझत नहीं शठ अन्ध ॥५॥
भवानक जहां द्वैत न भासै वहाँ गुरु परमानन्द ॥६॥

२७

दोहा:- अलख इलाही एक है नाम धराये दोय।
कहै कबीर दो नाम सुन भरम पड़ो मत कोय॥
अलख संग मिल्योरे तुम चलो दिवाने देश ॥ टेक ॥
संत सदा उपदेश बतावें घट अन्दर दीदार लखावें ।
तन मन अर्पण करियोरे ॥१॥
शब्द विहंगम बाजे तूरा कोटि भानु जहां झलके नूरा।
बंक नाल सुध करियोरे ॥२॥
पहले पहर सुघर नर जागे चार चौंक अनहद से आगे।
अब चल कबहूं न चलियोरे ॥ ३ ॥
सुषमन देश विहंगम शीरी माया गस्त फिरे चहुँ फेरी।

भरम भूल मत रहियोरे ॥ ४ ॥
इस पद का कोई भेद निहारे कहै कबीर रैदास विचारे।
नामका व्यवहारी कोई मिलियोरे ॥५॥

२८

दोहा-भीखा बात अगम्म की कहन सुनन की नाहिं।
जो जाने सो कहै नहीं कहै सो जाने नाहिं ॥
महरम हो सोई जाने भाई साधो ऐसा देश हमारा है रे॥
बिन बादल बिजली वहां चमके बिन सूरज उजियारा है रे।
विना नयन वहाँ मोती पिरोवे बिन स्वर शब्द उचारा है रे॥
भंवर गुफा में अनहद बाजे मुरली बीन सितारा है रे।
निर्मल बूंद मिली दरिया में नहीं मीठा नहीं खारा है रे॥
जात बरण वहां सूझत नाहीं ना वहां बेद बिचारा है रे॥
वहां जाय ब्रह्म बन बैठे कहन सुनन से न्यारा है रे॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो पहुँचेगा पहुंचन हारा है रे।
इस पदको जो समझत बूझत अलख लखे सोई प्यारा है रे॥

२९

साधो हम हैं वासी वा देश के ॥ टेक॥
हमरे देश में चांद न सूरज रात दिना रहें एक से।
सुरत निरत का ताना पूरा कपड़ा बुने अलेख के॥
हमरा कपड़ा मंहगा बिकत है पहरें सन्त विवेक के।
हमरे देश का मरम को जाने सदा रहे सुख एक से।
कहैं कबीर सुनो भाई सन्तों साधू साहिब एक से॥

३०

दोहा गुरु बिन माला फेरते गुरु बिन देते दान।
गुरु बिन दान हराम है जाय पूछो बेद पुराण॥
मेरे सारे दुख बिसर गये सत्गुरु की मैंने शरण लई॥ टेक॥

और सखी सब दूबली तू बिरहन क्यों लाल।
अविनाशी की सेज पर मौजा हुई है निहाल॥१॥
अविनाशी की सेज का कह कितना बिस्तार।
कहन सुनन की गम नहीं पौढ़त बेपरवाह॥२॥
सतबन्ती पीहर बसे अन्तर पिव का ध्यान।
कहती तो लाजा रहै ऐसा है आत्म ज्ञान॥३॥
हंसी नहीं मुसका गई रहे टकटके नैन।
कहै कबीरा लख गये हे सखी सखी के सैन॥४॥

३१

दोहा-मन के बोहते रंग हैं क्षण क्षण बदले सोय।
एक रंग में जो रहे ऐसा साधु कोय॥
मेरामन बानियारे अपनी बान कभी ना छोड़े॥टेक॥

हेर फेर के दोनों पलड़े अन्दर कानी डांडी।
मन में झूठ कपट हिरदे में हाठ चौंसले मांडी॥१॥
पूरे बाट परे सरकावे कमती बाट टटोले।
पासंग मांहीं डांडी मारे बेगा बेगा बोले॥२॥
घर तेरे में कुबध किराड़ी छिन २ में चित्त चोरे॥
कुनबा तेरा बड़ा हरामी अमृत में विष घोले॥३॥

जल में तूही थल में तूही घट घट में हर बोले।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो भरम बन्धा जग डोले ॥४॥

३२

दोहा–मन के बहुते रंग हैं छिन २ बदले सोय।
इसके रंग जो ना रहे ऐसा बिरला कोय ॥

बीरा मन समझियोरे लोभी ये तिरने का घाट ॥ टेक ॥
कथनी के शूरे घने सब बांधें हथियार।
उत कोई बिरला डटे जित बाजे तलवार ॥ १ ॥
शूरा रण में जाय के किसकी देखे बाट।
ज्यों २ पग आगे धरे आप कटे चाहे काट ॥ २ ॥
हीरा बीच बजार के सब निरखत साहूकार।
जब लग जोहरी नांह मिले सबकी अक्ल खुवार ॥३॥
सती जो सत पर चढ़ गई कर प्रीतम से प्यार।
तन मन अपना वारि के मांह मिला दई छार ॥४॥
तन मन सौंपो गुरु अपने को सत्य शब्द पहचान।
मुश्किल ते आसान होगई जब ते सौंप दई जान ॥५॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो लीजो आप संभाल।
चेता जाय तो चेत बावरे नातो खायगा तोय काल ॥६॥

३३

दोहा–शब्द ही मारे मर गये शब्द ही तज गये राज
जिन ये शब्द पिछानयां सरे उन्हीं के काज ॥
चोट सहेली शेल की लागत लेतउ खवांस।
चोट सहारे शब्द की तास गुरु मैं दास ॥

घायल ना जीवे जाके लगे शब्द के सेल ॥ टेक ॥
लागी लागी सभी कहैं रे लागी नाहीं एक।
लागी जबही जानिये रे घाव न आवे एक ॥ १ ॥
लागी उनके जानिये रे राज तजे अल बेल।
अन्दर दीवा बस रहा रे घला प्रेम का तेल ॥ २ ॥
पढ़ना लिखना है नहीं रे सत संगत का खेल।
चार वेद घट में बसे हैं साचे गुरु से मेल ॥३॥
सतसंग सार अनेक हैं रे काटें यम की बेल।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो झूठे जगत के खेल ॥४॥

३४

दोहा–राम नाम मणि दीप धर जीभ देहरी दोय।
तुलसी बाहर भीतरो जो चाहे उजियार॥
हरि रस ऐसा रे जाके पिये से अमर हो जाय ॥ टेक ॥
आगे आगे दों जरैं पाछे हरियल होय।
बलिहारी वा वृक्ष की जड़ काटे फल होय ॥१॥
हरि रस मंहगा मोल का पीवे विरला कोय।
हरि रस को तो जो जन पीवे धड़ पै शीश न होय ॥ २ ॥
भक्ति करो तो कुल नहीं कुल बिन भक्ति न होय।
दो घोड़ों के ऊपर हमने चढ़ा न देखा कोय ॥३॥
भक्ति करो और कुल रहो अड़े रहो दरबार।
दो घोड़ों की कौन चलावे चारों पै हो असवार ॥ ४ ॥
राम रस पीया नाम देव ने पीपा और रैदास।
दास कबीरा ने ऐसा पीया फिर पीवन की आस ॥५॥

३५

दोहा-बालक रूपी सांइया खेले सब घट मांह ।
जो चाहे सो करत है भय काहू का नांह ॥

आपही धारम धारी म्हारे स्वामी आप ही खेल खिलारी हो।
तम्बू से असमान बनाये जमीं गलीचा डारी है ।
चांद सूरज दो मिसल बनाये तारागण फुलवारी है ॥१॥
सुरत निरत की चौपड़ मांडी तो पासा जग सारी है ।
जिसकी नरद जीत घर आवे सो नर सुघड़ खिलारी है ॥२॥
सत को चीन्ह विहंगम चीन्हा जिसकी शून्य अटारी है ।
जापर सत्गुरु राजी होवें उसका जगत भिखारी है ॥३॥
अमरलोक को किया पयाना ज्ञान घोड़े असवारी है ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो अबके जीत हमारी है ॥४॥

३६

दोहा-धूम धाम में दिन गया सोचत होगई सांझ ।
एक घड़ि हरि ना भजा जन जननि भई बांझ ॥

भजन बिन बावरे तैंने हीरासा जनम गंवाया ॥
कभी न आया सन्ते शरणा ना तैं हर गुण गाया ।
वह २ मरा बैल की नाईं सोय रहा उठ खाया ॥१॥
ये संसार हाट बनिये की सब जग सौदा आया ।
चातर माल चौगुना कीना मूरख मूल ठगाया ॥ २ ॥
ये संसार फूल संभल का सूवा देख लुभावा ।
मारी चौंच रुई निकसाई मूंडी धुन पछताया ॥ ३ ॥

ये संसार माया का लोभी ममता महल चिनाया।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हाथ कछु ना आया ॥४॥

३७

दोहा-ज्यों तिल मांही तेल है चकमक माँही आग।
तेरा साँई तोय में जाग सके तो जाग ॥

मन्दर में काई ढूंडती फिरे तेरी कुब्जगली में भगवान्।
घट ही में दीनानाथ ॥ टेक ॥

मूरत तो मन्दिर में मेली मुख से नाहीं बोले।
करनी पार उतरनी बन्दे वृथा जन्म क्यों खोले ॥१॥
गऊ मुख से गंगा निकली पांचों कपड़े धोले।
बिन साबुन [illegible] मैल कटेना हर भज २ हलुवा होले ॥२॥
तन कर कूंडी मन कर साबुन याही में शील समोले।
सुरत ज्ञान का [illegible] न मोगरा दिल का दागन धोले ॥३॥
शील सत्य की नवका चढ़के हर के दर्शन जोले।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो पर्वत राई के ओल्हे ॥४॥

३८

दोहा-ज्ञानी [illegible] ज्ञान कथ निकट रहे निज रूप।
बाहर [illegible] बापरो भीतर वस्तु अनूप ॥

बागों ना जारे तेरी काया में गुलजार ॥ टेक ॥
करणी क्यारी बाय के रे रहनी कर रखवार।
दया पौद सूके नहीं छमा शील जल डार ॥१॥
मन माली पर [illegible] के रे संयम की कर बार।

दुर्मति काग उड़ाय के रे देखे क्यों न बहार ॥ २ ॥
मन गुलाब चित्त केवड़ा रे फूल रही फुलवार ।
मुक्ति कली सदा खिल रही गूंथ पहर ले क्यों न हार ॥३॥
लोभ नहर गहरी नदी रे लख चौरासी धार ।
निगुरे २ बह गये सन्त उतर गये पार ॥४॥
अष्ट कमल दल ऊपर रे महिमा अपरम्पार ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो आवा गमन निवार ॥ ५ ॥

३६

दोहा-मूरख को समझावता ज्ञान गांठ का जाय ।
कोयला होय ना ऊजला सौ मन साबुन लाय ॥
वा घर कभी न जाना जी जाके हिरदे ही में पाप ॥टेक॥
मात पिता का कहा न माने गुरु के नहीं बचन में ।
पर तिरया से नेह लगावें सुरति नहीं भजन में ॥१॥
कंचन मैला कभी न होवे दाग रति ना लागे ।
गठरी उसकी कौन छीन ले पहरे अपने जागे ॥२॥
बाहर उजला अन्दर काला बुगले का सा भेस ।
बाहर मेल द्वेष हिरदे में भक्ति लगे ना लेश ॥३॥
गुरुमुख सेती पार उतर गये भवसागर जल तरिया ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो हर का सुमरण करिया ॥ ४ ॥

४०

दोहा-कबीर हम घर जारो आपनो लियो पलीता हाथ ।
अब घर जारें तास को जो चलै हमारे साथ ॥

साधो मूला बेटा जायो, गुरु परताप साधु की संगत,
खोज कुटुम्ब सब खायो ॥टेक॥

ममता माई जन्मत खाई पुण्य पाप दोऊ भाई।
काम क्रोध दो काका खाये खाई तृष्णा दाई ॥ १ ॥
राग द्वेष पारोसी खाये शुभ अशुभ दोउ मामा।
मोह नगर का राजा खाया तब पहुँचा उस धामा ॥२॥
दुविधा दादी अहं बड़ दादा मुख देखत ही मूआ।
मंगल चार बधाई बाजी जब यह बालक हुआ ॥३॥
ज्ञान नाम धरयो बालक का शोभा बरणी न जाई।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो घट २ रहा समाई ॥४॥

४१

दोहा-आंगन बेल आकाश फल अनब्याई का दूध।
ससासिंह के धनुष को खींचे बांझ का पूत॥

लाडो मैंडुकी री तू तो पानी में की रानी ॥ टेक ॥
कव्वा तेरा भैया भतीजा चील लगे दौरानी।
बगला तेरा छोटा देवर वाय देख मुसकानी ॥१॥
अन्धे ने मणके को बींधा बिन अंगुली सूई चलानी।
बिन ग्रीवा के माला पहरी बिन जिह्वा के बाणी ॥२॥
चार चिरैया मंगल गावें टींटा ताल बजावे।
सूतन पहर गधैया नाचे ऊंट बिसन पद गावे॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ये पद है निर्वाणी।
जो इस पद की निन्दा करे है उसको नर्क निशानी ॥ ४ ॥

४२

दोह-निश्चय होकर हरि भजे मन में राखे सांच।
इन पाँचन को वस करे ताहु न आवे आंच॥

मारग में लूटें पांच जनी॥

पांच पच्चीसों ने घेरा घाटा साधु जन चढ़ [illegible] घाटी घाटा।
घेर लिया सब औघट घाटा कलियुग चमके [illegible] अनी ॥१॥
आशा तृष्णा नदियां भारी बह गये संत [illegible] डिमधारी।
जो उभरे सो शरण तिहारी पार लगायो [illegible] धनी ॥२॥
वन में लुट गये मुनि जन नागा डस गई ममता उलटा भागा।
जाके कान गुरु ना लागा शृङ्गि ऋषि ने [illegible] धनी ॥३॥
शङ्कर लुट गये नेजाधारी परजा रैयत कौन बिचारी।
भूल पड़ी कर्मन की भारी तिरगुण झुक रहीं तीन अनी।
रामानन्द दिया गुरु हेला दास कबीर चरण का हेला।
बांका मारग पंथ दुहेला सुमरयां सिरजन हार धनी ॥५॥

४३

दोहा-पक्षी खोज मीन के मारग कहैं कबीर दो भारी।
अपरम्पार पार पुरुषोत्तम मूरति की बलिहारी॥

तन मन धन बाजी लाग रही लाग रही रे साधो लाग रही
चौपड़ मांडी पीव से रे तन मन धन बाजी लाय।
हारी तो पीव की भई रे जीतूं तो पिया मेरा है॥१॥
चार गली घर एक है रे वर्ण २ के लोग।
मनसा वाचा कर्मणा हे प्रीति निभैयो आइ ॥२॥

लख चौरासी भरम के हे पोहपर अटकी आय ।
जो अबके पोह ना पड़े हे बहुर चौरासी में जाय ॥ ३ ॥
कहैं कबीर धर्मदास से हे जीत भई को हार ।
अबके जो बाजी जीत जाय रे सोही सोहागन नार ॥४॥

४४

दोहा-कबीर सोय के क्या करे बैठा रहु अरु जाय ।
जाके संग से बीछरयो वाही के संग लाग ॥
मेरी सुरत सुहागन जाग री ॥ टेक ॥
क्या तू सोवे मोह नींद में उठके भजन बिच लाग री ॥१॥
अनहद शब्द सुनो चित देके उठत मधुर धुन रागरी ॥२॥
चरण शीश धर बिनती करियो पावेगी अचल सुहागरी ॥३॥
कहत कबीर सुनो म्हारी सुरता जगत पीठ दे भागरी ॥४॥

४५

दोहा-शब्द बराबर धन नहीं जो कोई जाने बोल ।
हीरा तो दामों मिले, शब्द का मोल न तोल ॥
शब्द झड़ लाग्यो हे बरसण लाग्यो रंग ॥ टेक ॥
जन्म मरण की चिन्ता भागी, समरथ नाम भजन लौ लागी ।
म्हारी सतगुरु दीनी सैन, सत्य घर पागयोरी ॥ १ ॥
चढ़ी सुरत त्रिभ्रम दरवाजा, तिरकुटी महल पुरुष एक राजा ।
अनहद की झनकार बजे यहां बाजारी ॥ २ ॥
अपने पिया संग जाकर सोई, संशय शोक रहा न कोई ।
कट गये करम कलेश भरम भय भागारी ॥३॥

शब्द विहंगम चाल हमारी, कहै कबीर सत्गुरु दई तारी।
रिमझिम रिमझिम होय काल वश आय गयारी ॥४॥

४६

दोहा–सुमरण से सुख होत है सुमरे दुःख जाय।
कहैं कबीर सुमरण किये, स्वामी में मिल जाय॥

भजन में होत आनन्द आनन्द ॥ टेक ॥
बरसै शब्द अमी के बादल भीजे महरम सन्त ॥
कर अस्नान मगन होय बैठे चढ़ा शब्द का रंग।
अगर वास जहां तत की नदियां बहत धारा गंग ॥
तेरा साहिब है तेरे मांहीं पारस परसे अंग।
कहत कबीर सुनो भाई साधो जपले ओ३म् सोऽहं ॥

४७

दोहा–पांच पखेरु पांच पग तीन चोंच मुख दोय।
तिरलोकी को चुगा करें लखै सो पण्डित होय॥
ऐसो २ हाल लखायो म्हारे सत्गुरु,
देख अचम्भा आया रहो जी ॥टेक॥
बिना मूल एक बिरछा देखा,
बिन पत्तर वाकी छाया रहो जी।
बिना देव एक शक्ति देखी,
अलख पुरुष थारी माया रहो जी॥ १॥
बिन पानी अस्नान बनाये,
बिन अग्नि तप आया रहो जी।

धरणी नहीं जहां आसन मांड्यो,
बिन धुनि ध्यान लगाया रहोजी ॥ २ ॥
भेद अभेद कहा नहीं जावे,
निर्मल मण्डप छाया रहोजी ।
जित देखूं तित आप ही दीखे,
दूजा नजर नहीं आया रहो जी ॥३॥
पांच पचीसों की कर रखवाली,
तिरगुण रंग लगावा रहो जी ।
निर्गुण सरगुण दोनों ठांडे,
बीच में आप समाया रहो जी ॥४॥
उलटा वेद मरम कोई जाने,
काल जीत घर आया रहो जी ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो,
प्रेम मगन हो के गाया रहो जी ॥५॥

## ४८

दोहा-काया काठी काल घुन, जन्म २ घुन खाय ।
काया माहीं काल है, काहू भरम न पाय ॥
चरखा चलता नाहीं रे मेरा चरखा हुआ पुराना ॥टेक॥
पग खूंटा दोउ हिलने लागे बीच मण्डला ढलकाना ।
सभी पंखड़िया पड़ गई ढीली चलता नाहिं मनमाना ॥१॥
नया चरखला रङ्गा चङ्गा सब का चित्त चुरावे ।
जब चरखे का रंग उतर गया देखा हू ना भावे ॥२॥

रसना तकली ऊबल लागई कहो कैसे कर छूटे।
शब्द तार सीधा नहीं निकसे घड़ी २ पै टूटे ॥ ३ ॥
मोटी महीन कातलो कुकड़िया कर अपना सुलझेड़ा।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो चेतो क्यों न सवेरा ॥४॥

४६

दोहा-गुरु समान दाता नहीं, याचक शिष्य समान।
तीन लोक की सम्पदा, सो गुरु दीनी दान॥

हमारे गुरु ने दीनी है ज्ञान जड़ी ॥टेक॥
यह तो जड़ी मोय प्यारी लागे अमृत रस की भरी ॥१॥
काया नगर में अधर एक बंगला वा में गुप्त धरी ॥२॥
पांच नाग पच्चीस नागिनी सूंघत तुरत मरी ॥३॥
इस काली ने सब जग खाया सत्गुरु देख डरी ॥४॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो लै परिवार तरी ॥५॥

५०

सत्गुरु मिले म्हारे सारे दुःख बिसरे, अन्तर के पट खुल गयेरी
ज्ञान की आग जली घट भीतर, कोटि कर्म सब जल गयेरी
पांच चोर लूटें थे रात दिन, आप ते आप ही टल गये री
बिन दीपक म्हारे भया उजाला, तिमिर कहां जाने नस गयेरी
तिरबेणी से म्हारे धार बहत है, अष्ट कमल दल खिल गयेरी
कोटि भानु म्हारे हुआ प्रकाशा, और ही रंग बदल गयेरी
अठ सठ तीरथ है घट भीतर, आपस में रल मिल गयेरीर
शून्य मण्डल में वर्षा हुई, अमी के कुण्ड उभल गयेरी
कहत कबीर सुनो भाई साधो, नूर में नूर जो मिल गयेरी

५१

अवधु सो योगी गुरु मेरा जो इस पद का करे निवेरा ॥टेक॥
तरुवर एक मूल बिन ठाडा बिन फूले फल लागे।
शाखा पत्र कछु नहीं वाके अष्ट कमल दल गाजे॥ १॥
चढ़ तरुवर दो पक्षी बोले एक गुरु एक चेला।
चेला रहा जगत चुन खाया गुरु निरन्तर खेला॥ २॥
शून्य शिखर पर गाय बियानी धरती क्षीर जमाया।
माखन रहा सो सन्तन खाया छाछ जगत भरमाया॥ ३॥
पक्षी खोज मीन के मारग कहैं कबीर दो भारी।
अपरम्पार पार पुरुषोत्तम मूरति की बलिहारी॥ ४॥

५२

साधो अब ना लगेगा थारा दावरे॥ टेक॥
जागत असुर ये सोवत नाहीं तुमरे मन में बड़ा चावरे।
अब के लौट बगद घर जावो फेर लौट तुम आवरे॥ २॥
रिम झिम रिम झिम ज्योति झलके मन में समाव रे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो आवा गमन नसाव रे॥४॥

५३

दोहा–साहेब से सब होत है बन्दे से कछु नांह।
राई ते पर्वत करे पर्वत राई मांह॥

साधो राम करे सोई होय रे॥ टेक॥
परवा पछवा पवन चलत है असुर रह्यो सोय रे॥१॥
तोरो या गढ़ को भीतर आवो बंधी धरी है दोय रे॥२॥

सब जग अपने धन्धे में लागे तुम्हें न देखे कोयरे ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो लखे निरन्तर जोयरे ॥४॥

५४

दोहा-भली भई जो गुरु मिले, नातर होती हान ।
दीपक ज्योति पतंग ज्यों, परता आय निदान ॥

वा घर की सुध कोई न बतावे जा घर से जीव आया हो ॥टेक॥
ब्रह्मा विष्णु महेश नहीं थे किसने जीव बनाया हो ॥ १ ॥
पानी पवन को दही जमाया अग्नि को जामन दीना हो ॥२॥
चांद सूरज दो बने अहीरा मथके माखन काढ़ा हो ॥३॥
रे मनसा माया का लोभी तुझे बार २ समझाया हो ॥४॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो वह घर गुरु ने लखाया हो ॥५॥

५५

सजन घर चलौ सुहाग भरी ॥ टेक ॥
शब्द की डुलिया पांच कहार, चरण धरो हे विचार विचार ।
पांच मवासे घोड़े असवार, ज्ञान खड्गले होले हुश्यार ॥१॥
इस मक्के की छोड़दे रीत, पारब्रह्म से जोड़ो प्रीत ।
कहै कबीर जागै उनके भाग, मिला सत्गुरु दिया है सुहाग ॥१॥

५६

जतन बिन मिरगां ने खेत उजारा ॥ टेक ॥
पांच मिरग पच्चीस मिरगनी तामें तीन चिकारा ।
अपने अपने रस के भोगी चुग रहे न्यारा न्यारा ॥ १ ॥
उठ के झुण्ड मृगा के आये बैठे खेत मंझारा ।
हो हो करत वालि ले भाये मुख बाधे रखवारा ॥२॥

मारे मारे टरे नहीं टारे बिगरे नाहीं बिडारा ।
अति ही प्रपंच महा दुःख दाई तीन लोक पचि हारा ॥३॥
ज्ञान का भूला सुरतां का चूका गुरु शब्द रखवारा ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो विरले भले सहारा ॥४॥

५७

आप बिन कौन सुने प्रभु मेरी ॥टेक॥
तुम समरथ सब लायक दाता मोपर कृपा करो री ॥१॥
दास की विपत निवारण कीजे, अर्ज करूं कर जोरी ॥२॥
के कोई भीड़ पड़ी भक्तन पर, जहां जहां कीनी फेरी ॥३॥
कै तेरे घर में टोटो आगयो, कै निद्रा ने घेरी ॥४॥
कहत कबीर देर कहां कीनी, नाथ शरण में तेरी ॥५॥

५८

कैसे सुध बिसराई नाथ मेरी ॥टेक॥
तुम बिसरायां कोई न संगी, मात पिता सुत भाई ।
दुनिया दारी मतलब नाता यह जग रीत चलाई ॥१॥
दीन दयाल नाम है तुमरो, दीनन करत सहाई ।
जल डूबत गजराज उबारयो, छिन में लियो बचाई ॥२॥
भारत में भंवरी को अण्डा, बचा लिया जदुराई ।
सैन भगत को कारज सारयो, आप बने हरि नाई ॥३॥
पल पल खबर लेत प्रभु मेरी, अब क्यूं नजर छिपाई ।
कहत कबीर आस प्रभु तुमरी, तुम पूरण सुखदाई ॥४॥

५१

अवधू भूले को घर लावैं, सो जन हमको भावैं ॥टेक॥
घर में योग भोग घर ही में घर तजि बन नहिं जावैं।
बन के गये कल्पना उपजै तब धौं कहा समावैं ॥१॥
घर में जुक्ति मुक्ति घर ही में जो गुरु अलख लखावैं।
सहज सुन्न में रहै समाना सहज समाधि लगावैं ॥२॥
उनमनि रहै ब्रह्म को चीन्हें परम तत्त को ध्यावैं।
सुरत निरत से मेला करिके अनहद नाद बजावैं ॥३॥
घर में बसत वस्तु भी घर है घर ही वस्तु मिलावैं।
कहै कबीर सुनो हो अवधू ज्यों का त्यों ठहरावैं ॥४॥

६०

करो जतन सखि सांई मिलन की ॥टेक॥
गुड़िया गुड़वा सूप सुपलिया।
तजि के बुधि लरिकैयां खेलन की ॥१॥
देवता पित्तर भुइयां भवानी।
यह मारग चौरासी चलन की ॥२॥
ऊंचा महल अजब रंग बंगला,
सांई की सेज लगी फूलन की ॥३॥
तन मन धन सब अर्पन करि बहां।
सुरत सम्हार परं पइयां सजन की ॥४॥
कहैं कबीर निर्भय होय हंसा।
कुंजी बताओ ताला खुलन की ॥५॥

६१

साहिब डूबत नाव अब मोरी ॥

काम क्रोध की लहर उठत है मोह पवन झकझोरी ॥१॥
लोभ मोरे हिरदे घुमरत है सागर वार न पारी ॥२॥
कपट को भंवर परत है बहुतै वामें बेड़ा अटको ॥३॥
फांसी काल लिये है द्वारे आया सरन तुम्हारी ॥४॥
धरमदास पर दाया कीन्हों काटि फन्द जिव तारी ॥५॥
कहे कबीर सुनो हो धर्मन सतगुरु सरन उबारी ॥६॥

६२

मन ताहे किस विधि कर समझाऊं ॥ टेक ॥

सोना होय तो सुहाग मंगाऊं, बंकनाल रस लाऊं ॥१॥
ज्ञान शब्द की फूंक चलाऊं, पानी कर पिंघलाऊं ॥२॥
घोड़ा होय तो लगाम लगाऊं ऊपर जीन कसाऊं ॥३॥
होय सवार तेरे पर बैठूं चाबुक देके चलाऊं ॥४॥
हाथी होय तो जंजीर घड़ाऊं, चारों पैर बन्धाऊं ॥५॥
होय महावत तेरे पर बैठूं, अंकुश लेके चलाऊं ॥६॥
लोहा होय तो ऐरण मंगाऊं, ऊपर घूवन घुवाऊं ॥७॥
घूवन की घनघोर मचाऊं, जन्तर तार खिचाऊं ॥८॥
ज्ञानिन हो तो ज्ञान सिखाऊं, सत्य की राह चलाऊं ॥९॥
कहत कबीर सुनो भई साधो, अमरापुर पहुंचाऊं ॥१०॥

६३

अब तुम कब सुमरोगे राम, जिवड़ा दो दिन का मिजमान।
गरभपान में हाथ जुड़ाया, निकल हुवा बेईमान ॥१॥
बालपने में खेल गुमाया, तारुनपन में काम ॥२॥
बुड्ढेपन में कांपन लागा, निकल गया अवसान ॥३॥
झूंठी काया झूठी माया, आखिर मौत निदान ॥४॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, यहां घोड़ा मैदान ॥५॥

६४

गुरु बिन कौन बतावे बाट, बड़ा विकट यमघाट ॥
भ्रांति की पहाड़ी नदिया बिच में अहंकार की लाट ॥१॥
मदमत्सर का मेह बरसत माया पवन बहे दाट ॥२॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो क्यों तरना यह घाट ॥३॥

६५

कहां करूं तस्बी और माला मन माला भया मेरा रे ॥टेक॥
ज्ञान डोर और मन का मणिया सुरत निरत से फेरा रे।
आठ पहर सोवत और जागत लाग रहा जप तेरा रे ॥१॥
गोदी में पुत्र नगर सब हेरा, दीवा तले अंधेरा रे।
मानत नाहीं अमाना जिवड़ा किया जतन बहुतेरा रे ॥२॥
हिन्दू तो ग्यारस कर भूला, मुसल्मान कर रोजा रे।
षट दर्शन तीर्थ कर भूला, तन मन काहु न खोजा रे ॥३॥
देव देहरा सब ही देखा, दोगाहन विचहेरा रे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो कर अपना मुलझेरा ॥४॥

६६

सन्तो तन खोजा मन पाया ।

मन ही श्रोता मन ही वक्ता मन ही निरञ्जन राया ॥ टेक ।
मन गुण तीन पांच तत्व मनही मन का सकल पसारा ।
जैसे चन्द्र उदक में दरशे, है माहिं पर न्यारा ॥१॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुर्या, ये सब मन की झांई ।
दश अवतार अंशधर लीला, मन बिन द्वितीया नाहीं ॥२॥
शशिकर मण्डल रहे एक रस, घट बढ किरण लखाया ।
जैसे कंचन के आभूषण बहु विधि नाम धराया ॥३॥
आदि था सो ही अब होगा, सत्गुरु भेद लखाया ।
कहे कबीर कंचन के आभूषण एक भया जब ताया ॥४॥

६७

जे तन लग गई सोई जाने दूजा क्या जाने मेरा भाई ।टेक॥
रस्ता में एक घायल घूमे, घाव नहीं रे भाई ।
सत्गुरु बाण विरह का मारा साल रहा तन माहीं ॥१॥
धना भक्त रैदास नामदेव लग गई मीरां बाई ।
बलख बुखारे के ऐसी लग गई, छोड़ गया बादशाही ॥२॥
रंका लग गई बंका लग गई लग गई सेना नाई ।
पीपा नाद भडा के लग गई कूद पड़ा जल माहीं ॥३॥
दास कबीरा मन का धीरा जिन ये लगन लगाई ।
जिन की चोट निशाने लग गई फते चाकरी पाई ॥४॥

६७

आनन्द मंगल गावो मोरी सजनी।
भयो प्रभात बीत गई रजनी ॥टेक॥
उदर निरन्तर फूली फुलवारी।
तहां मेरी मनसा करै रखवारी ॥
बरषै नाम अमी फल लागे।
पीवेंगे कोई सन्त सभागे ॥
कहत कबीर गूंगे की सैना।
सत्गुरु शब्द परख कर नैना ॥

६८

दिन ते पहर पहरते घड़ियां आयु घटे तन छीजै ॥
काल अहेरी फिरे बधिक ज्यों कहो कवन विधि कीजै ॥१॥
जब लग ज्योति काया में बरतें आपा पशू न बूझे ॥२॥
लालच करे जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझे ॥३॥
कहत कबीर सुनो रे प्राणी छोड़ो मन के भरमा ॥४॥
केवल नाम जपो हे प्राणी। परो एक की शरणा ॥५॥

६९

करो मन वा दिन की तदबीर ॥टेक॥
भव सागर नदिया अगम बहत है, जल बाढ़े गम्भीर ॥१॥
नाव न बेड़ा लोग घनेरा, खेवन हारा बेपीर ॥२॥
घर बैठी चतुराई तिरिया, मात पिता सुतबीर ॥३॥
दौलत दुनिया कौन चलावे, संग न जायगा शरीर ॥४॥

७०

दोहा-तीरथ न्हाये एक फल सन्त मिले फल चार।
सतगुरु मिले अनेक फल कहे कबीर विचार॥

मैं कैसे आऊंगी सांवरिया थारी विकटनगरिया ॥ टेक ॥
नाम निशानी थारा पन्थ दुहेला,
चढ़त देख मेरा तन मन जरिया।
जब लग नेजू थारी पहुंचत नाहीं,
तब लग आवे खाली गगरिया ॥१॥
बेगमपुर में सोई जन जावें,
रोम रोम जिनके प्रेम की पुरिया।
कहैं कबीर सोई जन पहुंचे,
ब्रह्म अग्न पर जिनका तन मन जरिया ॥२॥

७१

दोहा-वह दिन गया अकार्थी, संगत भई न सन्त।
प्रेम बिना पशु जीवना, भक्ति बिना भगवन्त॥
अच्छे दिन पीछे गये, हरि से किया न हेत।
अब पछताये होत क्या चिड़िया खाया खेत॥

हरि के नाम बिना तेरा जन्म अकारथ जाय ॥ टेक ॥
जो नर बैठे सभा बिरानी भजन भागवत नाहिं सुना।
वे नर होंगे आप अपराधी माता ने एक पशु जना ॥१॥
कोटि यज्ञ और कोटि गलीचे दान करो सुमेरु घना।
बिना भजन तेरी मुक्ति न होगी अठसठ तीरथ न्हावे नन्हा ॥२

ध्रुव सुमेर सभी डिग जांयगे शेष नाग धरणी धरना।
चान्द सूर्य एक छिन में जांयगे तू नर जीवे कितने दिना ॥३॥
सात समन्दर पार उतरले ना कोई होगा अपना।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो यह जीवन जैसे सुपना ॥४॥

७२

दोहा-पांच शब्द धुन कर धुन्ध बाजें शब्द निशान।
घर में घर दिखलाय देसी गुरु चतुर सुजान ॥

सत्गुरु आवो हमारे गेहरे ॥ टेक ॥
सब कोई कहै तुम्हारी नारी मोको अति संदेह रे ॥१॥
एक मेक होय सेज न सोवे तब लग कैसा सनेह रे ॥२॥
रात दिवस मोय नींद न आवे नयनन बरसे मेह रे ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो हरि चरणन से नेहरे ॥४॥

७३

पानी में मीन पियासी मोय सुन सुन आवे हांसी ॥ टेक॥
जल थल सागर पूर रहा है भटकत फिरे उदासी ॥१॥
आतम ज्ञान बिना नर भटके कोई मथुरा कोई काशी ॥२॥
गङ्गा जाय गोदावरी कीनी भक्ति बिना सब नाशी ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो सहज मिले अविनाशी ॥४॥

७४

दोहा-मोमे तोमे सर्व मे जित देखूं तित राम।
राम बिना क्षण एक ही सरे न एकहु काम ॥

घट घट में पक्षी है बोलता ॥ टेक ॥
आपही डंडी आप तराजु आप ही बैठा है तोलता।
आपही माली आप बगीचा आप ही कलियां तोड़ता ॥१॥
सब में सब पन आप विराजे जड़ चेतन में है डोलता।
कहत कबीर सुनो भाई साधो मन घुण्डी है खोलता ॥२॥

७५

कछु लेना न देना मगन रहना ॥ टेक ॥
पांच तत्व का बना पींजरा जामे बोले है मेरी मैना ॥१॥
गहरी नदिया नाव पुरानी खेवटिया से मिले रहना ॥२॥
तेरो पिया तेरे घट में बसत है सखी खोल कर देखो नैना ॥३
कहैं कबीर सुनो भाई साधो गुरु के चरण में लिपट रहना ॥४

७६

दोहा—ज्यों एक ही शिला मध्य प्रतिमा विविध प्रकार।
कहै कबीर त्योंही बसे ब्रह्म मध्य संसार ॥
अजि एजि साधो एक रूप सब माही।
दूजा कर्म धर्म है कृत्रिम ज्यों दर्पण पर छाई ॥टेक॥
जल तरङ्ग ज्यों जल से उपजे फिर जल माहिं रहाई ॥
काया छाया पांच तत्व की विनशे कहा बताई ॥१॥
वही ब्रह्मा वही विष्णु महादेव सब देवनपति सांई।
रूपों में सब रूप धरे हैं बिन गुरु दरशे नाहीं ॥२॥
घट में बसे लखे कोई थोरा माया जाल भ्रमाई।
जब सतगुरु की किरपा होवे भेद भाव मिट जाई ॥३॥

सब जीवन संग वैर छोड़ मत निन्दा करे पराई ।
कहत कबीर जगत सब मिथ्या ज्यों सुपना रहे नाही ॥४॥

७७

दोहा-लगन लगन सबही कहैं लगन कहावे सोय।
नारायण जा लगन में तन मन दीजे खोय ॥
लगन बिन जागे ना निर्मोही ॥टेक॥
बिना लग्न की प्रीति बावरे ओस नीर ज्यों धोई ॥ १ ॥
हमतो रहते राम भरोसे रजा करे सोई होई ॥२॥
बिन कृपा सतगुरु नहीं पावे लाख जतन करो कोई ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो गुरु बिन मुक्ति न होई ॥४॥

७८

दोहा-मोहनी मूरत श्याम की हृदय रही समाय।
लाली मेंहदी पात ज्यों देख लखी न जाय ॥
दलाली लालन की म्हारे सतगुरु दई है बताय ॥टेक॥
लाल पड़ा मैदान में कीच रहा लिपटाय।
नुगरे नुगरे लख गये सुगरे लिया उठाय ॥१॥
सब के पल्ले लाल है सब ही साहूकार ।
गांठ खोल परखा नहीं रे इस विधि रहा कंगाल ॥२॥
इधर से अंधा आवता उधर से अन्धा जाय।
अन्धे से अन्धा मिला मार्ग कौन बताय ॥३॥
लाली लाली सभी कहें लाली लखी न कोय।
लाली लखी कबीर ने मुक्ति पाई सोय ॥४॥

७६

दोहा-भूले थे संसार में, माया के संग आय।
सतगुरु राह बताईयां, फेर मिलेंगे आय ॥
माया हो रंग बादली जामें चन्दा हो दरशे नांह ॥ टेक ॥
काया में माया बसे ज्यों पत्थर में आग ।
जो तेरी सुरता हरि मिलन की चकमक होकर लाग ॥१॥
चोर चुराई तूंबरी जल में डूबे नांह ।
वो डुबोवे वह ऊबरे करनी छानी नांह ॥२॥
काम क्रोध के बने बदरवा गर्ज रहा अंहकार।
आशा तृष्णा खिवें बीजली भीज रहा संसार ॥३॥
ज्ञान पवन जब से चली सब बादल दिये उड़ाय।
कहत कबीर सुनो भाई साधो चन्दा हो दर्शे आय ॥ ४ ॥

८०

दोहा-श्वासों की कर सुमरनी अजपा को कर जाप ।
ब्रह्म तत्व का ध्यान धर, सोऽहं आपे आप ॥
अजपा जाप जपो भाई साधो श्वासों की करलो माला ॥टेक
हाथ सुमरनी बगल कतरनी यह क्या रच दियो चाला।
लोगों के भावें भगती कमावे साहेब के मुख काला ॥१॥
जब लग दरशे ना सच्चा सांई होवे ना घट उजियाला।
बिन सतगुरु ताली नहीं लागे खुले न भ्रम का ताला ॥२॥
मनका मनिया फेरो प्राणी क्यों हो रहा मतवाला।
गठड़ी खोल लाल नहीं परखा इस विधि आया दिवाला ॥३

साध सन्त की सेवा कीजे सन्तों का देश निराला।
कहत कबीर सुनो भाई साधो त्रिगुण पीलो प्याला ॥४॥

८१

अजि ऐजी साधो सहज समाधी भली।
गुरु प्रताप भयो जा दिन से श्रुति अनन्त चली। टेक॥
आंख न मूंदू कान न मूंदू काया कष्ट न धारूं।
खुले नयन मैं हंस हंस देखूं सुन्दर रूप निहारूं ॥१॥
कहूँ सो नाम सुनूं सो सुमरण खाऊं पीऊं सो पूजा।
गृह उद्यान एक सम जानूं भाव मिटाऊं दूजा ॥२॥
जहां जहां जाऊं सो परिकरमा जो कुछ करूं सो सेवा।
जब सोऊं तो करूं दण्डवत पूजूं और न देवा ॥३॥
कहैं कबीर यह उनमन रहनी सो प्रगट कर गाई।
सुख दुख से इक परे प्रेम सुख जेही सुख रहो समाई ॥४॥

८२

जन्म तेर बातां में बीत गयो, तैंने कबहूं न नाम कह्यो ॥ टेक॥
पांच बरस का आला भोला अब तो बीस भयो।
मकर पचीसी माया कारण, देश विदेश गयो ॥१॥
तीस बरस भये अब मति उपजी, लोभ बढ़े नित नयो।
माया जोड़ी लाख करोड़ी, अजहूं न तृप्त भयो ॥२॥
वृद्ध भयो जब आलस उपज्यो, जप तप कण्ठ रह्यो।
साधु की संगत कबहूं न कीनी, वृथा ही जन्म गयो ॥३

यह संसार मतलब का लोभी, झूठा ठाठ रच्यो।
कहत कबीर समझ मन मूरख, तू क्यों भूल गयो ॥४॥

८३

सुना है हमने निर्बल के बलराम ॥टेक॥
जब तक गज बल अपनो कीनो, सरो ना एकहु काम।
जब गज ने हरि नाम सम्हारो, आगये आधे नाम ॥१॥
दीन होय जब द्रौपदी टेरी बसन रूप धरयो श्याम ॥२॥
बहुत ही साख सुनी सन्तन की अड़े संवारे हैं काम।
नरसी भक्त की हुन्डी पेली दिये रोकड़ी दाम ॥३॥
जप बल तप बल और भुजा बल चौथे बल हैं दाम।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हारे के हरि नाम ॥४॥

८४

दोहा माया तो ठगनी भई, ठग लीना सब देश।
जिस ठग ने माया ठगी, उस ठग को आदेश॥

माया महा ठगनी हम जानी ॥टेक॥
त्रिगुण फांस लिये कर डोले बोले मधुरी बानी।
केशव के कमला होय बैठी ब्रह्मा के ब्रह्मानी॥
पण्डा के मूरत हो बैठी, तीरथ हू में पानी ॥१॥
जागी के जागन होय बैठी, राजा के घर रानी।
काहू के हीरा होय बैठी, काहू के कौडी कानी ॥२॥
भक्त के भक्तन होय बैठी, शिव के भवन भवानी।
कहत कबीर सुनो भाई साधो यह सब अकथ कहानी ॥३॥

८५

नहीं छोड़ूं रे बाबा राम नाम, मेरो और पढ़न से नहीं काम ॥टेक
प्रह्लाद पठाये पठनशाल, संग सखा बहु लिये ग्वाल बाल।
मोको कहा पढावत आल जाल, मेरी पटिया पै लिखदेउ श्रीगोपाल
यह पंडामर्क से कह्यो जाय, प्रह्लाद बुलायो बेग धाय।
तू राम कहन कीं छोड़ बान तुझे तुरत छुड़ाऊं कह्यो मान ॥ २ ॥
मोको कहा सतावो बार बार, प्रभु जलथल नभ कीन्हें पार।
एक राम न छोड़ूं गुरुहिं गार मोहे घाल जार चाहे मार डार ३
काढ खड्ग कोप्यो रिसाय, तुझे राखन हारो मोहि बताय।
प्रभु खम्भ से निकसो हो बिस्तार हिरणाकुस छेद्योनख विदार ४
श्री परम पुरुष देवादिदेव भक्त हेत नरसिंह भेव।
कहे कबीर कोउ लखे न पार प्रहलाद उबारे अनेक बार ॥५॥

८६

रे भूले मन वृक्षों का मत लेरे ॥टेक॥
काटनिये से वैर नहीं है, सींचनिये से नहीं सनेहरे ॥१॥
जो कोई वाको पत्थर मारे बाहू को फल देरे ॥२॥
शीत घाम सब आपही ओटे औरों को सुख देरे ॥३॥
कहै कबीर शरण ले गुरु की, भवसागर तर लेरे ॥४॥

८७

मन लागा राम फकीरी में ॥ टेक ॥
जो सुख देखा राम भजन में, सो सुख नहीं अमीरी में ॥१॥
भला बुरा सब का सुन लीजे, कर गुजरान गरीबी में ॥२॥

हाथ में कूण्डी बगल में सोटा चारों कूंट जगीरी में ॥३॥
आखिर यह तन खाक मिलेगा, कहां फिरत मगरूरी में ॥४॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, साहिब मिले सबूरी में ॥५॥

८८

भज हंसा हरि नाम जगत में जीवन थोड़ा जी ॥ टेक ॥
काया आई पाहुनी हंस आया महमान ।
पानी का सा बुलबुला थोड़ा सा उन्मान ॥
बना कागज का घोड़ा जी ॥ १ ॥
मात पिता सुत बन्धुवा और दुलहनी नार ।
यहीं मिलै यहीं बीछड़े यह शोभा दिन चार ॥
बना दो दिन का जोड़ा जी ॥२॥
सोऊं २ क्या करे सोवत आवे नींद ।
यम सिरहाने यूं खड़े ज्यूं तोरन पै बींद ॥
खिंचा जैसे ताजी घोड़ा जी ॥३॥
राम भजन की हांसी करते मन में राखें पाप ।
पेट पलनियां वे चलेंगे जूं जंगल के सांप ॥
नेह जिन हरि सें तोड़ा जी ॥४॥
हाड़ जले ज्यूं लाकड़ी केश जलें यूं घास ।
जलती चिता कू देख के भये कबीर उदास ॥
नेह जिन हरि से जोड़ा जी ॥ ५ ॥
घूंघट का पट खोल रे, तोहे राम मिलेंगे ॥
घट घट रमता राम रमैया, कटुक बचन मत बोल रे ॥ १ ॥

रंग महल में दीप बरत हैं आसन से मत डोलरे ॥ २॥
कहे कबीर सुनो भाई साधो अनहद बाजत ढोलरे ॥३॥

८६

चरखा नहीं निगोड़ा चलता ॥टेक॥
पांच तत्व का बना है चरखा तीन गुनन में गलता ॥१॥
टूटी माल तीन भये टुकड़े टेकुवा होगया टेढा ।
मांजत मांजत हार गई मैं धागा नहीं निकलता ॥२॥
चतुर बढैया दूर बसत है किसके घर दे आऊं ।
ठोकत ठोकत हार गयी मैं तब भी नहीं संभलता ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो जले बिना नहीं छूटै ।
जलते समय में सूखा गोला धधक धधक कै जलता ॥४॥

९०

म्हारे सतगुरु हैं रंगरेज, चुनर मेरी रंगडारी ॥टेक॥
स्याही रंग छुड़ाय के रे दियो मजीठा रंग ।
धोये से छूटे नहीं रे दिन दिन होत सुरंग ॥१॥
भाव के कुण्ड नेह के जल में प्रेम रंग दई बोर ।
चसकी चास लगाय के रे खूब रंग झक झोर ॥२॥
सतगुरु ने चुनरी रंगी रे सतगुरु चतुर सुजान ।
सब कुछ उन पर वार दूं रे तन मन धन और प्रान ॥३॥
कहै कबीर रंगरेज गुरु रे मुझ पर हुये दयाल ।
सीतल चुनरी ओढि के रे भई हो मगन निहाल ॥४॥

६१

साधो यही घड़ी यही बेला ॥टेक॥
लाख खरच फिर हाथ न आवे मानुष जन्म सुहेला ॥१॥
ना कोई संगी ना कोई साथी जाता हंस अकेला ॥२॥
क्यों सोया उठ जाग सवेरे काल मारेंदा सेला ॥३॥
कहत कबीर गुरु गुण गावो झूंठा है सब मेला ॥४॥

६२

बीत गये दिन भजन बिनारे ॥टेक॥
बाल अवस्था खेल गंवायो,
जब ज्वानी तब मान कियारे ।
लाहे कारण मूल गंवायो,
अजहुं न मिटी तेरी मन की तृष्णारे ॥१॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो,
पार उतर गये सन्त जनारे ॥२॥

६३

तरफै बिन बालम मोरा जिया ॥ टेक ॥
दिन नहीं चैन नैन नहीं निद्रा तरफत २ भोर किया ।
तन मन मोर रहट अस डोले शून्य सेज पर जन्म छिया ॥
नैन थकित भये पन्थ न सूजै सांई बेदरदी सुध न लिया ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हरो पीर दुख जोर किया ॥

६४

तज दिये प्राण काया रे कैसी रोई ॥ टेक ॥

चलत प्राण काया कैसे रोई छोड़ चला निर्मोही।
मैं जाना मेरे संग चलेगो याही ते काया मैंने मलमल धोई
ऊंचे नीचे मन्दिर छोड़े गाय भैंस घर घोड़ी।
तिरया जो कुलवन्ती छोड़ी और छोड़ी पुतरन की जोड़ी
मोटी झोटी गजी मंगाई चढ़ा काठ की घोड़ी।
चार जने तोय लेके चालें फूक दई रे फागन की सी होली
भोरी तिरिया रोवन लागी बिछुड़ गई मेरी जोड़ी।
कहत कबीर सुनो भाई साधो जिन जोड़ी तिन तोड़ी

६५

मन ना रंगाये रंगाये जोगी कपरा ॥ टेक ॥

आसन मार मन्दिर में बैठे नाम छांड पूजन लागे पथरा
कनवा फड़ाय जोगी जटवा बढ़ाले, दाढ़ी बढ़ाय
जोगी ह्वै गये बकरा ॥२॥
जंगल जाय जोगी धुनिया रमाले, काम जराय जोगी
बन गये हिजरा ॥३॥
मथवा मुड़ाय जोगी कपड़ा रंगाले, गीता बांच के
जोगी ह्वै गये लबरा ॥४॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, जम दरवजवा बांधल
जाहरे पहरा ॥६॥

६६

बोलो रे सन्तो अमृत बाणी, बरसेगा कम्बल भीगेगा पानी
आग जले चूल्हा भैंभावे, पोने वाले को रोटी खावे ॥१॥
चलेगा मुसाफिर थकेगी बाट, सोने वाले के ऊपर खाट ॥२॥
आवेंगे कुत्ते भौंकेंगे चोर, मरेंगे चमार घसीटेंगे ढोर ॥३॥
कहत कबीर सुनो तुम भाई, मछली के पेटे में हथनी ब्याई ॥४

६७

हरि बिन कौन सहाई मन का ॥टेक॥
मात पिता भाई सुत बनिता, हित लागो सब फन का ॥१॥
आगे को कछु तुलहा बांधो, क्या भरवासा धन का ॥२॥
कहा बिसासा इस भांडे का, इत नक लागे ठनका ॥३॥
सकल धर्म पुण्य फल पावो, धूर बांछहु सभ जनका ॥४॥
कहै कबीर सुनो रे सन्त हु, इह मन उडन पखेरु बन का ॥५॥

६८

भीजै चुनरिया प्रेम रस बून्दन ॥टेक॥
आरत साज के चली है सुहागिन, पीय अपने को ढूंढन ॥१॥
काहे को तोरी बनी है चुनरिया, काहे के लगे चारों फून्दन ॥२
पांच तत्व की बनी है चुनरिया, नाम के लागे फून्दन ॥३
चढ़के महल खुल गयेरे किवरवा, दास कबीर लागे झूलन ॥४

६६

गगन की ओट निशाना है ॥ टेक॥
दहिने सूर चन्द्रमा बांये तिनके बीच छिपाना है ॥ १ ॥
तन की कमान सुरत का रोदा, शब्द बाण ले ताना है ॥ २ ॥

मारत बाण बिन्धा तन ही तन, सत्गुरु का परवाना ॥ ३ ॥
मारयो बाण घाव नहीं तन में, जिन लागा तिन जाना है ॥४
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जिन जाना तिन माना है ॥५॥

१००

रहना नहिं देश बिराना है ।

यह संसार कागद की पुड़िया, बून्द पड़े घुल जाना है ॥१॥
यह संसार कांटे की बाड़ी उलझ पुलझ मर जाना है ॥२॥
यह संसार झाड़ और झांकड़, आग लगे बल जाना है ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सत्गुरु नाम ठिकाना है ॥४.

१०१

मनको न तोल्यो तो का तोल्यो बनियां ॥

काहे की पूंजी काहे का सौदा, काहे की लेके दुकनियां ॥१॥
काहे की डांडी काहे का पलरा, काहे की मारो डंडरियां ॥२॥
कर्म की पूंजी धर्म का सौदा, चितकी लेके दुकनियां ॥३॥
या तन के जो डांडी पलरा, प्रेम की मारे डंडनियां ॥४॥
काया नगर के हाथ में रे, ऊंची लेके दुकनियां ॥५॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, छोड़ दे तन की लदनियां ॥६॥

१०२

अब से खबरदार रहो भाई ॥

सगुरु दीना माल खजाना, राखो जुगत लगाई ॥१॥
पाव रती घटने नहीं पावे, दिन २ बढ़ै सवाई ॥२॥
क्षमा शील की अलफी पहिने, जुगत लंगोट लगाई ॥३॥

दया की टोपी सिर पर देके, और अधिक बनि आई ॥४॥
वस्तु पाय गाफिल मत रहना, निशिदिन करौ कमाई ॥५॥
घटके भीतर चोर लगतु हैं, बैठे घात लगाई ॥६॥
तन बन्दूक सुमति का सिंगरा, प्रीत कागज दहकाई ॥७॥
सुरत पलीता हर दम सुलगै, कस पर राख चढ़ाई ॥८॥
बाहर वाला खड़ा सिपाई, ज्ञान गम्भ अधिकाई ॥९॥
साहिब कबीर आदि के अदली, हर दम लेत जचाई ॥१०॥

१०३

अब मैं अपने राम को रिझाऊं ॥

डाली छेदूं न पत्ता छेदूं, ना कोई जीव सताऊं ॥
पात पात में प्रभु बसत हैं, वाही को शीस नवाऊं ।
गंगा जाऊं न यमुना जाऊं ना कोई तीरथ न्हाऊं ॥
अठसठ तीरथ घट के भीतर तिन्ह ही में मल २ न्हाऊं ॥
औषध खाऊं न बूंटी लाऊं ना कोई वैद्य बुलाऊं ॥
पूर्ण वैद्य मिले अविनाशी वाही को नबज दिखाऊं ॥
ज्ञान कुठारा कस कर बान्धू, सुरत कमान चढ़ाऊं ॥
पांच चोर बसें घट भीतर, तिन को मार गिराऊं ॥
योगी होऊं न जटा बढ़ाऊं, ना अंग विभूत रमाऊं ॥
जोहि रंग रंगे आप विधाता, और क्या रंग चढाऊं ॥
चन्द्र सूरज दोऊ सम कर राख्यो, निज मन सेन बिछाऊं ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो आवागमन मिटाऊं ॥

१०४

मैं तो आन पड़ी चोरन के नगर, सत्संग बिना जिया तरसे ॥
इस सत्संग में लाभ बहुत है, तुरत मिलावे गुर से ॥
मूरख नर कोई सार न जाने, सत्संग में अमृत बरसे ॥
शब्द सा हीरा पटक हाथ से, मुट्ठी भरी कंकर से ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सुरत करो वाह घर से ॥

१०५

जिनकी लगन गुरु सों नाहीं। टेक॥

ते नर खर कूकर सम जग में, विरथा जन्म गवाहीं ॥ १ ॥
अमृत छोड़ि विषय रस पीवें, धिक् धिक् तिनके ताईं ॥ २ ॥
हरी बेल की कोरी तुमड़िया, सब तीरथ करि आई ॥ ३ ॥
जगन्नाथ के दर्शन करके, अजहुं न गई कड़ुवाई ॥ ४ ॥
जैसे फल उजाड़ को लाग्यो, बिन स्वारथ झरि जाई ॥ ५ ॥
कहै कबीर बिन बचन गुरु के, अन्त काल पछिताई ॥ ६ ॥

१०६

सतगुरु हो महाराज मोपै सांई रंग डारा ॥टेक॥

शब्द की चोट लगी मेरे मन में, बेध गया तन सारा ॥
औषध मूल कछु नहिं लागे, क्या करे वैद्य विचारा ॥
सुर नर मुनि जन पीर औलिया कोई न पावे पारा ॥
साहेब कबीर सर्व रंग रँगिया सब रँग ते रँग न्यारा ॥

१०७

काया गढ जीतोरे भाई ॥टेक॥

ज्योति सरूपी देव निरंजन, वेदन उनको गाई।
ओ३म् ररंग अड़े जअहं दुई दल, अजपा नाम सहाई।
सुरति सुहागन मिलती पिया को तनकी तपन बुझाई।
कहै कबीर मिले गुरु पूरे, सबद में सुरति मिलाई।

१०८

मन फूला २ फिरै जगत में कैसा नाता रे ॥टेक॥

माता कहै यह पुत्र हमारा बहन कहैं बिर मेरा।
भाई कहै यह सुजा हमारी नारी कहै नर मेरा॥
पेट पकर के माता रोवै बांह पकर के भाई।
लपटि झपट के तिरिया रोवै हंस अकेला जाई॥
जब लग जीवे माता रोवै बहन रोवे दस मासा।
तेरह दिन तक तिरिया रोवै फेर करे घर बासा॥
चार गजी चरगजी मंगाई चढ़ा काठ की घोड़ी।
चारों कौने आग लगाई फूंक दियो जस होरी॥
हाड जरै जस लाकड़ी केस जरैं जस घासा।
सोना ऐसी काया जर गई कोई न आया न पासा॥
घर की तिरिया ढूंढन लागी ढूंढ फिरि चहूँ देशा।
कहै कबीर सुनो भाई साधो छोड़ी जग की आसा॥

१०९

करम गति टारी नाहीं टरी ॥टेक॥
मुनि वसिष्ठ से पण्डित ज्ञानी सोध के लगन धरी।
सीता हरण मरण दशरथ को बन में विपत परी॥
नीच हाथ हरिचन्द्र बिकाने वली पाताल धरी।
कोटि गाय नित्य पुण्य करत नृग गिरगट जोनी परी॥
पाण्डव जिनके आप सारथी तिन पर विपत परी।
दुर्योधन को गर्व घटायो जदुकुल नाश करी॥
राहू केतू ओ भानु चन्द्रमा विधि सजोग परी।
कहत कबीर सुनो भाई साधो होनी होके रही॥

११०

हठरी छोड़ि चला बनजारा ॥ टेक ॥
इस हठरी बिच मानक मोती, कोई बिरला परखन हारा॥
इस हठरी कै नौ दरवाजे दसवां ठाकुर द्वारा॥
निकसी गई थंभो ढह परा मन्दिर रलि गया चिक्कड़गारा॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो झूठा जगत् पसारा॥

१११

मैं वारी जाऊं सतगुरु की मेरा किया भरम सब दूर ॥टेक॥
चन्द चढ़ा सब आलम देखे, मैं देखूं भ्रम दूर।
हुवा प्रकाश आश गई दूजी, ऊगा निर्मल नूर॥
माया मोह तिमिर सब नाशा, पाया हाल हजूर।
विषय विकार लाल हैं जेता, जार किया सब धूर॥

पीया प्याला सुध बुध बिसरी होगया चकना चूर ॥
हुवा अमर मरै नहीं कबहूं पाया जीवन मूर ॥
बन्धन कटा छूटिया जम से, किया दर्श मजूर ॥
ममता गई भई उर समता, दुख सुख डारा दूर ॥
समझै बने कहे नहीं आवें, भयो आनन्द भरपूर ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, बाजिया निर्मल तूर ॥

११२

हंसा जगमग जगमग होई ॥टेक॥
बिन बादल जहां बिजली चमके अमृत वर्षा होई ।
ऋषि मुनि देव करें रखवाली पिय न पावें कोई ॥
रात दिवस जहां अनहद बाजै धुनि सुनि आनन्द होई ।
झरना झरे जूह के नाके पियत अमर पद होई ॥
चेतन वाला चेत पियारे नहीं तो जात बहोई ।
साहिब कबीर प्रभु मिले विदेही चरण भक्ति समोई ॥

११३

हंसा हंस मिले सुख होई ॥ टेक ॥
यहां तो पाती हैं बगुलन की, कदर न जाने कोई ॥
जो हंसा तोरे प्यास क्षीर की, कूप नीर नहीं होई ॥
यह तो नीर सकल ममता को, हंसा तजा जस चोई ॥
षट् दर्शन पाखण्ड ज्ञानवें, भेष धरे सब कोई ॥
चार वर्ण और वेद कितावें, हंस निराला होई ॥
कहै कबीर प्रतीत मानले, जिव नहीं जाय बिगोई ।
लै बैठारो अमर लोक में आवागमन न होई ॥

११४

हमें कोई कातन देई सिखाय ॥टेक॥

कात ननदिया कात जिठनिया कात परोसिन आय ।
पौनी पांच पचीस रंग की हम से कातन जाय ॥
ब्रह्मा काता विष्णु काता नारद काता आय ।
विश्वामित्र वशिष्ठ दोऊ काता तबहू न कात सिराय ॥
तन के काते कहा भया जो, मन ही कात न जाय ।
टिकवा साधन जो बनि आवे महंगे मोल बिकाय ॥
बाला काता तरुण काता विरध काता न जाय ।
कहैं कबीर तीनों पन काता चरखा धरा उठाय ॥

११५

चरखा चलै सुरत विरहिन का ॥टेक॥

काया नगरी बनी अति सुन्दर, महल बना चेतन का ।
सुरत भांवरा होत गगन में, पीढ़ा ज्ञान रतन का ॥
चित चमरक तिरगुण के तकुवा, माल मनोरथ मनका ।
पौनी पांच पच्चीस रंग की, कुकरी नाम भजन का ॥
दृढ़ वैराग्य गाड दोऊ खूंटा, मंझा जोग जुगत का ।
द्वादश नाम धरौ दोई पखुरी, हथिया सार शब्द का ॥
महीन सूत सन्त जन कातें, मांझा प्रेम भगति का ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, जुगन जुगन सत मत का ॥

११६

है सब में सब ही ते न्यारा ॥टेक॥

जीव जन्तु जल थल सब ही में,
शब्द व्यापक बोलन हारा ॥१॥

सब के निकट दूर सब ही तें,
जिन जैसा मन कीन्ह विचारा ॥२॥

सार शब्द को जो जन पावै,
सो नहिं करत नेम आचारा ॥३॥

कहै कबीर सुनो भाई साधो,
शब्द गहे सो हंस हमारा ॥४॥

११७

काया गढ़ के मवासी जाग हो ॥टेक॥

जो बन्दे तुम जागत रही हो, तुमही को मिलत सुहाग हो ॥
जागत सहर में चोर न मूसे, नहीं लुटे भण्डार हो ॥
अनहद शब्द उठैं घट भीतर, चढ़के गगन गढ गाज हो ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सार शब्द टकसार हो ॥

११८

ऐसी रहन रहै बैरागी ॥टेक॥

सदा उदास रहै माया से, सत्य नाम अनुरागी ।
क्षमा की कण्ठी शील सरोनी, सुरति सुमरनी जागी ॥
टोपी अभय भक्ति माथे पर, काल कल्पना त्यागी ।
ज्ञान गूदड़ी मुक्ति मेखला, सहज सुई ले तागी ॥

जुक्ति जमात कुबरी करनी, अनहद धुनि लौ लागी।
शब्द अबार अधारी कहिये, भीख दया की माँगी॥
कहै कबीर प्रीति सत्गुरु से सदा निरन्तर लागी॥

११६

धुनि सुनके मनुवा मगन हुवा ॥टेक॥
लाय समाज रहो गुरु शरणा, अन्त काल दुख दूर हुवा।
शून्य शिखर पर झालर झलके, वर्षे अमीरस बून्द चुवा॥
सुरत निरत की डोरी लागी, तेहि चढ़ हंसा पार हुआ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, अगम पन्थ पर पांव दिया।

१२०

भजन बिन यौं ही जन्म गंवायो ॥ टेक ॥
गर्भवास में कौल कियो थो तब तोहीं बाहर लायो।
जठर अग्नि ते काढ निकारया गांठ बांध क्या लायो।
बह बह मुवा बैल की न्याई सोय रहो उठ खायो।
कहै कबीर सुनो भाई साधो चौरासी भरमायो।

१२१

सिपाही मन दूर खेलन मत जाव। टेक॥
दूर खेलन से मनुवा दुखित होय गगन मण्डल मठ छाव।
यही पार गंगा वोही पार जमुना बीच सरस्वती न्हाव॥
पांच को मारि पचास को वशकरि तीन को पकरि मंगाव।
कहै कबीरा धर्मदास से शब्द में सुरति लगाव॥

१२२

राजन् कौन तिहारे आवे ॥
ऐसो भाव विदुर को देख्यो वह गरीब मोहे भावे ॥
हस्ती देख भर्म ते भूला श्री भगवान न जाना ।
तुमरो दूध विदुर को पानी अमृत कर मैं आना ॥
खीर समान संग मैं राया गुण गावत रात बिहानी ।
कबीर का ठाकुर आनन्द विनोदी जाति न काहू की मानी ॥

१२३

परमात्म गुरु निकट विराजे जाग २ मन मेरे ॥ टेक ॥
धायके सतगुरु चरणन लागो काल खड़ा सिर तेरे ।
छिन २ पलर सभी सहारे बहु विधि देत न देरे ॥
जुगन २ तोहे सोवत बीता अजहुं न जाग सवेरे ।
काम क्रोध मद लोभ फन्द तज क्षमा दया दिल हेरे ॥
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला सब स्वारथ के चेरे ।
जब जम जालम आन पकरि है कोई न संग चलेरे ॥
भवसागर बांका है धारा लख चौरासी फेरे ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो जग से किये निवेरे ॥

१२४

मुखड़ा क्या देखे दर्पण में तेरे दया धर्म नहीं मन में टेक॥
कागज की एक नाव बनाइ छोड़ी गंगा जल में ।
धर्मी धर्मी पार उतर गये पापी डूबे जल में ।
आम की डारी कोयल राजी मछली राजी जल में ।

साधू रहते जंगल में राजी गृहस्थी राजी धन में।
ऐंठी धोती पाग लपेटी, तेल चुआ जुलफन में।
गली गली की सखी रिझाई, दाग लगाया तन में।
पाथर की इक नाव बनाई, उतरा चाहे छिन में।
कहत कबीर सुनो भाई साधो वे क्या चढ़ेंगे रन में।

१२५

मोरे लगि गयो बाण सुरंगी हो ॥ टेक ॥

धन सतगुरु उपदेश दियो है, होइगयो चित्त भिरंगी हो ॥
ध्यान पुरुष की बनी है तिरिया, घायल पांचों संगी हो ॥
घायल की गति घायल जानै, क्या जानै जात पतंगी हो ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, निसिदिन प्रेम उमंगी हो ॥

१२६

हमन हैं इश्क मस्ताने हमन को होसियारी क्या।
रहैं आजाद या जग से, हमें दुनियां से यारी क्या ॥टेक॥
जो बिछुड़े हैं पियारे से, भटकते दर बदर फिरते।
हमारा यार है हममें हमन को इन्तजारी क्या ॥१॥
खलक सब नाम अपने को, बहुत कर सिर पटकता है।
हमन गुरु नाम सांचा है, हमन दुनिया से यारी क्या ॥२॥
न पल बिछुड़े पिया हमसे, न हम बिछुड़ें पियारे से।
उन्हीं से नेह लागी है, हमन का बेकरारी क्या ॥३॥
कबीरा इश्क का माता, दुई को दूर कर दिलसे।
जो चलना राह नाजुक है, हमन सिर बोझ भारी क्या ॥४॥

१२७

दो०—मूक होय वाचाल पंगु चढ़ै गिरिवर गहन ।
जासु कृपासु दयाल, द्रवहु सकल कलिमल दहन ॥

बन्दौ श्री हरिपद सुखदाई ॥टेक॥
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधरे को सबकछु दरशाई ॥१॥
बहिरो सुने मूक पुनि बोले, रंक चलै शिर छत्र धराई ॥२॥
सूरदास स्वामी करुणामय, बारम्बार नमो तेहिं पाई ॥३॥

१२८

बन्दौ चरण सरोज तिहारे ॥ टेक ॥
सुन्दर श्याम कमल दल लोचन,
ललित त्रिभंग प्राणपति प्यारे ।
जे पद पद्म सदा शिव को धन,
सिन्धु सुता डर से नहिं टारे ॥१॥
जे पद पद्म तात रिस त्रासत,
मन बच क्रम प्रह्लाद सम्हारे ।
जे पद पद्म फिरत वृन्दाबन,
अहि शिर धरि अगणित रिपु मारे ॥२॥
जे पद पद्म परस व्रज युवति,
सर्वस दे सुत सदन बिसारे ।
जे पद पद्म लोकत्रय पावन,
सुरसरि दर्श कटत अघ भारे ॥३॥

जे पद पद्म परसि ऋषि पत्नी,
नृप अरु व्याध अमित खल तारे।
जे पद पद्म फिरत पाण्डव[ गृह,
दूत भये सब काज संवारे।
ते पद पंकज सूरदास प्रभु,
त्रिविध ताप दुःख हरण हमारे ॥४॥

१२६

जय नारायण ब्रह्म परायण, श्रीपति कमला कंतम्।
नाम अनन्त कहाँ लग वरणों, शेष न पावत अन्तम्॥
नारद शारद शिव सनकादि ब्रह्मा ध्यान धरंतम्।
मच्छ कच्छ सूकर नर हरि प्रभु, वामन रूप धरंतम्॥
परशुराम श्री रामचन्द्र जग, लीला कोटि करंतम्।
जन्म लियो वसुदेव देवकी गृह, नाम धरयो नन्द नंदम्॥
बैठ पाताल काली नाग नाथ्यो, फण २ निरत करतम्।
बल भद्र होकर असुर संहारे, कंस केश गहंतम्॥
जगन्नाथ जगपति चिंतामणि, होय बैठे निश्चिन्तम्॥
कलियुग अन्त अनन्त होकर, कलकी रूप धरंतम्।
दस अवतार हरि जूके गाये, सूर शरण भगवंतम्॥

१३०

दोहा-अवगुण किये तो बहु किये करत न मानी लाज।
पतित उधारण नाम सुन बिसर गये सब काज॥

हमारे प्रभु अवगुण चित्त ना धरो।
समदर्शी है नाम तुम्हारो चाहो तो पार करो ॥टेक॥
इक नदिया इक नार कहावत मैलो नीर भरो।
जब मिल गयो तब रूप एक भयो गंगा नाम परो॥
एक लोहा पूजा में राख्यो इक घर बधिक परो।
ऊंच नीच पारस नहीं जाने कंचन करत खरो॥
अबकी बेर मोय नाथ उबारो नहीं प्रण जात टरो।
यह माया भ्रम जाल निवारो सूरदास सगरो॥

१३१

दोहा—भाव पात्र में अर्प कर सुन्दर जीवन फूल।
ईश्वर के अर्पण करो यही ज्ञान का मूल॥
दीनानाथ दयानिधि स्वामी कौन भांति में तुम्हें रिझाऊं॥
श्रीगंगा चरणों से निकसी शुचो नीर कहां से प्रभु लाऊं।
काम धेनु कल्प वृक्ष तुम्हारे कौन सो पदार्थ भोग लगाऊं॥
चार वेद तुम मुख से भाषे और कहा प्रभु पाठ सुनाऊं।
अनहद बाजे बजत तुम्हारे ताल मृदङ्ग क्या शंख बजाऊं॥
कोटिभानु थारे नख की शोभा दीपक ले प्रभु कहा दिखाऊं।
लक्ष्मी थारी चरणन की चेरी कौन द्रव्य प्रभु भेट चढ़ाऊं॥
तुम तिरलोकी के कर्ता हर्ता तुम्हें छोड़ प्रभु कौन पै जाऊं।
सूरश्याम प्रभु विपत विडारन मन वांछित फल तुम ही से पाऊं॥

१३२

दोहा—मैं अपराधी जन्म का नख शिख भरा विकार।
तू दाता दुःख भंजना मेरी करो संभार॥

लज्जा मोरी राखो ना श्याम हरि ॥टेक॥
कीनी कठिन दुशासन मांसे गह कैसों पकरी ॥१॥
आगे सभा दुष्ट दुर्योधन चाहत नग्न करी ॥२॥
पांचों पण्डा सभी बल हारे इन से कछु न सरी ॥३॥
भीष्म द्रोण विदुर भये विस्मय इन सब मौन धरी ॥४॥
अब नहीं मात पिता सुत बांधव एक टेक तुमरी ॥५॥
बसन प्रवाह दिये करुणा निधि सेना हार परी ॥६॥
सूरदास जब सिंह शरण लई स्यारों की काहि डरी ॥७॥

१३३

पढ़ो रे भैया कृष्ण गोबिन्द मुरार ॥टेक॥
कहै प्रह्लाद सुनो भाई बालक लीजो जन्म सुधार ॥१॥
को है हिरणाकुश अभिमानी जो सके तुमको मार ॥२॥
राखन हारो और कोई है श्याम धरे भुज चार ॥३॥
सूरदास प्रभु शरण तिहारी तुम सब के घर बार ॥४॥

१३४

दोहा- बैठ कुसंग चाहत कुशल तुलसी बड़ो अफसोस ।
महिमा घटी समुद्र की, रावण बसो पड़ोस ॥

तजोरे मन हरि विमुखन को संग ॥टेक॥
जाके संग से कुमति उपजत है पड़त भजन में भंग ॥१॥
कहा होत काग कपूर चुगाये श्वान नुहावत गंग ॥२॥
कहा होत पय पान कराये विष नहीं तजत भुजंग ॥३॥
चन्दन लेपन गर्धव लाये मर्कट भूषण अंग ॥४॥
सूरदास यह काली कंवरिया चढ़े न दूजो रंग ॥५॥

१३५

दोहा-पपीहा प्रण कबहुं न तजे तजे तो तन वे काज।
तन छूटे तो कुछ नहीं, प्रण छूटे तो लाज॥

आज जो मैं हरि हुं न शस्त्र गहाऊं।
तो लाजूं गंगा जननी को शांतनु सुत न कहाऊं॥ टेक॥
स्यन्दन खंड सारथी खंडु कपिध्वज सहित गिराऊं॥१॥
पांडु दल सन्मुख ह्वैधाऊं सरिता रुधिर बहाऊं॥२॥
इतनी न करूं शपथ मोहे हर की क्षत्री गति नहीं पाऊं॥३॥
सूर श्याम रण भूमी विजय बिन जीवत न पीठ दिखाऊं॥४॥

१३६

चले गये दिल के दामन गीर॥ टेक॥
जब सुध आवे तुमरे दरश की उठे कलेजे पीर॥ १॥
नटवर भेष नयन रतनारे सुन्दर श्याम शरीर॥ २॥
वृन्दाबन वंशीवट त्यागो निर्मल जमना नीर॥ ३॥
आप ही जाय द्वारका छाये खारी नद के तीर॥ ४॥
सब गोपियन सों नेह बिसारो ऐसे भये वे पीर॥ ५॥
सूरदास ललिता उठ बोली आखिर जात अहीर॥ ६॥

१३७

तुम्हारे बिना बिगरी कौन सुधारे॥टेक॥
एक दिन बिगरी पिता पुत्र में बाँध धम्म से मारो।
जन अपने के काज दयानिधि; रूप नरहरि धारे॥१॥

एक दिन बिगरी भ्रात भ्रात में, लात दुशासन मारे ।
राज पाय विभीषण फतह के, बाजत लंक नगारे ॥२॥
एक दिन बिगरी राज सभा में द्रौपदि दीन पुकारे ।
ताको अनन्त चीर बढ़ायो, दुष्ट दुशाशन हारे ॥
एक दिन बिगरी जन नरसी की समधी जू के द्वारे ।
सब भान्ति भात भरो है कारज जन के सारे ॥
जब जब भीर परी भक्तन पर, तब तब कारज सारे ।
अब की बार कहां पर सोये बिपत बिडारन हारे ॥४॥

१३८

मना तैंने राम न जानारे ॥ टेक ॥
जैसे मोती ओस का रे तैसे यह संसार ।
देखत ही को झिलमिलारे जात न लागे बार ॥१॥
सोने का गढ़ लंक बनाया सोने का दरबार ।
रत्ति सोना ना मिलारे रावण मरती बार ॥२॥
दिन गमाया खेल में रे रैन गंवाई सोय ।
सूरदास भजो भगवन्ता होनी होय सो होय ॥३॥

१३९

संकट काट मुरारी हमरे संकट काट मुरारी ।
संकट में इक संकट उपज्यो अरज करै मृगनारी ॥टेक॥
इक ढिग बावर जाय गहरिया इक ढिग श्वान बिहारी ।
इक ढिगजाय अंग साडी, इक ढिग जा बैठ्यो फन्दकारी ॥१॥
उलट पवन बागर को लागी, श्वान भयो संसकारी ।
बांबी में से भुजंग सो निकस्यो, ताह डस्यो फंदकारी ॥२॥

नाचत कूदत हिरनी निकसी, भलो कियो गिरधारी।
सूरदास प्रभु तुमरे दर्श को, चरण कमल बलिहारी ॥३॥

१४०

मधुकर कौन मनायो माने ॥टेक॥

अविनाशी अति अगम अगोचर कहा प्रीति रस जाने ॥१॥
सिखवो जाय समाधी की बातें जहां हों लोग सयाने ॥२॥
हम अपने ब्रज ऐसे ही बसें हैं बिरह बाय बौराने ॥३॥
जाके तन धन प्राण सूर हरि मुख मुसकान बिकाने ॥४॥

१४१

ऊधो अब नहीं श्याम हमारे ॥टेक॥

मधु बन बसत बदल से लीने माधो मधुप तिहारे ॥१॥
इतने ही दूर भए कछु और ही जो जोई मगु हारे ॥२॥
कपटी कुटिल काक कोयल ज्यों अन्त भए उड़ न्यारे ॥३॥
रस ले भंवर जाय स्वारथ हित प्रीतम चित न बिसारे ॥४॥
सूरदास तिन सैं का कहिए जेतन हुं मन कारे ॥५॥

१४२

ऊधो मन तो नहीं हैं दस बीस।

एक मन को ले गयो सांवरो कौन भजै जगदीश ॥टेक॥
भई अति शिथिल सभी माधव बिन जैसे देह बिन शीश।
श्वासा अटक रहे आशा लगि जीवहु कोटि बरीस ॥१॥
तुम तो सखा श्याम सुन्दर के सकल योग के ईश।
सूरदास रसिक की बतियां पुरवो मन जगदीश ॥२॥

१४३

श्याम का संदेशा ऊधो पाती लेके आयोरी ।।टेक।।
पाती तो उठाय लीनी छाती सों लगाय लीनी ।
घूंघट की ओट देके ऊधो समझायोरी ।। १ ।।
बसती उजाड़ दीनी उजड़ी बसाय लीनी ।
कुब्जा पटरानी कीनी मोहे ना सुहायोरी ।।२।।
सूरश्याम जू के आगे ऐसे जाय कहियो ऊधो ।
जीवत खसम किन भसम रमायो री
कहा करूं सुनो यह गोकुल हरि बिन न सुहायो री।
सूरदास प्रभु कौन चूकते श्याम सुरत बिसरायोरी ।।४।।

१४४

ऊधो मेरे वह छबि हीये में रही ।।टेक।।
पंच वदन दृग आठ सींग द्वौ द्वादश चरण सही ।।१।।
चंपक अष्ट युगल दोऊ भर्ता दोऊ पुरुषन एक तरुण गही ।।२।।
वेद परस उठ चले सांवरे नयनन सैन दई ।।३।।
सूरश्याम रवि अंस गये घट पय तज जीवत मही ।।४।।

१४५

जी अब हरि भूले नाहिं बने ।। टेक ।।
विपत विदारन तुम हो गिरधर सुख में मित्र बने ।।१।।
मैं आधीन हूं कछु नहीं लायक तुम बिन कौन गिने ।।२।।
सूरश्याम प्रभु विपत विदारन कृत निधि शरण तुम्हें ।।३।।

१४७

हूं मिलोगे दीनानाथ हमारे ॥

जैसे मिले प्रह  र भक्त को खम्भ फाड़ हिरनाकुश मारे ।
जैसे मिले तु  ुपद सुता को खेंचत चीर दुशासन हारे ।
जैसे मिले तुम  ा बाई को जहर का प्याला अमृत कर डारे ।
जैसे मिले तुम  रसी भक्त को भात भरन को आप पधारे ।
सूरदास को क  मिलोगे टपटप टपकत नयन हमारे ॥४॥

१४८

अंखियां हरि दर्शन की प्यासी ।

देख्यो चाहत कमल नैन की निशि दिन रहत उदासी ॥१॥
आये ऊधो फिर आंगन में डारि गये गल फांसी ॥२॥
केसर तिलक मोतिन की माला, वृन्दावन के वासी ॥३॥
काहू के मन की जो जानत लोगन के मन हांसी ॥४॥
सूरदास प्रभु तुमरे दरस बिन, लैहों करवत कासी ॥४॥

१४९

बन आये की बात रे ऊधो, बन आये की बातरे ।

एक समय हरि हमने देखे, मुख धोवत ना हाथ रे ।
अब तो कृष्ण भये ब्रह्मचारी, सौ सौ बिरयां न्हात रे ॥१॥
एक समय हरि हमने देखे, छीन छीन दधि खात रे ।
अब तो कृष्ण भये हैं राजा, चढ़े सिंहासन जात रे ॥२॥

करवै पात पात कर ही पै, मांग मांग दधि खात रे।
जो माधो इस बन नहिं आते तुम क्यों आवन जातरे ॥३॥
यही बात उनसे जा कहियो, और बातों की बात रे।
यह बात उन ही को सोहे जाके दो जननी दा तातरे ॥४॥
ज्यूं मधुकर बसै काष्ठ में, बन्धा अम्बुज के पात रे।
जो गङ्गा देवन को दुर्लभ जामें श्वान नुहात रे ॥५॥
तेल के संग फुलेल होत है, महकत वास सुवास रे।
मोती बीच सूत का तागा, मंहगे मोल बिकात रे ॥६॥
वृन्दाबन में गऊ चरावत, गोकुल ही को जात रे।
हाथ लकुटिया कांधे कमरिया, रज लिपटाये गात रे ॥७॥
यही वृन्दावन यही बन कुञ्जन, यही पलाश के पात रे।
हाथ ओट हरि हम से खाया, दधि माखन और भात रे॥८॥
यो मन माधो जी से भगडूं, दे कुब्जा के लात रे।
सूरश्याम कुबजा संग बिर में गोपियन संग लजात रे ॥९॥

१५०

अद्भुत कौशल देख सखीरी, श्री वृन्दावन होर परी री ॥टेक॥
उत घन उदित सहित सौदामिनी, इतहिं मुदित राधिका हरी री
उत बग पांति सोभित इत सुन्दर, धाम विलास सुदेश खरी री
वहां घन गर्ज इहां धुन मुरली, जलधर इत उत अमृत भरी री
उतहिं इन्द्र धनु इत बनमाला, अति विचित्र हरि कंठ धरी री
सूर साथ प्रभु कुंवरि राधिका, गगन की शोभा दूर करी री

१५१

नाथ अनाथन की सुध लीजै ।।टेक।।

गोपी ग्वाल गाय गो सुत सब, दीन मलीन दिनहिं दिन छीजै
नैन सजल धारा बाढ़ी अति, बूडत ब्रज किन कर गहि लीजै
इतनी बिनती सुनहु हमारी बार कहूं पतियां लिख दीजै
चरण कमल दरसन नव नौका, करुना सिन्धु जगत जस लीजै
सूरदास प्रभु आस मिलन की, एक बार आवन ब्रज कीजै

१५२

राधे हरि रिपु क्यों न दुरावति ।।टेक।।

सारंग सुत बाहन की शोभा, सारंग सुत न बनावति ।
सैल सुता पति ताके सुत पति, ताके सुतहिं मनावति ।
हरि बाहन के मीत तासु पति, ता पति तोहि बुलावति ।
राका पति नहीं कियो उदय सुनि, या समये नहिं आवति ।
विविध विलास आनंद रसिक सुख, सूरश्याम केरे गुन गावति ।

१५३

रोम रोम ह्वै नैन गयेरी ।।टेक।।

ज्यों जलधर पर्वत पर बरषत, बूंद २ ह्वै झरनि दयेरी ।।१।।
ज्यों मधुकर रस कमल पानकर, मति तज उन्मत्त भयेरी ।।२।।
ज्यों कांचुरी भुअंगतजहिं, फिरि नतके ज्यों गयेसु गयेरी ।।३।।
ऐसी दशा भई री इनकी, श्याम रूप में मगन रयेरी ।।४।।
सूरदास प्रभु अगनित शोभा, ना जानों केहि अंग छयेरी ।।५।।

१५४

देखेहु अन देखे से लागत ॥ टेक ॥
यद्यपि करत रंगत भरे एकहि।
इक टक रहे निमिष नहिं त्यागत ॥१॥
इन रुचि दृष्टि मनोज महासुख।
उत शोभा गुन अमित अनागत ॥२॥
बाढ्यो बैर करन अर्जुन ज्यों।
दुई मंह एक भूलि नहीं भागत ॥३॥
उत सनमुख सो सावधान सजि।
इत सनाह अंग २ अनरागत ॥४॥
ऐसे सूर सुभट ये लोचन।
अधिक उ अधिक श्याम सुख मांगत ॥५॥

१५५

तुमको कमल नयन कविगावत ॥टेक॥
वदन कमल उपमा यह सांची, ता गुनको प्रगटावत ॥१॥
सुन्दर कमलन की सोभा, चरण कमल कहवावत ॥२॥
और अंग कहि कहा बखानौं, इतने ही को गुनगावत ।३॥
श्याम नाम अद्भुत यह बानी, श्रवण सुनत सुख पावत ।४
सूरदास प्रभु ग्वाल संघाती, जानी जाति जनावत ॥५॥

१५६

नटवर भेष धरे ब्रज आवत ॥टेक॥
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल।
कुटिल अलक मुख पर छवि पावत ॥१॥

भ्रकुटि विकट नैन अति चंचल।
यह छवि पर उपमा इक धावत ॥२॥
धनुष देखि खजन विधि डरपत।
उड़िन सकत उठिबे अकुलावत ॥३॥
अधर अनूप मुरलि सुर पूरत।
गौरी राग अलापि बजावत ॥४॥
सुरभि बृन्द गोप बालक संग।
गावत अति आनन्द बढ़ावत ॥५॥
कनक मेखला कटी पीताम्बर।
नृत्यत मन्द २ सुर गावत ॥६॥
सूर श्याम प्रति अंगमाधुरी।
निरखत ब्रज जन के मन भावत ॥७॥

१५७

राधे हरि रिपु क्यों न छिपावती ॥ टेक ॥
मेरु सुतापति ताके पति सुत, ताको क्यों न मनावति ॥१॥
हरि वाहन ता वाहन उपमा, सो तैं धरे दृढ़ावति ॥२॥
नव अरु सात बीस तोंहि सोभित, काहे गहरु लगावति ॥३॥
सारंग बचन कह्यो करि हरि को, सारंग बचन न भावति ॥४॥
सूरदास प्रभु दरश बिना तुम, लोचन नीर बहावति ॥५॥

१५८

ऊधो कोकिल कूजत कानन ॥टेक॥
तुम हमको उपदेश करत हो, भस्म लगावत आनन ॥१॥

औरौं सोंगी सखि संग ले ले, टेरत चढ़े पषानन ॥२॥
बहुरो आय पपीहा के मिसि, मदन दहत निज बानन ॥३॥
हम तौ निपट अहीरि बावरी, योग दीजिये जानन ॥४॥
कहा कथत मोसी के आगे, जानत नानी नानन ॥५॥
तुमतो हमहिं सिखावन आये, मुक्ति होय निर्बानन ॥६॥
सूर मुक्ति कैसे पूजति हैं, वा मुरली के तानन ॥७॥

१५६

अब मोहि डूबत क्यों न उबारो ॥टेक॥
दीनबन्धु करुणानिधि स्वामी, जन के दुःख निवारो ॥१॥
ममता घटा मोह की बूंदें, सरिता में नहीं पारो ॥२॥
डूबत कबहूं थाह नहीं पावत, गुरु जन ओट अधारो ॥३॥
गरजत क्रोध लोभ के नारो, सूझत कहुं न उधारो ..४॥
तृष्णा तड़ित चमक छिन ही छिन, यह निशि यह तन जारो ॥
यह भव जल कलिमल ही गहै है बोरत सहस पुकारो ॥६॥
सूरदास पतितन के संगी, बिरद ही नाथ संभारो ॥७॥

१६०

बिना पर कैसे अण्ड उड़ाऊं ॥टेक॥
दोऊ दल जुड़े अछोहनी अठारह, कैसे अण्ड बचाऊं।
चपला होय तो संग ले उड़ती, अण्ड कहां लेजाऊं ॥१॥
दीन दयाल गोपाल सांवरा, और किसी पाजाऊं।
तुम जानत हो प्रभु घट घट की तुमको क्या समझाऊं ॥२॥

बोलत कृष्ण चमा कर पंछी, तोय गजराज पठाऊं।
जो तेरे अण्डा दबता दीखें, घण्टा तोड़ बजाऊं ॥३॥
इतनी कह के निकस्यो पंछी, चरणन सीस नवाऊं।
सूर सहाय करी अण्डन की, जन्म २ जस गाऊं ॥४॥

१६१

आजारे वंशी वारा सांवरिया ॥टेक॥
बिन देखे नहीं चैन परत है, चंद्रसा मुखड़ा दिखलाजारे।
मोर मुकट पीताम्बर सोहे मुरली की टेर सुना जारे।
दधि माखन घर में बहु मेरे चाहे सोई खाजारे।
श्याम कहे प्रभु तुमरे मिलन कूं पल २ में चित्त चाहता रे।

१६२

अबतो प्रगट भइ जग जानी ॥टेक॥
वा मोहन सौं प्रीति निरन्तर, अब न रहेगी छानी ॥१॥
कहा कहूं सुन्दर मूरति इन, नैनन माहिं समानी ॥२॥
निकसत नाहिं पच २ हारी, रोम रोम अरझानी ॥३॥
अब कैसे निरवारी जात है, मिले दूध ज्यों पानी ॥४॥
सूरदास प्रभु अन्तर्यामी उर अन्तर की जानी ॥५॥

१६३

अपन को आपन ही बिसरयो ॥टेक॥
जैसे श्वान कांच मन्दिर में भ्रमि भ्रमि भूकि मरयो ॥१
ज्यों के हरि प्रतिबिम्ब देखिके, आपन कूप परयो ॥२
जैसे गज लखि फटिक शिला में, दशनन जाय अरयो ॥३
मर्कट मूठ छांड नहिं दीनी, घर घर भ्रमत फिरयो ॥४
सूरदास नलिनी को सूआ कहु कौने पकरयो ॥५

१६४

होत सो जो रघुनाथ ठटी ।।टेक।।

पच पच रहे सिद्ध मुनी साधक, तब हूं बढ़ी न घटी ।।१।।
योगी योग धरत मन अपने, शिर पर राख जटी ।।२।।
ध्यान धरत महादेव अरु ब्रह्मा, तिनहूं पे न घटी ।।३।।
योगी यती तपी आराधे, कोऊ पुनी रहै व्रती ।।४।।
सूरदास भगवन्त भजन बिन, कर्म फाँस न कटी ।।५।।

१६५

रे मन जन्म पदारथ जात ।। टेक ।।

बिछुरे मिलन बहुरि कब ह्वै है, ज्यों तरुवर के पात ।।१।।
सुनत बात कफ कण्ठ विरोधी, रसना टूटी बात ।।२।।
प्राण लिये यम जात मूढ मति, देखत जननी जात ।।३।।
छिन इक मांहि कोटि युग बीतत पीछे नरक की बात ।।४।।
यह जग प्रीति सुआ सेमर को चाखत ही उड़ि जात ।।५।।
यम के फन्द नहीं पड़ बौरे, चरणन चित्त लगात ।।६।।
कहत सूर वृथा यह देही, अन्तर क्यों कैतरात ।।७।।

१६६

पढ़ोरे भैया कृष्ण गोविन्द मुरार ।।टेक।।

कह प्रह्लाद सुनो रे बालक, लीजो जन्म सुधार ।
को है हिरनाकुश अभिमानी, जो सकि है तुम्हें मार ।
राखन हारो है और कोऊ, श्याम धरे भुज चार ।।
पूरण पुरुष नारायण स्वामी सो करि हैं रखवार ।
सूरदास प्रभु हरि सों मीता, कबहु न आवे हार ।।

१६७

राधा माधव भेट भई ॥ टेक ॥

राधा माधव माधव राधा, कीट भ्रंग गति होय जो गई ॥१॥
माधव राधा के रंग राचे, राधा माधव रंग भई ॥२॥
माधो राधा प्रीति निरन्तर, रसना कही न गई ॥३॥
विहंस कहयो हम तुम नहीं अन्तर, यह कहि वृज पठई ॥४॥
सूरदास प्रभु राधा माधव, वृज विहार नित नई नई ॥५॥

१६८

माधव आवन हार भये ॥टेक॥

अञ्जन उडत मन होत गई गहो, फरकत नयन स्वये ॥१॥
देहि देख सोच जिय अपने, चितवन सगुन दये ॥२॥
ऋतु वसन्त फूली द्रुम बल्ली, उलहे पात नये ॥३॥
करति प्रतीति आपु आपुन ते, सवन श्रङ्गार ठये ॥४॥
सूरदास प्रभु मिलहु कृपा करि, अवधिहू पूजि गये ॥५॥

१६९

चलहु देर मत कीजे, अब हम जन्म भूमिजाहिं ॥टेक॥
यद्यपि तुम्हारो हतो द्वारका, मथुरा के सम नाहीं ॥१॥
यमुना के तट गाय चरावत, अमृत जल अंचवाही ॥२॥
कुञ्ज केल अरु भुजा कन्ध धरि, शीतल द्रुम की छाहीं ॥३॥
सरस सुगन्ध मन्द मलियागिर, विहरत कुञ्जन माहीं ॥४॥
जो क्रीड़ा श्री वृन्दावन में, तिहूं लोक में नाहीं ॥५॥
सुरभि ग्वाल नन्द और यशुपति, मम चित ते नटनाहीं ॥६॥
सूरदास प्रभु चतुर शिरोमणि, सेवा तिन की कराहीं ॥७॥

१७०

गये हरी परदेश बहुत दिन लायेरी ।।टेक।।
कारी घटा देखि बादर की, नयन नीर भर आयेरी ।।१।।
बीर बटाऊ पन्थी हो तुम, कौन देश ते आयेरी ।।२।।
यह पाती हमरी ले दीजो, जहां सांवरे छायेरी ।।३।।
दादुर मोर पपय्या बोलत, सोवत मदन जगायेरी ।।४।।
सूरदास गोकुल ते बिछुरे, आप भये पराधेरी ।।५।।

१७१

कहा परदेशी को या जग में पतियारो ।।टेक।।
प्रीति बढ़ाय चले मधुबन को बिछुर दियो दुःख भारो ।।१।।
पीछे ही पछिताहू मिलोगे, प्रीति बढ़ाय सिधारो ।।२।।
ज्यों मृग नाद नाद के बींधे लाग्यो बान बिसारो ।।३।।
प्रीति के लिये प्राण वश कीनो, हरि तुम यही बिचारो ।।४।।
ज्यों जल हीन मीन तरफत है, ऐसो ही हाल हमारो ।।५।।
सूरदास प्रभु के दरशन बिन, ज्यों बिन दीपक भौन अन्धियारो ।

१७२

लोचन लालच ते न टरें ।।टेक।।
हरिमुख निरखत रंग संग ज्यों, दीपक शलभ जरें ।।१।।
ज्यों मधुकर रूचि रच्यो केतकी, कण्टक कोटि अरें ।।२।।
तैसे ही लोभ तजत नहीं लोभी, फिर फिर फेरी फिरें ।।३।।
मग ज्यों शहत सहज सरदारन, सन्मुख ते न टरें ।।४।।
जानत आहि हते तनु त्यागत, ता पर हित ही करें ।।५।।
समझ न परै कवन सच पावत जीवत जाय मरें ।।६।।
सूर सुपद हठ छांडत नाहीं, काटो शीश लरें ।।७।।

१७३

वैराग योग कठिन ऊधो हम न करबहौ ॥टेक॥

कैसे छोड़ब ऐसा देश जटा मुकुट धरब वेश ।
अंग विभूति लाय जहर खाय मरबहौ ॥ १ ॥
कैसे तजब अंग चीर मृगछाल धरब शरीर ।
सुखद सेज छोड़ भुयां कैसे पड़बहौं ॥२॥
जमना जल अति गम्भीर तन मन नहीं धरत धीर ।
कृष्ण विरह लागि बह डूबि मरबहौ ॥३॥
एक तो दुबल गात दूजे लिखब विरह पात ।
सूर श्याम बिन दरश प्राण तजबहौ ॥४॥

१७४

श्रीराम नाम पूञ्जी पल्लै बान्धोरे मना ॥टेक॥

ध्रुव बान्धी, प्रह्लाद ने बान्धी, बान्धी शिवरी सदना ।
मीरां बाई ऐसी बान्धी, बरसाया है कान्हा ॥ १ ॥
पीपा तो रैदास ने बान्धी जाट रे धना ।
दास तो कबीरा बान्धी ताना जो तना ॥ २ ॥
जात के भिखारी भये सुदामा बमना ।
मुट्ठी तण्डुल देके मान पाया है घना ॥ ३ ॥
अजामैल पापी तारे पतित घना ।
सूरश्याम शरणै आये (माफ हो गुना ॥ ४ ॥

१७५

गारी मत दीजो मो गरीबनी को जायो है ॥टेक॥
तेरी जो बिगारयो सो तो मोसों कहौ आन वीर ।
मैं तो काहू बात को नहीं तरसायो है ॥१॥
दधि की मटकिया भरा अंगना में आनि धरी ।
तोल तोल लीजो वीर जेतो जाको खायो है ॥२॥
सूरदास प्रभु प्यारे नेक हू न हूजे न्यारे ।
कान्हरा सो पूत मैंने बड़े पुण्य पायो है ॥३॥

१७६

न्यारी करो प्रभु अपनी गैयां ॥टेक॥
नाहिन बनत लाल हम तुम सों।
कहा भयो दश गैयां अधिकैयां ॥ ॥
ना हम चाकर नन्द बबा के।
ना तुम हमरे नाथ गुसैयां ॥२॥
आपन रहत नींद को माती।
हम चरावत तेरी बन बन गैयां ॥३॥
कब हूं जाय कदम चढ बैठे।
हम गैयन संग लगत पठैयां ॥४॥
मानी हार सूर के प्रभु ने ।
अब नहिं जाऊं मोहि नन्द की दुहैयां ॥५॥

१७७

प्रभो हौं सब पतितन को टीको ॥टेक॥
और पतित सब दिवस चार के, हौं तो जन्मत ही को ॥१॥
अधिक अजामिल गणिका तारी, और पूतना ही को ॥२॥
कोऊ न समरथ अघ करबे को, खैंच कहत हूं जीको ॥३॥
सूरदास पतितन में हम ते को है नीको ॥४॥

१७८

शरण गये प्रभु को न उबारे ॥टेक॥

जित २ भीर परी भगतन पर चक्र सुदर्शन तहां सम्हारे ॥
महाप्रसाद बैठ अम्बरीष ही, दुर्वासा को कोप निहारे ॥
ग्राह ग्रसत गज को जल डूबत, नाम लेत प्रभु वाको दुख टारे
सूर श्याम बिन करे और को, रंग भूमि में कंस पछारे ॥

१७९

नेह लगो मेरो श्याम सुन्दर सौं ॥टेक॥

आई बसन्त सभी बन फूले खेतन फूली सरसौं।
मैं पीरी भई पिया के विरह में निकसत प्राण उदरसौं ॥
कहो जाय वंशीधर सौं ॥१॥

फागन में सब होरी खेलें, अपने अपने बरसौं।
पिया के बियोग जोगन हो निकसी धूर उड़ावत कर सौं ॥
चली मथुरा की डगर सौं ॥२॥

ऊधो जाय द्वारिका में कहियो इतनी अरज मोरी हरि सौं।
विरह विथा सौं जियरा जरत है जब से गये हरि घरसौं ॥
दरश देखन को मैं तरसौं ॥३॥

सूरश्याम मेरी इतनी अरज है कृपासिंधु गिरधर सौं।
नदियां गहरी नाव पुरानी अबके उभारो सागर सौं
अरज मोरी राधावर सौं ॥४॥

१८०

पाती मधुबन से आई ॥टेक॥
ऊधो हाथ श्याम लिख पठई, तुम सुनो हो मोरी माई ॥
अपने अपने घर से दौरीं लै पाती उर लाई ॥
नयन नीर निरखि नहीं खण्डित, प्रेम की विथा बुझाई ॥
कहा करूं सुनो यह गोकुल, हरि बिन कछु न सुहाई ॥
सूरदास प्रभु कौन चूकते, श्याम सुरति बिसाई ॥

१८१

ऊधो कारे सभी बुरे ॥टेक॥
कारे की परतीत न करिये, कारे विष के भरे ॥१॥
कारो अंजन देत दृगन में, तीखी सान धरे ॥२॥
नाग नाथ हरि बाहर आये फण फण निरत करे ॥३॥
कोयल के सुत कागा पाले, अपनो हि ज्ञान धरे ॥४॥
पंख लगे जब उड़ने लागे, जाय कुटुम्ब रले ॥५॥
सूरश्याम कारो मतवारो, कारे से काल डरे ॥६॥

१८२

मरोसो कृष्ण को भारी ॥टेक॥
ग्राह ने गजराज घेरयो, बल कियो भारी ।
हार के जब टेर कीनी, धाये गिरधारी ॥१॥
प्रहाद गिरसों डार दीनों, कीनी रखवारी ।
अगनि हूं सौं राख लीनों, दूसरी वारी ॥२॥
द्रोपदी की लाज राखी कूवरी तारी ।
ध्रुव को दीनी अटल पदवी, कियो घरबारी ॥३॥

विभीषण को लंका दीनी, रावण को मारी।
आगे पतित अनेक तारे, सूर की वारी ॥४॥

१८३

खेलन में को काको गुसैयां ॥टेक॥
हरि हारे जीते श्री दामा, परवस ही कान्ह करत रुसैया ॥१॥
जात पात हम से बढनाहीं, ना हम बसत तुम्हारी छैयां ॥२॥
अति अधिकार जनावत अपनो, जाते अधिकार तुम्हारे गैयां
रूंठ करे तासौं को खेले, हा हा खात परत तब पैयां ॥४॥
सूरदास प्रभु खेल्यो ही चाहे, दाव दियो कर नन्द दुहैयां ॥५

१८४

अबकी राख लेहु भगवान ॥
हम अनाथ बैठी दुरुम डरियां, पारधी साध्यो बान।
ताके डर निकसन चाहत हों, ऊपर रह्यो शचान ॥
दोऊ भांति दुःख भयो कृपानिधि, कौन उबारे प्रान ॥
सुमरत ही अहि डस्यो पारधी, लाग्यो तीर शचान ॥
सूरदास गुण कहं लग वरणों जै जै कृपा निधान ॥

१८५

हरि बिन को राखे पति मेरी ॥
अन्ध को अन्ध महा दुःशासन, आन सभा में घेरी।
भीष्म द्रोण कर्ण से बैठे, इनहूं नेक न हेरी ।
अब मति भ्रष्ट भई सबहिन की पकर लई ज्यों चेरी।
एक विश्वास यही दृढ़ मेरे कृष्ण कृष्ण कह टेरी।
सूरदास प्रभु बसन बढाये, ह्वै गयो पर्वत ढेरी।

१८६

कुब्जा ने जादू डारा री जिन मोहलिया श्याम हमारा ।।टेक।।
निशिदिन चलत रहत नहीं राखे, इन नयनन जल धारी री
अब यह प्राण कैसे हम राखें बिछुरे प्राण अधारा री
ऊधो तब से कल न परत है, जब ते श्याम सिधारा री
अब तो मधुवन जाय ले आवो, सुन्दर नन्दन दुलारा री
सूरदास प्रभु आन मिलावो, तन मन धन सब वारा री

१८७

तुम सुनियो हे बलि राजा वसुधा काहू की न भई ।।
सतयुग में हिरणाकुश राजा चारों कूट मही।
अतीव प्रचण्ड महापति राजा वाहू के संग न गई।
त्रेता में रावण भयो राजा कंचन कोट गई ।
इक लख पूत सवालख नाती लकड़ी करहू न दई।
द्वापर में दुर्योधन राजा नौलख भीड़ सही ।
सोरा योजन वाके छत्र डुलत रहे माटी गिधन लई।
सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग चारों युगन सही ।
कहत सूर वही नर भूठे जिन यह अपनी कही ।

१८८

रे मन जन्म पदारथ जात ।।टेक।।
बिछुरे मिलन बहुरि कब ह्वै है ज्यों तरवर के पात।
सन्निपात कफ कंठ विरोधी रसना टूटी बात ।
प्रान लिये जम जात मूढ मति देखत जननी तात।
छिन इक मांहि कोटि जुग बीतत पीछे नर्क की बात।

यह जग प्रीति सुआ सेमर की चाखत ही उड़ जात।
जम के फन्द नहीं पड़ बौरे चरनन चित्त लगात।
कहत सूर बिरथा यह देही अन्तर क्यों इतरात।

१८६

भीजत कुंजन से दोऊ आवत ॥टेक॥

ज्यों २ बून्द परत चूनर पर त्यों २ हरि उर लावत ॥१॥
अधिक झकोर होत मेघन की द्रुम तर छिन बिलमावत।
वे हंसि ओट करत पीताम्बर वे चुनरहिं उढ़ावत ॥२॥
तैसे हि मोर कोकिला बोलत पवन बीच घन धावन।
ले मुरली कर मन्द घोर स्वर राग मलार बजावत ॥३॥
भीजे राग रागनि दोऊ भीजे तन छवि पावत।
सूरदास हरि मिलत परस्पर प्रीति अधिक उपजावत ॥४॥

१९०

सखी री काके मीत अहीर।

काहे को मरि २ डारहि हौं नैन राह के नीर।
आपुन पियत पियावत दुहि दुहि इन धेनुन के छीर।
निसिवासर जो छिन नहिं बिसरत है यमुना के तीर।
मेरे हियरे दौ लागति है जारत तनु की चीर।
सूरदास प्रभु दुखित जानि के छांडि गए वे पीर।

१६१

सखी री श्याम सबै इकसार।
मीठे वचन सुहाये बोलत अन्तर जारन हार।
भवंर कुरंग काग अरु कोकिल कपटिन की चटसार।
कमल नयन मधुपरी सिधारे मिटि गया मंगल चार।
सुनहु सखीरी दोप न काहू जो विधि लिखो लिलार।
यह करतूत इन्है की नाई पूरब वि'िध विचार।
उमंगि घटा नसि आवे पावस प्रेम की प्रीति अपार।
सूरदास सरिता सर पोषत चातक करत पुकार।

१६२

प्रीति करि काहू सुख न लह्यो।
प्रीति पतंग करी दीपक सों आपे प्राण दह्यो।
अलिसुत प्रीति करी जलसुत सों सम्पति हाथ गह्यो।
हम जो प्रीति करी माधव सों चलते कछू न कह्यो।
सूरदास प्रभु बिन दुख दूनो नैनन नीर बह्यो।

१६३

शोभित कर नवनीत लिये ॥टेक॥
घुटरन चलत रेणु तन मंडित, मुख दधि लेप किये ॥१॥
चारु कपोल लोल लोचन हैं, गो रोचन को तिलक दिये ॥२
लट लटकन मनु मत्त मधुप गण, मादक मधुहि पिये ॥३॥
कठुला कंठ वज्र केहरि नख, राजत रुचिर हिये ॥४॥
धन्य सूर एको पल यह सुख, का शत् कल्प जिये ॥५॥

१६४

उलट पग कैसे दीनो नन्द ॥टेक॥

छांडे कहां उभय सुत मोहन, धृग जीवन मति मन्द ।
कै तुम धन जोबन मदमाते, के तुम छूटे बन्द।
सुफलक सुनत बैरी भयो मोको, लैगयो आनन्द कन्द।
राम कृष्ण बिन कैसे जीवो, कठिन प्रीति को फन्द।
सूरदास अब भई अभागिन, तुम बिन गोकुल चन्द।

१६५

ऊधो मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं।
हंस सुता की सुन्दर कलरव अरु कुञ्जन की छांही।
वे सुरभी वे बच्छ दोहनो, खरिक दुहावन जांही।
ग्वाल बाल सब करत कुलाहल, नाचत गहि २ बाहीं।
यह मथुरा कंचन की नगरी, मणि मुक्ता जिहि माहीं।
जबहिं सुरत आवत वा सुख की जिय उमंगत सुध नाहीं।
अनगिन भांति करी बहु लीला यशुदा नन्द निबाहीं।
सूरदास प्रभु रहे मौन गह, यह कह कह पछिताई।

१६६

मैया मोहि बड़ो कर लैरी ॥टेक॥
दूध दही घृत माखन मेवा, जब मांगौ तब दैरी ॥१॥
जो कुछ होंस हो जननी मेरी, जोहि मोह रुचैरा ॥२॥
हौंहू सबल सबहिन में जैसे, सदा रहूं निरभयरी ॥३॥
सूरकेश गह कंस पछारौं, करि हौं मथुरा नगरी ॥४॥

१६७

जागिये ब्रजराज कुंवर कमल कोश फूले ॥टेक॥

कुमुद वृन्द सकुच भये भृङ्गलता भूली ।
तमचर खग शोर सुन्यो बोलत बन राई ।
रंभत गौ खीर देन बछुरा हित धाई ।
दिधु मलिन रवि प्रकाश गावत ब्रजनारी ।
सूरश्याम प्रात उठे अम्बुज कर धारी ।

१६८

मोहन जाग हौं बलि गई ॥टेक॥

ग्वाल बाल सब द्वारे ठाढ़े बेर बन को भई ।
पीत पट कर दूर मुख से झांड दे अलसई ।
अति अनन्दित होत यशुपति देख द्युति नित नई ।
सूर के प्रभु दर्श दीजे अरुण किरण छई ।

१६९

काया हरि के काम न आई ॥टेक॥

भाव भगति जहं हरि यश सुनियो तहां जात अलसाई ।
लोभातुर है काम मनोरथ तहां सुनत उठआई ।
चरण कमल सुन्दर जंह हरि का क्यों हूं न जात नवाई ।
अब लगि श्याम अंग नहिं परसत आखे जोग रमाई ।
सूरदास भगवंत भजन बिनु विषय परम विष खाई

२०१

नैना भये अनाथ हमारे ॥टेक॥

मदन गोपाल यहां ते सजना सुनियत दूर सिधारे।
वे हरि जल हम मीन बापुरी कैसे जिवहीं निवारे।
हम चातक चकोर श्यामघन बदन सुधा निधि प्यारे।
मधुबन बसत आश दरशन की नैन साई मग हारे।
सूर श्याम करो पिय ऐसा मृतक हूं ते पुनि मारे।

२०२

कान्ह नित नये उल्हाने लावे ॥टेक॥

दूध दही घर काहू की कमी नहीं, नाहक धूम मचावे ॥१॥
तनक छाछ के कारन मोहन माखन चोर कहावे ॥२॥
सूर, श्याम, को यशुमति मय्या, बारम्बार सिखावे ॥३॥

२०३

ईश्वर मेरी नैया पार लगादे ॥टेक॥

गहरी नदियां नाव पुरानी, एक बर हाथ लगादे ॥१॥
बड़ी देर की आइ किनारे, एकबर दरश दिखादे ॥२॥
ना बादबान चापू ना बल्ली, हमको वेग चिलादे ॥३॥
सूरश्याम चरणन की महिमा, एक बर हमें लखादे ॥४॥

२०४

तुम तजि और कौन पै जाऊं ॥टेक॥

काके द्वार जाय सिर नाऊं, पर हाथ कहां बिकाऊं ॥१॥
ऐसो को दाता समरथ, जाके दिये अघाऊं ॥२॥

अन्तकाल तुमरो सुमरणगति, अन्त कहूं नहिं पाऊं ॥३॥
रंक अयाची कियो सुदामा, दियो अभय पद ठाऊं ॥४॥
कामधेनु चिन्तामणि दीनों, कल्प वृक्ष तरु छाऊं ॥५॥
भवसागर अति देख भयानक, मन में अधिक डराऊं ॥६॥
कीजे कृपा सुमिर अपना प्रण, सूरदास बलि जाऊं ॥७॥

२०५

रे मन, कृष्ण नाम कहि लीजै।
गुरु के बचन अटल करि मानहुं, साधु समागम कीजै।
पढ़िये गुनिये भक्ति भागवत, और कहा कथि कीजै।
कृष्णनाम रस बह्यो जात है, तृषावन्त ह्वै पीजै।
सूरदास हरिसरन ताकिये, जनम सफल करि लीजै।

२०६

जो हम भले बुरे तौ तेरे।
तुम्हें हमारी लाज बड़ाई, बिनती सुनु प्रभु मेरे।
सब तजि तुम सरनागत आयो, निज कर चरन गहेरे।
तुव प्रताप-बल बदत न काहू, निडर भये घर चेरे।
और देव सब रङ्क भिखारी, त्यागे बहुत अनेरे।
सूरदास प्रभु तुमरि कृपातें, पाये सुख जु घनेरे।

२०७

तुम मेरी राखो लाज हरी।
तुम जानत सब अन्तरजामी, करनी कछु न करी ॥१॥
औगुन मोते बिसरत नाहीं, पल छिन घरी घरी।

सब प्रपंचकी पोट बांध करि अपने सीस धरी ॥२॥
दारा-सुत-धन मोह लिये हैं, सुधि-बुधि सब बिसरि।
सूर पतित को बेग उधारो, अब मेरी नाव भरी ॥३॥

१०८

मंगल मूरति मारुति नन्दन,
सकल अमङ्गल मूल निकन्दन ॥१॥
पवन तनय सन्तन हितकारी,
हृदय बिराजत अवध बिहारी ॥२॥
मात पिता गुरु गणपति नारद,
शिवा समेत शम्भु शुक शारद ॥३॥
चरण बंद बिनवौं सब काहू,
देहू रामपद नेहु निबाहू ॥४॥
बंदौं राम लखन बैदेही,
जे तुलसी के परम सनेही ॥५॥

२०६

भक्ति मुक्ति दायनी भय हरणी कालिका।
मंगल मुद सिद्धि सदनि पर्व सर्वरीश बदनी।
ताप तिमिर तरुण तरणि किरण मालिका ॥१॥
बर्म चर्म कर कृपान सूल शेल धनुष बान।
धरणि दलनि दानव दल रण करालिका ॥२॥
पूतना पिशाच प्रेत डाकिनी साकिनी समेत।
भूत ग्रह बेताल खग मृगालि जालिका ॥३॥

जय महेश भामिनी अनेक रूप नामिनी ।
समस्त लोक स्वामिनी हिम शैल बालिका ॥४॥
रघुपति पद परम प्रेम तुलसी चहे अचल नेम ।
देहू ह्वै प्रसन्न पाहि प्रणत पालिका ॥५॥

२१०

दो०-राम नाम को अंक है सब साधन है शून्य ।
अंक गये कछु है नहीं अंक रहे दशगून ॥

बसो जी म्हारे नयनन में सिया राम ॥टेक॥
जनक नन्दिनी जगत वन्दिनी रघुनायक घन श्याम ॥१॥
सरजु के तीर अयोध्या नगरी चित्रकूट निज धाम ॥२॥
कनक मण्डप तले रतन सिंहासन युगल मूरति अभिराम ॥३॥
तुलसीदास प्रभुकी छबि निरखे लजत कोटिशत काम ॥४॥

२११

रघुवर तुम को मेरी लाज ॥टेक॥
सदा २ मैं शरण तुम्हारी तुम हो गरीब निवाज ॥१॥
पतित उधारण विरद तिहारो श्रवण सुनी हो अवाज ॥२॥
हौं तो पतित पुरातन कहियो पार उतारो जहाज ॥३॥
अघ खंडन दुख भंजन जन के यही तिहारो काज ॥४॥
तुलसी दास पर किरपा करियो भक्ति दान दो आज ॥५॥

२१२

अगम नहीं गुरु बिन सूझे पड़े ॥टेक॥
चार बेद पढ़े पुराणा अठारा नोपट खोज मरे ॥१॥
ज्ञान बिना मरम नाहीं छूटा झूठा ही बाद करे ॥२॥
कह गुरु शब्द आकाश बांस पर श्रुति गगन चढ़े ॥३॥
तन विराट जीव तरे तुलसी सहज ही भव उतरे ॥४॥

२१३

दो०-लोहा जैसे काठ संग, चलत फिरत जल माँह ।
बड़े न डूबत देत हैं जाकी पकरे बांह ॥

संगत तो करले साध की जासे उपजेगे आत्मा ज्ञान।
जल देखे शुचि ऊपजे साधु देखे ज्ञान ।
माया देखे लोभ ऊपजे तिरिया देखे काम ॥१॥
साधु मिलन जब चालिये तज माया अभिमान ।
ज्यों ज्यों पग आगे धरे त्यों त्यों यज्ञ समान ॥२॥
साधु हमारी आत्मा हम संतन की देह ।
रोम रोम में रम रहा ज्यों बादल में मेह ।३॥
साधु माई बाप हैं साधु भाई और बन्धु ।
साधु मिलावे राम ते काटें यम के फन्द ॥४॥
एक घड़ी आधी घड़ी आधी से भी आध ।
तुलसी संगत साधु की हरें कोट अपराध ॥५॥

२१४

नाथ कसे छोड़ बैठे क्या मेरी तकसीर है ।
खो बैठूँगी प्राण अपने ऐसी मुझ पै भीड़ है॥
ऐसी थी मैं प्राण प्यारी कैद रावण के पड़ी।
राक्षसी डरपा रही हैं हाथ में शमशीर है॥
छुट गई संग की सहेली छुटा सब परिवार है।
छुट गई चरणों की भक्ती लोट गई तकदीर है ॥
रात दिन तड़फूँ पड़ी तुमरे दरश बिन हे पती ।

तुमरे आये बिन हमारी कौन बंधावे धीर है ॥
मुझ को सताते हैं निशाचर अब मेरी सुध लीजिये।
दास तुलसी शरण तुमरी जनकी मेटो पीर है ॥

२१४

मन पछतै हैं अवसर बीते ॥टेक॥
दुर्लभ देह पाय नर हरि भज कर्म बचन और हीते ॥
सहस बाहु दश बदन आदि नृप बचे न काल बलीते ॥
हम हम कर धम धाम सवांरे अंत चले उठ रीते ॥
सुत बनितादी जान स्वार्थरत, ना कर नेह इन्हीते ॥
अन्तहु तोहि तजेंगे पामर, तू ना तजे अब हीते ॥
अब नहीं अनुराग जाग जड़ त्याग हूं दुरासा जीते ॥
बुझे न काम अग्नि तुलसी कबहूं बहु विषय भोग और घीते ॥

२१६

दो०-चोरी हिंसा अरु व्यभिचार, काया के त्रय दोश विचार।
निंदा अरु कटुबात असत्य, वाणी के यह दूषण सत्य ॥
तृष्णा द्वेष बुद्धि अरु क्रोध, त्रिविध दोष मन में तू शोध।
इहि प्रकार नव दूषण त्याग कर सत्संग खुलेंगे भाग ॥

सिया रघुवीर भरोसो ऐसो ॥टेक॥
न बोर सक्यो प्रह्लादहि पावक नाहीं जरोसो।
गिर ऊपरते डारि दियो है भूमि पर उबरो सो ॥१॥
हिरणाकुश प्रह्लाद भक्त से हठ कर बैर करोसो।
मारयो चहै दुष्ट नर हरि को, आपै दुष्ट मरोसो ॥२॥

जारो लंक अंजनि नन्दन, देखत पुर सगरो सो।
ताके मध्य विभिषण को गृह, राम कृपा उबरो सो ॥३॥
रावण समा कठिन प्रण अंगद, हियधरि हरि सुमरोसो।
मेघनाथ सम कोटिन योधा, लागे पग न टरोसो ॥४॥
गज और ग्राह लड़ें जल भीतर, गज को ग्राह गह्योसो।
गरुड़ छोड़ हरि प्यादे ही आये, डूबत गज उबरो सो ॥५॥
विप्र सुदामा फिरत दुखी होय कबहूं न उदर भरोसो।
राम कृपा कंचन गृह पायो हय गजराज वरो सो ॥६॥
द्रुपद सुता को चीर दुशासन, राज सभा पकरो सो।
खैंचत खैंचत भुजबल हारे नेक न अंग उघरो सो ॥७॥
भारत में भंवरी के अंडे, छोहनी दल बटरो सो।
राम नाम जब पक्षि टेरयो, घंटा टूटि परोसो ॥८॥
मीरां के मारन के कारण घोरो जहर खरोसो।
राम कृपाते अमृत ह्वै गयो, हस २ पान करोसो ॥९॥
तुलसीदास विश्वास रामपद जो नर नारी नरोसो।
और विभूति कहां बरणों जेहि यमराज डरोसो ॥१०॥

२१७

भज मन राम चरण दिन राती ॥टेक॥
रसना कसना भजो तुम हरी पद, सुमरत क्यों अलसाती।
जाके कहत दहत दुःख दारुण सुनि त्रय ताप बुझाती।
सुनते श्रवण सुजस रघुबर को सुन जुड़ात हिय छाती।
सीता सुमति सो हरि जन देते देते सलाह सुहाती।

रामचन्द्र को नाम अमीरस सो रस काहे न खाती।
संवत सोलह सो इकतीसा ज्येठ सुदी छठ स्वाती।
तुलसीदास एक विनय लिखत है प्रथम अरज की पाती।

२१८

मज मन राम चरण सुख दाई ॥टेक॥

जेहीं चरणन से निकसी सुरसरी, शंकर जटा समाई।
जटा शंकरी नाम परयो है त्रिभुवन तारण आई।
सोई चरण केवट धोलीने तब हरि नाव चलाई।
सोई चरण सन्त जन सेवत सदा रहत सुखदाई।
सोई चरण गौतम ऋषि नारि परस परम पद पाई।
दण्डक बन प्रभु पावन कीन्हों ऋषियन त्रास मिटाई।
सोई प्रभु त्रिलोक के स्वामी कनक मृगा सग धाई।
ऋषि सुग्रीव बन्धु भय व्याकुल तिन जय छत्र धराई।
रिपु को अनुज विभीषण निशिचर परसत लंका पाई।
शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहस्रमुख गाई।
तुलसीदास मारुत सुत की प्रभु निज मुख करत बड़ाई।

२१९

सिया राम कहने का मजा जिसकी जबो पर आगया।
जीवन वह मुक्ति होगया चारों पदार्थ पागया।
लूटे मजे ध्रुव भक्त ने उस नाम के परताप से।
सन्मुख प्रभु के जाव से त्रिलोक में जस छा गया।
प्रह्लाद के लागी लगन उस पारब्रह्म के नाम की।
नरसिंह हो दर्शन दिया अपने हृदय से लगा लिया।

शिबरी जो कहिये भीलनी बिन प्रेम से सुमरण किया ।
परमात्मा घर आय उसके हाथ से फल खागया ॥
कलिकाल के जो भक्त हैं उनका तो रुतबा है बड़ा ।
नरसी की हुण्डी द्वारका से सांवरा दिलवा गया ॥
योगी मुनीश्वर देवता उस रूप को खोजत फिरें ।
जिसपै हुई उसकी दया सत्गुरु उसे दरशा गया ॥
छा रही कीरति विमल रुत राजसी संसार में ।
वो भक्त जनके काज तुलसी राम रंग बरसा गया ॥

२२०

कुटुम्ब तज शरण राम तेरी आयो ।
तज घर लंक महल और मन्दिर नाम सुनत उठ धायो ॥
भरी सभा में रावण बैठ्यो चरण प्रहार चलायो ।
मूर्ख अन्ध कह्यो नहीं माने बार बार समझायो ।
आवत ही लंकापति कीनो हरि हंस कंठ लगायो ।
जन्म जन्म के मिटे पराभव राम दर्श जब पायो ।
हे रघुनाथ अनाथ के बन्धु दीन जान अपनायो ।
तुलसीदास रघुबर की शरणा, भक्ति अभय पद पायो ।

२२१

जाऊं कहा तजि प्रभु चरण तिहारे ॥टेक॥
काको नाम पतित पावन जग केहि अति दीन पियारे ।
कौन देव बरि आई विरद हित हरि हरि अधम उधारे ।
खग मृग व्याध पाषाण विटप जड़ जवन कवन सब तारे ।

देव दनुज मुनी नाग मनुज सब माया विवश विचारे।
तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा अपन को हारे।

१२२

जागिये रघुनाथ कुँवर पंछी बन बोले ॥
चंद-किरण शीतल भई, चकवी पिय मिलन गई।
त्रिविध मंद चलत पवन पल्लव द्रुम डोले ॥
प्रात भानु प्रगट भयो, रजनी को तिमिर गयो।
भृङ्ग करत मधुर गान, कमलन दल खोले ॥
ब्रह्मादिक धरत ध्यान, सुरनर मुनि करत गान।
जागन की बेर भई, नयन पलक खोले ॥
तुलसीदास अति आनन्द, निरखि के मुखारबिंद।
दीनन को देत दान भूषण बहुमोले ॥

१२३

तेरी बन जायगी राम गुण गाए ते ॥टेक॥
ध्रुव की बनी, प्रह्लाद की बन गई।
गणिका की बन गई सुवा के पढ़ाये ते ॥१॥
शबरी की बन गई मीरां की बन गई।
कुब्जा की बन गई चन्दन चढ़ाये ते ॥२॥
बाली की बन गई सुग्रीव की बन गई।
हनुमान की बन गई सिया सुधि लाये ते ॥३॥
सूर की बन गई, कबीर की बन गई।
तुलसी की बन गई, हरि यश गाये ते ॥४॥

२२४

जाके प्रिय न राम बैदेही ॥टेक॥
तजिये ताहे कोटि बैरी सम यद्यपि परम सनेही ।
तजो पिता प्रह्लाद विभीषण, बन्धु भरत महतारी ॥
बलि गुरु तजो कन्त ब्रज बनितन, भये जग मंगल कारी ।
नाते नेह राम के मनियत, सुहृद सुसेव्य जहां लों ॥
अंजन कहा आंख जेही फूटें, बहुतक कहूं कहां लों ।
तुलसी सोई सब भांति परम हित पूज्य प्राण ते प्यारो ॥
जाते होय सनेह राम पद, एतो मतो हमारो ।

२२५

अगम नहीं गुरु बिन सूझ पड़े ॥ टेक ॥
चार बेद पढ़ी पुराण अठारा नोपट् खोज मरे ।
ज्ञानी बिना भरम नहीं छूटा झूंठा ही बाद करे ।
कहें गुरु शब्द आकाश बांस पर, श्रुति गगन चढ़े ।
तन विराट जोवत रे तुलसी, सहज ही भव उतरे ।

२२६

तू दयालु दीन हौं, तू दानि हौं भिखारी ।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप पुंजहारी ॥१॥
नाथ तू अनाथ को अनाथ कौन मोसों ।
मो समान आरत नहीं, आरतहर तोसो ॥२॥
ब्रह्म तू हौं जीव हौं तू ठाकुर, हौं चेरो ।
तात मात गुरु सखा तू सबविधि हितु मेरो ॥३॥

तोहिं मोहिं नाते अनेक मानिये जो भावे।
ज्यों त्यों तुलसी कृपाल चरन-सरना पावे ॥४॥

२२७

दानी कहुं शंकर से नाहीं।
दीन दयालु देबोई भावत, जाचक सदा सोहाही ॥१॥
मारिकै मारु थप्यो जग में जाकी प्रथम रेख भट नाहीं।
ता ठाकुर कौ रीझि निवाजिबौ, कह्यो क्यों परत मोहि पाहीं।
जोग कोटि करि जो गति हरि सों, मुनि मांगत सकुचाहीं।
बेद विदित तोहि पद पुरारिपुर, कीट पतंग समाहीं।
ईसु उदार उमापति परिहरि, अनत जे जाचन जाहीं।
तुलसीदास ते मूढ मांगने, कबहुं न पेट अघाहीं।

२२८

जाचिये गिरजा पति कासी,
जासु भवन अणिमादिक दासी ॥ टेक ॥
औढ दानि द्रवत पुनि थोरे,
सकत न देखि दीन कर जोरे ॥ १ ॥
सुख सम्पति मति सुगति सुहाइ,
सकल सुलभ शंकर सेवकाई ॥ २ ॥
गेजे शरण आरति के लीन्हे,
निरखि निहाल निमिष मह कीन्हे ॥ ३ ॥
तुलसीदास जाचक जसुगावै,
विमल भगति रघुपति की पावै ॥४॥

२२६

कस न दीन पर द्रवहु उमावर,
दारुण विपति हरण करुणा कर ॥टेक॥
वेद पुरान कहत उदार हर,
हमरि बेरि कस भयहु कृपन तर ॥१॥
कवनि भगति कीन्ही गुणनिध द्विज,
होई प्रसन्न दीन्हेहु शिव पद निज ॥२॥
जो गति अगम महामुनि गावहिं,
तुम पर कीट पतंगरु पावहिं ॥३॥
देहु काम रिपु राम चरण रति,
तुलसीदास प्रभु हरहु भेद मति ॥४॥

२३०

देव बड़े दाता बड़े शंकर बड़े भोरे ।
किये दूर दुःख सबन के, जिन २ कर जोरे ॥
सेवा सुमिरण पूजिबौ, पात आपत थोरे ।
दई जग जहं लगि सम्पदा, सुख गज रथ घोरे ॥
गर्व बसत मैं नादेव, कबहूं न निहोरे ।
अधिभौतिक बाधा भई, ते किंकर तोरे ॥
बेगि बोलि बलि बरजिये, करतूति कठोरे ।
तुलसी दलि रूंध्यो चहै सठ साखि निहोरे ॥

२३१

शिव शिव होई प्रसन्न करु दाया।
करुणा मय उदार कीरति बलि, जाऊं हरहु निज माया॥
जलज नयन गुण अयन मयन रिपु महिमा जानै न कोई।
बिन तुअ कृपा राम पद पंकज सपनेहुं भगति न होई॥
ऋषि सिद्ध मुनि मनुज दनुज सुर, अवर जीव जग मांही।
तुम पद विमुख न पार पाव कोऊ, कलप कोटि चलि जाहीं॥
अहि भूषण दूषण रिपु सेवक, देव देव त्रिपुरारी।
मोह निहार दिवाकर सकर शरण शोक भय हारी॥
गिरजा मन मानस मरालका, सीस मसान निवासी।
तुलसीदास हरि सरण कमल वर, देहु भगति अविनासी॥

२३२

ऐसी हरि करत दास पर प्रीत
निज प्रभुता विसारि जन के वस, होत सदा यही रीति।
जिन बान्धे सुर असुर नाग नर, प्रबल कर्म की डोर॥
सोई अविछिन्न ब्रह्म जसुमति हठि, बान्धो सकत न छोरि।
जाकी माया वश विरची शिव, नाचत पार न पायो॥
करतल ताल बजाई ग्वाल जुवतिन, तेही नाच नचायो।
विश्वम्भर श्रीपति त्रिभुवन पति वेद विदित यह लीख॥
बलि सौं कुछ न चली प्रभुता वरु, ह्वै द्विज मांगी भीख।
जाको नाम लिय छूटत भव, जनम मरण दुख भार॥
अम्बरीष हित लागी कृपा निधि सोही जन्म्यो दश बार।

जोग विराग ध्यान जप तप करि जेहि खोजत मुनि ज्ञानी ॥
बानर भालु चपल पशु पांवर नाथ तहां रति मानी।
लोक पाल जम काल पवन रवि, शशि सब आज्ञाकारी ॥
तुलसीदास प्रभु उग्रसेन के, द्वार बेंत कर धारी।

२३३

रामचन्द्र रघुनायक तुम सों,
हौं बिनती केहि भांति करों।
अघ अनेक अवलोकि आपने,
अनघ नाम अनुमानि डरों ॥१॥
पर दुख दुखी सुखी पर सुख ते,
संत सील नहीं हृदय धरो।
देखि आन की विपत परम सुख,
सुनि सम्पति बिनु आगि जरों ॥२॥
भगति विराग ज्ञान साधन कहि,
बहु बिधि डहकत लोग फिरों।
शिव सरबस सुख धाम नाम तव,
बेंचि नरक पद उदर भरों ॥३॥
जानत हौं निज पाप जलधि जिय,
जल सीकर सम सुरत करौं।
रज सम पर औगन सुमेरु करि,
गुन गिरि सम रजते निदरो ॥४॥
नाना बेष बनाई दिवस निशि,
पर बित जेहि तेहि जुगति हरों।

एकौ पल न टरहूं अलोल चित्त,
हित दै पद सरोज सुमरूं ॥५॥
जो आचरण विचारहु मेरो,
कलप कोटि लगि औटि मरौ।
तुलसीदास कृपा विलोकनि,
गोपद ज्यों भव सिंधु तरौं ॥६॥

२३४

तू दयालु दीन हौं तू दानि हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी तू पाप पुञ्ज हारी ॥टेक॥
नाथ तू अनाथ को अनाथ कौन मोसो।
मो समान आरत नहीं आरत हर तोसो ॥१॥
ब्रह्म तू हौं जीव हूं तू ठाकुर हौं चेरो।
तात मात गुर सखा तू सब विधि मेरो ॥२॥
तोहि मोहिं नाते अनेक मानिये जो भावे।
त्यों त्यों तुलसी कृपालु चरण शरण पावै ॥३॥

२३५

ममता तू न गई मेरे मनतें।
पाके केस जन्म के साथी, लाज गई लोकनते।
तन थाके कर कम्पन लागे, जोति गई नैननते।
सखन वचन न सुनत काहु के बल गये सब इन्द्रिनते।
टूटे दसन वचन नहिं आवत, शोभा गई मुखनते।
कफ पित बात कंठ पर बैठे, सुतहिं बुलावत करते।
भाई बन्धु सब परम पियारे, नारि निकारत घरते।
जैसे ससि मण्डल विच स्याही, छुटै न कोटि जतनतें।
'तुलसीदास' बलि जाऊं चेरनते, लोभ पराये धनते।

२३६

सुरत मेरी राम पलक मेरी रामसे लगी समझ सुहागन सुन्दर नार
तीरथ में माया जाल में फंसी ॥ टेक ॥
लगनी लहंगा पहर सुहागन बीती जाय बहार ।
धन जोबन है पाहुना री आवे न दूजी वार ।१॥
राम नाम का चुड़ला पहरो निगुण सुरमा सार ।
नखबेसर हरि नाम की री उतर चलोना पले पार ॥२॥
ऐसे बर को कहा वरूं जो जन्मतड़ा मर जाय ।
वर पाऊं श्री सांवरो जी चुड़ला अमर हो जाय ॥३॥
मैं जान्या हरि मैं ठग्यो जी हार ठग ले गयो मोय ।
लख चौरासी मोरचे जी पल में डारे तोर ॥ ४ ॥
सुरत चली जहां मैं चली निरंकार झनकार ।
अविनाशी की पौर पर रे मीरां करे पुकार ॥ ४ ॥

२३७

सो म्हारे साधो राम नाम धन खेती ॥टेक॥
मन कर हरिया सुरत बरखिया ज्ञान ध्यान दोउ जोती ।
ओ३म् नामको बीज जो बोया उपजे नव निध सेती ।
ध्रुव बोइ प्रहलाद ने बोई उनकी हुई है अगेती ।
काम क्रोध के जो नर वश हैं उनकी पड़त पछेती ।
चोर न चोरे राज न डांडे भेज न लगत टके की ।
इस खेती में बहुत नफा है करियो संतन सेती ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर आन मिलो हित सेती ।

२३८

सो राणाजी तैं जहर दियो म्हाने जानी ॥टेक॥

भर भर दिये जहर के पियाले ह्वै गयो अमृत पानी ॥
जब लग सोना कसिये नाहीं होत न बाराबानी ॥
मोय भरोसा श्याम सुन्दर का मेरी घटत न कानी ॥
मीरां के प्रभू गिरधर नागर चरण कमल लिपटानी ॥

२३९

तुम पलक उघारो दीनानाथ, मैं हाजिर नाजिर कब की खड़ी
साहू सो तो दुश्मन हो गये लागूं कड़ी कड़ी ।
तुम बिन मेरा कोई नहीं है तुम बिन नैया मेरी अटक रही।
तन की हूल बदन में लागे सूकूं खड़ी खड़ी ।
पल २ होगई वर्ष बराबर मुश्किल हो रही मैंने घड़ी घड़ी।
हार हमेल सभी सुख त्यागे मोतियन तजी लड़ी ।
ज्ञान बाण हिरदे में लाग्या प्रेम कटारी हिये रड़क रही।
किया करम मेरे सन्मुख होगया घुर की कलम अड़ी।
बार २ मीरां बाई गावे धन हो साहिब मैंने आज की घड़ी।

२४०

दोहा-कबीरा सुन्दरी यों कहे, सुनियो कन्त सुजान ।
वेग मिलो तुम आयके, नातर तजूं मैं प्रान ॥

पिया बिन सूनो छै म्हारो देश ॥टेक॥

ऐसा है कोई पिया से मिलावे तन मन धन करूं पेश ॥१॥
थारे कारण बन बन ढोलूं कर जोगिन का भेष ॥२॥

प्रीतम प्यारे दरश दिखाजा तुम बिन बहुत क्लेश ॥३॥
अवधि बदी थी अजहुं न आये रूपा होगये केश ॥४॥
मीरां के प्रभू गिरधर नागर तज दियो नगर नरेश ॥५॥

२४१

तनक हरी चितवो मेरी ओर ॥टेक॥
हम चितवत तुम चितवत नाहीं दिल के बड़े कठोर ॥१॥
खड़ी खड़ी मैं अरज करत हूं अर्ज करत भई भोर ॥२॥
तुम से हमको नाहीं मिलेंगे हमसी लाख करोर ॥३॥
बन माहीं व्याकुल भई डोलूं ढूंढ फिरी चहूं ओर ॥४॥
मीरां के प्रभु कब जो मिलोगे सुन्दर प्रीतम मोर ॥५॥

२४२

अरी ऐरी उदां लागी का नाम न ले ॥ टेक ॥
जल से प्रीति करी मछली ने बिछुरत प्राण तजे ॥१॥
मृगों की प्रीति लगी नादों से सन्मुख सेल सहे ॥२॥
दीपक से प्रीति लगी पतंग की बार फेर जियादे ॥३॥
मीरां की प्रीति लगी है सन्तों से गुरु चरणों चित्त दे ॥४॥

२४३

सभी तो मिल राम भजो नर नारी ॥टेक॥
जन प्रह्लाद पिता तज दीना भरत तजी महतारी।
हरि के भजन से गणिका तर गई तर गई गोतम नारी।
भवसागर की लहर कठिन है किस विधि उतरेंगे पारी।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर हरि के चरण बलिहारी।

२४४

सांवरिया गिरधारी मथि को चाकर राखोजी ॥टेक॥
नौकर रहस्यां चाकर रहस्यां नित उठ दर्शन पावां।
वृन्दावन की कुंजगली में गोविन्द लीला गावां ॥१॥
नौकरी में दरशन पांवा सुमरन पावां खरचा।
भाव भगत चंगेरी पांवा तीन बात शमशेरी ॥२॥
ऊंचे २ महल चिनावां बीच रखावां बारी।
सांवरिया के दरशन पावां लकुट कमरिया कारी ॥३॥
जोग करन को जोगी आये तप करने संन्यासी।
नाम जपन को साधु आये वृन्दावन के वासी ।४॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर ऐसो गहर गंभीर।
ग्वालिनी को दरशन दीजो तट जमना के तीर ॥५॥

२४५

कान्हा तेरी रे जोवत रह गई बाट ॥
जोवत जोवत इक पग ठाढ़ी, कालिन्दी के घाट ॥१॥
कपटी प्रीत करो मन मोहन, या कपटी की बात ॥२॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, देगयो व्रज को चाट ॥३॥

२४६

मोर भई बाजी मधुर मुरलिया, कैसे धरे जिया धीर ॥टेक॥
मधुबन बाजी वृन्दावन बाजी, तट यमुना के तीर ॥१॥
बैठ कदम्ब पर वंशी बजावे, स्थिर भयो यमुना नीर ॥२॥
दर्द न जाने पीर ना पहिचाने, श्याम बड़ो बे पीर ॥३॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, आखिर जात अहीर ॥४॥

होरी खेलत हैं गिरधारी ॥टेक॥
मुरली चंग बजत डफ न्यारो, संग जुवती ब्रजनारी ।
चन्दन केसर छिरकत मोहन, अपने हाथ बिहारी ।
भरि भरि मूठ गुलाल लाल चहुं देत सबन पै डारी ।
छैल छबीले नवल कान्ह संग, श्यामा मान पियारी ।
गावत चारु धमार राग तंह, दै दै कल करतारी ।
काग जु खेलत रसिक सांवरो, बाढ्यो रस ब्रज भारी ।
मीरां के प्रभु गिरधर मिले मन मोहन लाल बिहारी ।

२४७

मेरो मन रामहिं राम रटेरे ॥ टेक ॥
राम नाम जपि लीजै प्यारे, कोटिन पाप कटेरे ॥
जनम २ के खत जु पुराने, नामहिं लेत फटेरे ॥
कनक कटोरे अमृत भरियो, पीवत कौन नटैरे ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, तन मन ताहि पटैरे ॥

२४८

बांके बिहारी को हमरी प्रणाम ॥टेक॥
मोर मुकुट माथे तिलक बिराजे ।
कुण्डल अलकां कारी को ॥१॥
अधर मधुर धर बंसरी बजावे ।
रीझ रिझावे राधा प्यारी को ॥२॥
यह छबि देख मगन भई मीरां ।
मोहन गिरवर धारी को ॥३॥

२४९

मोरी लागी लटक गुरु चरणन की ॥टेक॥
चरण बिना मुझे कछु नहीं भावे, झूठी माया सब सपनन की
भवसागर सब सूख गया है, फिकर नहीं मुझे तरनन की
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, उलट भई मोरे नयनन की

२५०

कैसे जीऊरी मेरी माई, मैं हरि बिन कैसे जीऊरी ॥टेक॥
उदक दादुर मीनवत है जल से ही उपजाई ।
पल एक कूं मीन बीसरै तडफ तड़फ मर जाई ।
पिया बिन पोली भई रे बाला ज्यों काठ घुन खाई ।
औषध मूल न संचरै वैदा फिर फिर जाई ।
उदासी होय बन बन फिरूं रे बिथा जो तन छाई ।
दास मीरां लाल गिरधर मिलया है सुखदाई ।

२५१

बिरयो तो रंग गाढ़ा लगा मेरी माय, दूजा नाहीं सुहाय
पीया प्याला अमर रस का, चढ़ गई घूम घुमाय ।
यो तो अमल म्हारो कबहु न उतरे, कोट करो न उपाय ॥
सांप पिटारो राणाजी भेज्यो, दियो मेड़तणी गल डार ।
हंस हंस मीरां कंठ लगायो, योतो म्हारे नौसर हार ॥
विषको प्याला राणाजी भेल्यो, यो मेड़तड़ी ने प्याय ।
कर चरणामृत पी गई रे, गुण गोविन्द रा गाय ॥
पीया प्याला नाम का रे, और न रंग सुहाय ।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, काचो रंग उड़ जाय ।

२५२

नहीं ऐसो जन्म बारंबार ॥टेक॥

क्या जानूं कछु पुण्य प्रगटे मानुसा अवतार ॥१॥
बढ़त पल पल घटत छिन छिन, चलत न लागे वार ॥२॥
विरछ के ज्यों पात टूटे लगे नहीं पुनि डार ॥३॥
भवसागर अति जोर कहिये विषम औखी धार ॥४॥
सुरत का नर बांध बेड़ा वेग उतारो पार ॥५॥
साधु संतां ते महंतां चलत करत पुकार ॥६॥
दास मीरां लाल गिरधर जीवना दिन चार ॥७॥

२५३

भूल बिसर मत जाना कान्हा मेरी ओर निभाना जी ॥टेक॥

हमरी तुमरी लगन लगी है, नित प्रति आना जाना जी।
मन भावै सो कहे जगत् सब, नेक नहीं शरमाना जी।
घट घट वासी अन्तर्यामी, प्रेम का पन्थ पिछाना जी।
जो तू मेरो नाम न जाने, मेरो नाम दिवाना जी।
सूरज सोहीं पौर हमारी, चन्दन चौक निशाना जी।
हमरे अङ्गना में तुलसी का बिरवा, जाके हरे हरे पाना जी।
जो कान्हा मेरो गाम न जाने, मेरो गाम बरसाना जी।
कै तो ठाकुर दर्शन दीजो, नातर लीजो प्राणा जी।
जब से सुनी मनक मुरली की, तब से जिय घबराना जी।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, लगे प्रीत के बानाजी।

२५४

मनवा राम नाम रस पीजे ॥टेक॥
तज कुसंग सत्संग बैठ नित, हरि चरचा गुण लीजे ॥१॥
काम क्रोध मद लोभ मोह को चित्त से बाहर कीजे ॥२॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, ताहि के रंग में भीजे ॥३॥

२५५

बरसे बदरिया सावन की सावन सावन की मन भावना की
सावन में उमग्यो मेरो मनवा, मनक सुनि हरि आवन की
घुमड़ २ चहुं दिश ते आयो, दामन चमके लड़ लावन की
नन्हीं २ बून्दन मेहा बरसे, शीतल पवन सुहावन की
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, आनन्द मगल गावन की

२५६

श्याम बिन पलक न लागे मोरी ॥ टेक ॥
हरि बिनु मथुरा सूनी र गत है, जैसे चन्द्र बिन रैन अधेरी।
पात २ वृन्दावन ढूंढी मैंने गोकुल ढूंढी घनेरी।
हरि की खातर मैं जोगिन बनूँगी, घर २ दूंगी फेरी।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, जुग २ राखो चेरी।

२५७

तुम सुनो दयाल म्हारी अरजी ॥टेक॥
भौसागर में बहा जात हूं, काढ़ो तो थारी मरजी।
जो संसार सगो नहिं कोई सांचा सगा रघुवर जी।
मात पिता और कुटुम्ब कबीला, सब मतलब के गरजी।
मीरा की प्रभु अरजी सुन लो, चरण लगावो थारी मरजी।

२५७

मेरे तो गिरधर-गुलाल दूसरो न कोई ॥टेक॥

जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई ॥
तात मात भ्रात बन्धु, आपनी न कोई ॥१॥
छाँड दई कुलकी कान, का करि हैं कोई ॥
सन्तन ढिग बैठि बैठि, लोक-लाज खोई ॥२॥
चुनरी के किये टुक, ओढ़ लीन्ही लोई ॥
मोती मूंगे उतार, वन माला पोई ॥३॥
अँसुवन जल सींच सींच, प्रेम बेलि बोई ॥
अब तो बेल फल गई, होनी हो सो होई ॥४॥
दूध की मथनिया बड़े प्रेम से बिलोई ॥
माखन जब काढ़ लियो, छाछ पिये कोई ॥५॥
आई मैं भक्ति काज, जगत देख मोही ॥
दासि मीरा गिरधर प्रभु, तारो अब मोही ॥६॥

२५८

बसो मेरे नैनन में नन्दलाल ॥

मोहिनि मूरति सांवरि सूरति, नैना बने विशाल।
अधर-सुधा रस मुरली राजत, उर बैजन्ती माल ॥१॥
छुद्र घण्टिका कटि-तटि शोभित, नूपुर शब्द रसाल।
मीरां प्रभु सन्तन सुखदाई, भक्त-बछल गोपाल ॥२॥

२५६

मज ले रे मन गोपाल गुना ॥ टेक

श्रवग तरे अधिकार भजनसूं जोइ आंये हरि सरना।
अविश्वास तो साखि बताऊं, अजामील गणिका सदना ॥
जो कृपाल तन मन धन दीन्हों, नैन नासिका मुख रसना।
जाको रचत मास दस लागे, ताहि न सुमिरो एक छिना ॥
बालापन सब खेल गंवायो तरुन भयो जब रूप घना।
वृद्ध भयो जब आलस उपज्यो, माया मोह भयो मगना ॥
गज अरु गीधहूं तरे भजन सूं, कोउ तर्यो नहिं भजन बिना।
धनाभगत पीपामुनि सिवरी, मीरां की हूं करो गणना ॥

२६०

मन रे परसि हरि के चरण।

सुभग शीतल कमल कोमल, त्रिविध ज्वाला हरण।
जिन चरण प्रह्लाद परसे, इन्द्र पदवी-धरण ॥१॥
जिन चरण ब्रह्माण्ड भेट्यो, नख सिखासिरी धरण ॥२॥
जिन चरण प्रभु परसि लीनो, तरी गौतम-घरण।
जिन चरण कालीनाग नाथ्यो, गोप-लीला-करण ॥३॥
जिन चरण गोवर्द्धन धार्यो, गर्व मघवा हरण।
दास मीरां लाल गिरधर, अगम तारण तरण ॥४॥

२६१

भज मन चरन कमल अविनासी ॥

जेताई दीसे धरनि गगन बिच, तेताई सब उठि जासी।
कहा भयो तीरथ व्रत कीन्हे, कहा लिये करवत कासी ॥१॥

इस देहीका गर्व न करना, माटी में मिल जासी
यो संसार चहर की बाजी, सांझ पड्यां उठ जासी ॥२॥
कहा भयो है भगवा पहरयां, घर तज भये संन्यासी।
जोगी होय जुगति नहि जानी, उलट जनम फिर आसी ॥३॥
अरज करूं अबला कर जोरे, श्याम तुम्हारी दासी।
मीरां के प्रभु गिरिधर नागर, काटो जगकी फासी ॥४॥

२६२

राम नाम रस पीजै, मनुआ राम नाम रस पीजै।
तज कुसंग सतसंग बैठ नित, हरि चरचा सुन लीजै ॥१॥
काम क्रोध मद लोभ मोहकू, बहा चित्त से दीजै।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, ताहिके रंग में भीजै ।२॥

२६३

हरि तुम हरो जनको भीर ॥टेक॥
द्रोपदी की लाज राखी, तुम बढ़ायो चीर।
भक्त कारन रूप नरहरि, धरयो आप शरीर ॥१॥
हरिनकश्यप मारि लीन्हो, कियो बाहर नीर।
दासि मीरा लाल गिरधर, दुख जहां तहं पीर ॥२॥

२६४

छोड़ मत जाज्यो जी महाराज ॥टेक॥
मैं अबला बल नांय गुसाईं, तुसही मेरे सिरताज।
मैं गुणहीन गुण नांय गुसाईं, तुम समरथ महाराज ॥१॥
बांरी होयके किणरे जाऊं, तुम हो हिवड़ारो साज।
मीरा के प्रभु और न कोई, राखो अबके लाज ॥२॥

अब तो निभार्यां सरेगी, बांह गहे की लाज ॥टेक॥
समरथ सरन तुम्हारी सइयां सरब सुधारण काज।
भवसागर संसार अपरबल, जामें तुम हो जहाज।
निरधारां आधार जगत गुरु तुम बिन होय अकाज।
जुग जुग मीर हरी भक्तन की, दीनी मोच समाज।
मीरा सरण गही चरणन की, लाज रखो महाराज

२६५

रमैया मैं तो थारे रंग राती।
औरों के पिया परदेस बसत हैं, लिख लिख भेजें पाती।
मेरा पिया मेरे हृदय बसत है रोल करूं दिन राती।
चूवा चोला पहिर सखीरी, मैं झुरमट रमवा जाती।
झुरमट में मोहन मिलिया, घाल मिली गलबांथी।
और सखी मद पीपी माती, मैं बिन पीयां ही माती।
प्रेम-भठीको मैं मद पीयो, छकी फिरूं दिन राती।
सुरत निरतन को दिवलो जोयो, मनसा पूरन बाती।
अगम घाणिको तेल सिंचायो बाल रही दिन राती।
जाऊंनी पीहरिये जाऊंनी सासरिये हरिसूं सैन लगाती।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर हरि-चरना चित लाती।

२६६

आली री मेरे नैनन बान पड़ी ॥ टेक ॥
चित चढ़ी मेरे माधुरि मूरत, उर बिच आन अड़ी ॥ १ ॥
कबकी ठाढ़ी पंथ निहारूं, अपने भवन खड़ी ॥ २ ॥

कैसे प्रान पिया बिन राखूं, जीवन मूल जड़ी ॥ ३ ॥
मीरा गिरधर हाथ बिकानी, लोक कहै बिगड़ी ॥ ४ ॥

२६७

नातो नामको जी म्हास्यूं तनक न तोड्यो जाय ॥ टेक ॥
पाना ज्यूं पीली पड़ी रे, लोग कहे पिंड रोग
छाने लांघण मैं किया रे, राम मिलण के जोग ॥ १ ॥
बावल वैद बुलाइया रे, पकड़ दिखाई म्हारी बाह ।
मूरख वैद्य मरम नहीं जाणै, कसक कलेजे माह ॥ २ ॥
जाओ वैद घर आपणे रे, म्हारो नाम न लेय ।
मैं तो दाझी विरह की रे, काहे कूं ओषध देय ॥ ३ ॥
मांस गल गल छीजियो रे, करक रह्या गल आय ।
आंगलियां की मूंदड़ी म्हारे, आवण लागी बांह ॥४॥
रे रे पापी पपीहरा रे, पिव को नाम न लेय ।
जे कोई विरहण साम्हले तो, पिव कारण जिव देय ॥५॥
छिन मन्दिर छिन आंगणे रे, छिन छिन ठाढ़ी होय ।
घायलसी झूंमूं खड़ी म्हारी, व्यथा न बूझे कोय ॥६॥
काढ़ कलेजो मैं धरूं रे, कौवा तूं ले जाय ।
ज्यां देशां म्हारो हरि बसै रे, वां देखत तूं खाय ॥७॥
म्हारे नातो राम को रे, और न नाता कोय ।
मीरां व्याकुल विरहणी रे, (हरि) दर्शन दीज्यो मोय ॥८॥

२६८

दरस बिन दूखन लागे नैन ।।टेक।।

जबसे तुम बिछुरे मेरे प्रभुजी, कबहुं न पायो चैन ।।१।।
शब्द सुनत मेरी छतियां कम्पै, मीठे लागे बैन ।
एक-टकटकी पंथ निहारूं, भई छमासी रैन ।।२।।
बिरह बिथा कासूं कहुं सजनी, बह गई करवत नैन ।
मीरां के प्रभु कब रे मिलोगे, दुख मेटन सुख दैन ।।३।।

२६९

मैं तो अपने सैयां संग राची ।।टेक।।

अब काहेकी लाज सजनी, परगट ह्वै नाची ।। १ ।।
दिवस भूख न चैन कबहूं, नींद निशि नासी ।
वेध बारका पार होइगा, प्रेम गृह गांसी ।।२।।
कुल कुटुम्ब सब आनि त्यागे, जैसे मधु मासी ।
दास मीरां लाल गिरधर, मिटी जग हांसी ।।३।।

२७०

माई मैंने गोविन्दा लीनो मोल ।।टेक।।

कोई कहै सस्तो कोई कहै मंहगो, लीनो तराजू तोल ।
कोई कहै घर में, कोई कहै बन में, राधाके संग करे किलोल ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, आवत प्रेम के मोल ।

२७१

पायो जी म्हेतो राम रतन धन पायो ।

वस्तु अमोलक दी म्हांरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो ।
जनम जनम की पूंजी पाई, जग में सभी खोवायो ।

खरचै नहिं कोई चोर न लेवै, दिन दिन बढ़त सवायो ।
सतकी नाव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो ।
मीरांके प्रभु गिरधर नागर, हरख हरख जश गायो ।

२७२

मीरां मगन भई हरि के गुन गाय ।
सांप पिटारा राणा भेज्या, मीरा हाथ दिया जाय ।
न्हाय धोय जब देखन लागी, सालिगराम गयी पाय ।
जहर का प्याला राणा भेज्या, अमृत दीन्ह बनाय ।
न्हाय धोय जब पीवन लागी, होगई अमर अंचाय ।
सूली सेल राणा ने भेजी, दीज्यो मीरा सुलाय ।
सांझ भई मीरां सोवन लागी, मानों फूल बिछाय ।
मीरां के प्रभु सदा सहाई राखे विघ्न हटाय ।
भजन भाव में मस्त डोलती, गिरिधर पै बलिजाय ।

२७३

मैं तो मेरे सांवरिये ने देखबो करूंगी ॥टेक॥
तेरो उमरण तेरो ही सुमरण तेरो ही ध्यान धरूंगी ।
जहां जहां पांव धरूं धरणी पर तहां तहां निरत करूंगी ।
मीरांके प्रभु गिरधर नागर, चरणन लिपट परूंगी ।

२७४

फागुन के दिन चार होली खेल मना रे ॥टेक॥
बिन करताल पखावज बाजै अनहद की झनकार ।
बिन सुर राग छतीसों गावें, रोम रोम रणकार ।

शील सन्तोष की केशर घोली, प्रेम-प्रीति पिचकार।
उड़त गुलाल लाल भये बादल, बरसत रंग अपार।
घटके सब पट खोल दिये हैं लोक लाज सब डार।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल बलिहार।

२७५

घर आंगन न सुहावे पिया बिन मोहि न भावे ॥टेक॥
दीपक जोय कहां करूं सजनी, हरि परदेश रहावे।
सूनी सेज जहर ज्यूं लागे, सिसक सिसक जिय जावे।
नयन निद्रा नहीं आवे ॥१॥
कबकी ठाढ़ी मैं मग जोऊं, निसि दिन बिरह सतावे।
कहा कहूं कछु कहत न आवे, हियड़ो अति अकुलावे।
हरी कब दरस दिखावे ॥२॥
ऐसो है कोई परम सनेही, तुरत सदेशो लावे।
वा बिरिया कब होसी मुझको, हरि हंस कण्ठ लगावे।
मीरा मिल होरी गावे ॥३॥

२७६

दीनबन्धो हम सबो को ज्ञान भिक्षा दीजिये।
आप के हम पुत्र हैं सब भान्ति रक्षा कीजिये।
दो हमें वर भक्ति अपनी और सुन्दर धीरता।
शक्ति विद्या मान धन यश आदि सच्ची वीरता।
देश सेवी हम सभी हों सत्य ही भाषण करें।
झूट छल चोरी जुवा से नित्य हे ईश्वर डरें।

अन्त को सब शिशु गणों की आप से बिनती यही।
हों सभी इस योग्य जो शोभित करें भारत मही।
हे प्रभो आनन्ददाता, ज्ञान हम को दीजिये।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हम से कीजिये।
लीजिये हमको शरण में हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी धर्म रक्षक वीर व्रतधारी बनें।
सृष्टिपालक दुष्टघातक भक्त सुखदायक तुम्हीं।
दीनबन्धु करुणासागर और सब लायक तुम्हीं।
प्रह्लाद ध्रुव के सम हमें प्रभु अपनी भक्ति दीजिये।
देश हित तन धन बली करने को तत्पर कीजिये।

२७७

ईश्वर तू है सबका स्वामी, क्षमा सिन्धु उर अन्तरयामी।
महिमा तेरी अपरम्पार, तुझ से गये वेद भी हार।
तूने सारा जगत बनाया अनुपम दृश्य हमें दिखलाया।
सूरज तारे चांद बनाये जलथल अनल पवन प्रगटाये।
न्यायी सत्य सिन्धु सुख खान करुणानिधि तू है बलवान।
दानी ज्ञानी घट २ वासी तू है निर्विकार अविनाशी।
जीना मरना तेरे हाथ अधः पतन उन्नति सब साथ।
यश अपयश का तू ही दाता, रूप न तेरा जाना जाता।
चींटी से हाथी तक सारे जितने जीव जन्तु बेचारे।
देकर सब को दाना पानी रखता तू उन पर निगरानी।
राई को पर्वत कर देता पर्वत राई कर धर देता।

नगरों को तू निर्जन करता बन में नगरी सिरजन करता।
ब्रह्मादिक तव ध्यान लगाते, नारदादि मुनिवर गुण गाते।
गाते गाते वे थक जाते तो भी पार न तेरा पाते।
हे ईश्वर हे जगदाधार ! महिमा तेरी अपरम्पार।
हमरी रख लीजे प्रभु लाज, विनय यही करते हैं आज।
हे प्रभु ! रक्षा करो हमारी हम आये हैं शरण तुम्हारी।
दिन भर के अपराध हमारे क्षमा करो करुणा निधि सारे।

२७८

हे नाथ हे प्रभु महा महिमा तुम्हारी,
वाणी नहीं कह सुना सकती हमारी।
सौ वर्ष भी यदि सदा तव कीर्ति गावें,
तो भी कभी न उसके वह पार जावें ॥१॥
पृथिवी पहाड़ नद पेड़ समुद्र सारे,
हैं यह समस्त जगदीश दिये तुम्हारे।
हे ईश आप यदि सूर्य हमें न देते,
तो जीव जन्तु जग में न कदापि जीते ॥२॥
यह जो अनेक फल हैं जग में दिखाते,
खाते नहीं हम कभी जिनको अघाते।
यह पुष्प नेत्र सुखदायक जो खिले हैं,
सो भी सभी तव कृपा कण से मिले हैं ॥३॥
देते न जो तुम हमें जगदीश आंखें,
पाते इन्हें न करते यदि यत्न लाखें।

हे सर्व लोक सुख दायक सौख्य धाम,
हे विश्व नाथ विश्वेश तुम्हें प्रणाम ॥४॥
जो जो छिपाय हम काम बुरे करें हैं,
जाने न और इससे मन में डरें हैं।
सो सो सदा तुम उसी क्षण जान लेते,
तत्काल नाथ हमको तुम दण्ड देते ॥५॥
हे हे दयामय प्रभो कर जोड़ते हैं,
सारी कुचाल अब से हम छोड़ते हैं।
जो भूल चूक परमेश्वर हो हमारी,
कीजे क्षमा शरण में हम हैं तुम्हारी ॥६॥

२७६

इस देश को हे दीनबन्धो आप फिर अपनाइये।
भगवान् भारतवर्ष को फिर पुण्य भूमि बनाइए।
जड़ तुल्य जीवन आज इसका विघ्न बाधा पूर्ण है।
हे रम्भ अब अवलम्ब देकर विघ्न हर कहलाइए।
हम मूक किंवा मूढ हों रहते हुए तुझ शक्ति के।
मां ब्रह्मी कहदे ब्रह्म से सुख शांति फिर सरसाइये।
सर्वत्र बाहर और भीतर रिक्त भारत हो चुका।
फिर भाग्य इसका हे विधाता पूर्व सा पलटाइये।
तू अन्न पूर्णा मां रमा है और हम भूखों मरें।
कहदे जनार्दन से जगाकर दैन्य दुःख मिटाइये।
यह सृष्टि गौरव गज ग्रसित है ग्रह दशा के ग्राह से।

हे भक्तवत्सल शुभ सुदर्शन चक्र आप चलाइये ।
मां शंकरी सन्तान तेरी हाय यों निरुपाय हो ।
श्री कण्ठ से कहदे कि हे हर अब न और सताइये ।
शून्य श्मशान समान भारत हाय कब से हो चुका ।
आकर कराल विपत्ति विष से व्योमकेश बचाइये ।
सम्पूर्ण गुण गौरव रहित हम पतित अवनत हो चुके ।
अब छोड़ निर्गुणता विभो सत्वर सगुण बन जाइये ।
सीतापते सीतापते यह पाप भार निहारिये ।
अवतीर्ण होकर धर्म का निज राज्य फिर फैलाइये ।
गोपाल अब वह चैन की वंशी बजेगी कब यहां ।
आलस्य से अविभूत हमको कर्म योग सिखाइये ।
जिस वसुमति पर आपने बहु ललित लीलायें रचीं ।
करुणानिधे इस काल उसको आप यों न भुलाइये ।
पशु तुल्य परवशता मिटे प्रकटे यथार्थ मनुष्यता ।
इस कूप मण्डूकत्व से परमेश पिण्ड छुटाइये ।
जीवन-गहन बन सा हुआ है भटकते हैं हम जहां ।
प्रभुवर सदय होकर हमें सन्मार्ग पर पहुंचाइये ।
वह पूर्व की सम्पन्नता यह वर्त्तमान विपन्नता ।
अब तो प्रसन्न भविष्य की आशा यहां उपजाइये ।
वरमन्त्र जिसका मुक्ति था परतन्त्र पीडित हैं वही ।
फिर वह परम पुरुषार्थ इसमें शीघ्र ही प्रकटाइये ।
वह पाप पूर्ण पराबल चूर्ण होकर दूर हो ।

फिर स्वावलम्बन का हमें प्रिय पुण्य पाठ पढ़ाइये ।
व्याकुल नहीं कुछ भय न हो तुम सब अमृत सन्तान हो ।
यह वेद की वाणी हमें फिर एक बार सुनाइये ।
यह आर्य भूमि सचेत हो फिर कार्य भूमि बने अहा ।
यह प्रीति नीति बढ़े परस्पर भीति भाव भगाइये ।
किसके शरण होकर रहें अब तुम बिना गति कौन है ।
हे देव वह अपनी दया फिर एक बार दिखाइये ।

२८०

अय विभो करुणेश स्वामिन् क्वस्थितोऽसि दयानिधे ।
देहि निज पद पद्म भक्तिं तारयाशुभवाम्बुधे ।
यादवाभिजनेन पूर्णं नाविता वसुधा त्वया ।
नाशिता शिशुपाल कंसजरासुताद्य सुरामृधे ।
त्वद्वियोगमवाप्य भारत भूमिरधुना पीड़िता ।
पात्रतामुपयास्यतीश कदा तवानुग्रहविधे ।

२८१

हे विभो आनन्द सिन्धो में च मेधा दीयताम् ।
यच्च दुरितं दिनबन्धो तच्चदूरं नीयताम् ।
चञ्चलानि चेन्द्रियाणि मानसं मे पूयताम् ।
शरणं याचे तावकीनं सेवक अनुगृह्यताम् ।
त्वयि च वीर्यं विद्यते बत् तच्च मयि निधीयताम् ।
शौर्यं धैर्यं तैजसं च भारते चेक्रीयताम् ।
हे दयामय अयि आनादे प्रार्थना मम श्रूयताम ।

२८२

भगवन् त्वदीयभक्तिं मनसा सदा स्मरेयम् ।
वेदोक्त धर्म कार्यं नक्तन्दिनं विधेयम् ।
संगः सदा सुधीनां पन्थाश्च आर्याणाम् ।
सद्भावनामृतीणां स्वान्ते सदा भरेयम ।
रोगा हरन्ति देहं प्रबलाः शरीर मध्ये ।
ब्रह्मचर्यमौषधं च पेयं सदा वरेण्यम् ।
बालैरमूल्य वेला खेलासुनाषनेया ।
ज्ञानं सदा धरेयं धर्मं सदा चरेयम् ।

२८३

वन्दे मुकुन्द देवं धृतयादवेन्द्र देवम् ।
जनकेन कंस भयतो नीतं तु गोप गेहम् ।
खल धेनुकांवकारिं व्योमासुरादि कालम् ।
वंशी विभूषितोष्ठं हृन्मानसे मरालम् ।

२८४

भगवन्तमनन्तमजं भजरे, मनसा विषयेषु रतिं त्यजरे ।
सुतदारधनादि विहाय चलं, गुरुमात्मविदं शरणं व्रजरे ।
शृणु शास्त्र रहस्य कथा विमला, हृदये गत मोह मलं मृजरे ।
निखिलं जगदेतदवेहि मृषा, परमात्मनि नित्य मतिंसृजरे ।
परि हाय मनो भ्रमजालमिदं, हरिमेकमुदारमतिं यजरे ।

२८५

भक्ति अपने पद कमल की दीजिये प्रभु दीजिये ।
चरण सेवक आप अपने कीजिये प्रभु कीजिये ।
अनगणित यह वस्तुयें प्रभु आपने की हैं प्रदान ।
ज्ञानकी शक्ति हमें प्रभु दीजिये हरि दीजिये ।
अनहित न होवे जन्म भर हमसे किसी का हे प्रभो !
बुद्धि ऐसी हमको हे प्रभु दीजिये हरि दीजिये ।
हे स्वामी ! चरणों में तुम्हारे कोटि बार प्रणाम है ।
दास हमको आप अपना कीजिये हरि कीजिये ।

२८६

पितु मात सहायक स्वामि सखा, तुमही एक नाथ हमारे हो
जिनके कछु और अधार नहीं तिनके तुमही रखवारे हो
प्रतिपाल करो सगरे जगके अतिशय करुणा उर धारे हो
भूलि हैं हमही तुमको तुमतो हमरि सुधि नाहिं बिसारे हो
उपकारन को कछु अन्त नहीं छिन ही छिनजो बिस्तारे हो
महाराज महा महिमा तुमरी समझे बिरले बुधवारे हो
शुभ शान्ति निकेतन प्रेमनिधे मन मन्दिर के उजियारे हो
यह जीवन के तुम जीवन हो इन प्राणन के तुम प्यारे हो

२८७

दोहा–राम नाम रटते रहो जब लग घट में प्राण।
कबहुक दीनानाथ के श्रवण पड़ेगी कान॥
तेरा जन राम रसायन माता ॥टेक॥
प्रेम रसा निधि जाको उपजे छोड़ न कतऊ जाता ॥१॥
सोवत हरिहरि, बैठत हरिहरि, हरिरस भोजन खाता ॥२॥
सुफल जन्म हरिजन का उपजिया कीनो है सात विधाता ॥३॥
सकल समूह ले उधरे नानक पूरण ब्रह्म पिछाता ॥४॥

३८८

दोहा–प्रेम २ सभी कहें प्रेम न चीन्हें कोय।
जोन प्रेम साहिब मिले प्रेम कहावे सोय॥
जगत् में झूठी देखी प्रीत ॥ टेक ॥
अपने सुख से सब जग लागे क्या दारा क्या मीत ॥१॥
मेरो मेरो सभी करत हैं हित से बान्धो चीत ॥२॥
अन्त काल संगी नहीं कोई यह अचरज की रीत ॥३॥
मन मूरख अजहूं नहीं समझत सिख दे हारो नीत ॥४॥
नानक भव जल पार परे जो गावे प्रभु के गीत ॥५॥

३८९

दोहा–हरि व्यक्ति की पीठ पै अनन्त शक्ति रही विराज।
अगम निगम खोजत फिरे कोई न आवे काज॥
हरि की गति नहीं कोई जाने ॥टेक॥
जोगी जती तपी पच हारे अरु बहू लोग सियाने।
छिन में राव रंक को करई राव रंक कर डारे।

रीते भरे भरे दुरकावे यह ताको व्यवहारे।
अपनी माया आप पसारे आप ही देखन हारा।
नाना रूप धरे बहु रंगी सबते रहै नियारा।
अनन्त अपार अलख निरंजन जिन सब जग उपजायउ।
सकल भरम तज नानक प्राणी चरण ताहि चित लायउ।

२६०

दोहा-मानुष जन्म दुर्लभ है, मिलै न बारम्बार।
तरवर से पत्ता झड़े बहुरि न लागे डार॥

सब कुछ जीवत को व्यवहार॥ टेक॥
मात पिता भाई सुत बान्धव और पुत्र घर की नार॥१॥
तन से प्राण होत जब न्यारे टेरत प्रेत पुकार॥२॥
आधी घड़ी कोऊ नहीं राखत घरते देत निकार॥३॥
मृगतृष्णा ज्यों जग रचना है देखो हृदय विचार॥४॥
सतगुरु शरण सन्त की सेवा काम क्रोध मद मार॥५॥
कहै नानक भज राम नाम नित्य जाते होय उद्धार॥६॥

२६१

दोहा-राजा रानी राव रंक बड़ा जो सुमरे नाम।
कहे कबीर सबमें बड़ा जो सुमरे निष्काम॥

तू सुमरण करले मेरे मना, तेरी बीती जात उमर हरिनाम बिना
पक्षी पंख बिन हस्ती दन्त बिन नारी पुरुष बिना।
जैसे पंडित बेद विहीना तैसे प्राणी हरी नाम बिना।
देह नयन बिन रैन चन्द्र बिन धरणी मेघ बिना।

जैसे पुत्र पिता बिन हीना तैसे प्राणी हरि नाम बिना।
कूप नीर बिन धनुष वीर बिन मन्दिर दीप बिना।
जैसे हृदयज्ञान विहीना तैसे प्राणी हरिनाम बिना।
काम क्रोध मद लोभ निवारो त्यागो मोह तुम सन्त जना
कहें नानक सुनो भगवन्ता या जग में नहीं कोई अपना

२६२

मेरो हरी बिन कोन सहाई ॥ टेक ॥
काकी मात पिता सुत बनिता, को काहू को भाई ॥ १ ॥
धन धरनी अरुसम्पति सगरी, जो मानिऊ अपनाई ॥ २ ॥
तन छूटे कछु संग न चाले, कहा ताहे लिपटाई ॥ ३ ॥
दीन दयाल सदा दुख भञ्जन, तासों रुचि न बढाई ॥ ४ ॥
नानक कहत जगत सब मिथ्या, ज्यो सुपनों रह नाहीं ॥ ५ ॥

२६३

सोच्या क्यों करना भाई जो करसी करतार ॥ टेक ॥
सोच्या सोच न होवही जो सोचे लख बार ॥
चुप्या चुप्य न हो वही जो लाये रहा लब तार ॥
भुख्या भुक्ख न ऊतरी जो बन्ने परियां पार ॥
किव सुचियार होवही क्यों पूड़े तुट्टे पाव ॥
हुकम रजाई चल्लाना गुरु नानक लिखिया नाल ॥

२६४

सुतां ऐत्त जाज वन्दिया तेरा नाम जपन दा बेला ॥टेक॥
उचियां पार बेअन्त स्वामी कौन जाने गुण तेरे ॥

गावत उदरे सुनते भी उदरे बिनसे पाप घनेरे ॥
पशु परे तुम मुग्ध को तारे पाप न पार उतारे ॥
नानक दास तेरी शरणाई सदा सदा बिलहारे ॥

२६५

यह मन नेक कह्यो न करै ॥ टेक ॥

सीख सीखाय रह्यो अपनी सी, दुनांत ते न टरे ॥ १ ॥
मद माया दश भयो बावरो, हरी जस नहिं उचरे ॥ २ ॥
करि परपच जगत के देह से, अपनो उदर भरे ॥ ३ ॥
स्वान पूछ ज्यों होय न सूधो, कह्यो न कान धरे ॥ ४ ॥
कह नानक भज राम नाम नित जातै काज सरे ॥ ५ ॥

२६६

साधो यह तन मिथ्या जानो ॥ टेक ॥

या भीतर जो राम बसत है, सांचो ताहि पिछानो ।
यह जग है सम्पत सुपने की, देख कहा ऐडानो ।
संग तिहारे कछु न चाले, ताहि कहा लपटानो ।
स्तुति निन्दा दोऊ परि, हरि, हरि कीरति उर आनो ।
जन नानक सब ही में पूरण एक पुरुष भगवानो ।

२६७

राम सुमिर राम सुमिर एहि तेरो काज है ।

माया को संग त्याग हरि जू की सरन लाग ।
जगत सुख मान मिथ्या झूठो सब साज है ।

सुपने ज्यों धन पिछान काहे पर करत मान ।
दारू की भीत जैसे बसुधा को राज है ।
नानक जन कहत बात बिनसि जै हैं तेरो गात ।
छिन छिन करि गयो काल्ह तैसे आत जात है ।

२६८

ठाकुर तब शरणाई आयो ॥टेक॥

उतर गयो मेरे मन का संशय, जब तेरा दर्शन पायो ।
अन बोलत मेरी बिरथा जानी, अपना नाम जपायो ।
दुःख नाठ्यो सुख सहज समायो अनद अनद गुण गायो ।
बांह पकड़ कढ़ लीने अपने, गृह अन्ध कूपते मायो ।
कहो नानक गुरु बन्धन काटे बिछुड़त आन मिलायो ।

२६६

मन रे गह्यो न गुरु उपदेश ।

कहा भयी जो मूंड मुडाया, भगवो कीनो भेष ।
सांच छांड कै झूंठहि लाग्यो, जन्म अकारथ कोया ।
कर परपंच उदर निज पोष्यो, पशु की नाईं सोया ।
राम भजन की गति नहीं जानी, माया हाथ बिकाना ।
उरझ रहो विषयन संग बौरा, नाम रत्न बिसराना ।
रह्यो अचेत न चेत्यो गोविन्द, बिरथा औध सिरानी ।
कहै नानक हरि विपद पिछानो, भूले सदा पिरानी ।

३००

प्राणी कौन उपाय करै।

जाते भगति राम की पावे, यम को त्रास हरै।
कौन कर्म विद्या कह कैसी, धर्म कौन पुनि करई।
कौन नाम गुरु जाके सुमिरै, भव सागर को तरई।
कलि में एक नाम किरपानिधि जाहि जपै गति पावे।
और धर्म ताके सम नाहिन, यह विधि बेद बतावै।
सुख दुःख रहत सदा निरलेपी जाको कहत गुसांई।
सो तुमही में बसै निरन्तर नानक दर्शन न्याई।

३०१

प्रभुजी यही मनोरथ मेरा।

कृपानिधान दयाल मोहि दीजै, कर सन्तन का चेरा।
प्रातहि काल लागो जन चरनी, निशि वासर दर्शन पावों।
तन मन अर्पण कों जन सेवा, रसना हरि गुण गाओ।
सांस सांस सुमिरो प्रभु अपना, सन्त संग नित रहिये।
एक अधार नाम धन, मोरा, आनन्द नानक यह लहिये।

३०२

माधो हरि हरि हरि मुख कहिये।

हमते कछु न होवे स्वामी, ज्यों राखो त्यों रहिये।
क्या कछु करे कि करने हारा, क्या इस हाथ विचारे।
जित तुम लावो तितही लागां, तितही पूरण खसम हमारे।
करहु कृपा सर्व के दाता, एक रूप लव लाइहु।
नानक की विनती हरि पै, अपना नाम जपावहु।

३०३

साधो रचना राम बनाई ।

इक विनशे इक अथिर माने, अचरज लख्यो न जाई ।
काम क्रोध मोह बश प्रानी, हरि मूरति बिसराई ।
झूठा तन सांचा कर मान्यो, ज्यों सुपना रैनाई ।
जो दीसै सो सकल विनाशे, ज्यों बादर की छांई ।
जन नानक जग जानो मिथ्या, रहो राम शरणाई ।

३०४

माई मोहि प्रीतम देहु मिलाई
सकल सहेली सुख भर सूती,
जिहिं घर लाल बरसाई ।
मोहिं अवगुण प्रभु सदा दयाला,
मोहिं निगुण क्या चतुराइ ।
करों बराबर जो पिया संग राती,
इह मेरो ढीठाई ।
भई निमाणी शरण इक ताकी,
श्री सतगुरु पुरुष सुखदाई ।
एक निमिष में मेरा सब दुःख काटया,
नानक सुख रैन बिहाई ।

३०५

मन कर कबहु न हरि गुण गायो।
विषयासक्त रह्यो निशि वासर, कीनो अपनो पायो!
गुरु उपदेश सुन्यो नहीं कानन पर दारा लिपटायो।
पर निन्दा कारन बहु धावत, आगम नहीं समझायो।
कहा कहौं मैं अपनी करनी, जिहिं विध जन्म गंवायो।
कहै नानक सब औगुण मो में, राख लेहु शरणायो।

३०६

ठाकुर तुम शरणाई आयो।
उतर गया मेरे मन का संशा जबते दर्बन पायो।
अह बोलत मेरी बिथा जानी अपना नाम जपायो।
दुःख नाठ्यो सुख सहज समायो, अनन्द २ गुण गायो।
बांह पकर कढ लीने अपने गृह, अन्ध कूपते मायो।
कहै नानक गुरु बन्धन काटे बिछुरत आन मिलायो।

३०७

प्रभु जी तुम मेरे प्राण अधारे ॥टे०॥
नमस्कार डंडौत बंदना, अनिक बार जाऊं बलिहारे।
ऊठत बैठत सोवत जागत, यह मन तुझे चितारे।
सुख दुख इस मन की बिरथा, तुझ ही आगे आगे सारे।
तू मेरी ओट बल बुद्धि धन, तुमहीं मेरे परिवारे।
जो तुम करो सोई भल हमरे पेख नानक सुख चरनारे।

३०८

सासरे ना जाऊंगी मोय गुरु मिले रैदास ॥टेक॥
एक बेल के दो तूमरी एक ही उनकी जात ।
एक तो [illegible]वी डोलै गलिन में एक सत्गुरु के हाथ ॥१॥
एक मिट्टी के दो हैं बर्तन एक ही उनकी जात ।
एक में घलते मक्खन मिश्री एक धोबी के घाट ॥२॥
आये गयों की पनहीं गांठै बैठ्यो खरै बजार ।
भूखों को तो भोजन देता आखर जात चमार ॥३॥
काख में से रांपी काढ़ी चीरा अपना गात ।
चार युगों के दीखै जनेऊ आठ गांठ नव तार ॥४॥
अपने महल से मीरां उतरी घट ही में गंगा न्हाय ।
पां पूजूं इस रहदास के अमर लोक लिये जाय ॥५॥

३०६

जुगहिया चाम की जामे बोले रमता राम ॥टेक॥
चाम ही का ऊंटड़ा चाम का नंगारा ।
चाम ऊपर चाम बैठा चाम बजावन हारा ॥ १ ॥
चाम ही की गावड़ी चाम ही का बच्छा ।
चाम नीचे चाम ऊंचे चाम दुहावन हारा ॥ २ ॥
चाम की धरतली चाम ही का आकाशा ।
चाम ही के नौलख तारे जिनमें है प्रकाशा ॥ ३ ॥
कहैं रहदास सुनो भाई साधो कौन चाम से न्यारा ।
जो इस चाम से न्यारा कहिये सोही गुरु हमारा ॥ ४ ॥

३१०

राम मैं नहीं तोरू जो तुम तोरो।
तुम सौं तोर कवन सौं जोरौं ॥टेक॥
जहां जहां जाऊं तुमरी पूजा,
तुमसा देव और नहिं दूजा ॥१॥
मैं अपनो मन हरि सौं जोरयो,
हरि सौं जोर सबन से तोरयो ॥२॥
तीरथ व्रत न करूं अन्देसा,
तुमरे चरण कमल का भरोसा ॥३॥
सबहिं परिहर तुम्हारी आशा,
मन क्रम वचन कहे रहदासा ॥४॥

३११

राम रट लागी लागी अब कैसे छूटे ॥टेक॥
प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी, जाकी अंग अंग बास समानी।
प्रभुजी तुम घन बन हम मोरा जैसे चितवत चन्द्र चकोरा।
प्रभुजी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोत जरै दिन राती।
प्रभुजी तुम मोती हम धागा, जैसे सोने हि मिलत सुहागा।
प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करे रहदासा।

३१२

सांची प्रीति हम तुम संग जोड़ी,
तुम संग जोड़ और संग तोड़ी ॥टेक॥
जो तुम बादर तो हम मोरा,
जो तुम चन्द्र हम भई चकोरा ॥१॥

जो तुम दीवा तो हम बाती,
जो तुम तीरथ तो हम जाती ॥२॥
जहां जहां जाऊं तहां तुमरी सेवा,
तुम सौं ठाकर और न देवा ॥३॥
तुमरे भजन कटे यम फांसा,
भक्ति हेतु गावे रहदासा ॥४॥

३१३

नमो नमो वृन्दावन चन्द ॥ टेक ॥
आदि अनन्त अनादि एक रस।
पिय प्यारी विहरत स्वच्छन्द ॥ १ ॥
सत्चित् आनन्द रूप राशि घन ।
खग, मृग, द्रुम, बेलि और वृन्द ॥ २ ॥
भगवत रसिक निरन्तर सेवत ।
मधुप भये पीवत मकरन्द ॥ ३ ॥

३१४

गजानन लम्बोदर दातार ॥ टेक ॥
रमत भवर गणपति गिरिजासुत, रिध सिध के भरतार ॥
चक्र तुण्ड शोभित कर सुन्दर, वाहन मूष सवार ॥
कनक छत्र शिर चवर डुलावे राजत भुजवर चार ॥
हेम सुता पति सुत गणनायक अनधन भरत भण्डार ॥
सिन्दूर अक्षत पुष्प चढत अति, भोग मोदक विचार ॥
युग कर वन्दित हर्ष कहत हों, दोजी भवसागर तार ॥

३१५

विघ्न निवारण तुम हो गणेशा ।।टेक।।
पार्वती के पुत्र कहाओ, शिव की पुरी के तुम हो नरेशा।
एक दन्त दूजी सूंड बिराजे, मूसे से वाहन गल बिच शेषा।
घाना के गुरु दास दामोदर, जैशिव जैशिव उज्ज्वल भेषा।

३१६

दो०-विघ्न हरण सुख कन्द ।सिद्धि सदन बारण बदन।
दमन करो दुःख द्वन्द्व लम्बोदर गणपति सदा ।।
गणपति गिरजाजी के लाल, सारे विघ्न मिटाने वाले ।टेक।।
हो तुम गौरी पुत्र गणेश, तुम्हें शिरनावें शारद शेष।
निशि दिन रटते तुम्हें महेश, मोदक भोग लगाने वाले।
प्रभु तुमहो मूषक असवार, मेटत विघ्न रूप अंधियार।
तुमरा पाये न कोई पार बिगरे काज बनाने वाले ।
गजानन लम्बोदर वागीश, बहु नर कहें तुम्हें जगदीश।
सब ही देव नवावें शीश, प्रभू इकदन्त कहाने वाले।
प्रथम सब धरें तुम्हारा ध्यान, हम हैं बाल मूढ अज्ञान।
दीजे बल विद्या अरु ज्ञान विद्या बुद्धि बढाने वाले।

३१७

दो०-गुरु को कीजे दण्डवत कोटि २ प्रणाम ।
कीट न जाने भृङ्ग को गुरु करले आप समान ।।
मेरे हो मन माना है गुरु नजर निहाल दयाल ।।टेक।।
अवर अकाश अधर वाको बंगला घट घट आप समाना है।

सब से परे दूर नहीं नीड़े अद्भुत रूप लखाना है।
भव सागर से उतरण कारण गुरु शब्द जलयाना है।
षट दर्शन में पड़ी जो खटपटी बड़ा सोई जिन जाना है।
बीसा सन्त शरण सतगुरु की जिन डारा मान गुमाना है।

३१८

मन परदेशी हो ये नहीं अपना देश ॥टेक॥
सत् का कहना सत् में रहना आनन्द रूप किसी का भयना।
जो कोई कहे सभी की सहना यही रटन हमेश।
गुरु का बचन सत्य कर मानो जगत् जाल झूठा कर जानो।
तत्वमसी का रूप पिछानो कट जाय करम कलेश।
जो दीखे सो रूप हमारा कोई नहीं है हमसे न्यारा।
मित्र और शत्रु कोई न हमारा मिट गये राग और द्वेष।
शाह गुरु शुकदेव विराजे चरणदास चरणों में साजे।
गुरु के बचन कभी नहीं त्यागे यही सत्य उपदेश।

३१९

दोहा हंसा सोऽहं तार कर सुरत कमरिया पोय।
अर्ध अर्ध नट ज्यों फिरे सहजी सुमरण होय॥

हे जहां का बसा फेर ना मरे हंसा चाल बसो वा देश ॥टेक॥
जहां अगम निगम दोउ धाम बास तेरा परे से परे॥
जहां बेदों की गमनांय ज्ञान और ध्यान भी उरे॥
जहां बिन धरणी की बाट चरणों के बिना गमन करे॥
जहां बिन श्रवण सुनले नयनों के बिना दरश करै॥

जहाँ बिन देही एक देव प्राणों के बिन श्वास भरे।
जहां जगमग जगमग होय उजारो दिन रात रहे।
जहां प्रेम नगरिया के घाट अधर दरियाव बगे।
जहां सन्त करें असनान दूजा तो कोई न्हाय न सके।
जाके न्हाये से सुख होय तपत तेरे तन की मिटे।
तेरे जन्म मरण मिट जांय चौरासी का फन्द कटे।
यो कहते नाथ गुलाब अमरापुर थारा वास करे।
गण गावें भानीनाथ आनन्द में सदा लगा ही रहे।

३२०

दोहा-हम वासी उस देश के जहां जात वर्ण कुल नांह।
शब्द मिलावा हो रहा देह मिलावा नांह॥
बहुर नहीं आऊंगा जाऊं हजारें देश॥टेक॥
गुण की गठड़ी खोल दिखाऊं पांच तीन की रचना लाऊं
लग रहा सीधा तार गगन चढ़ जाऊंगा॥१॥
अपने गुण पांचों दे दीने अपने अपने उन ले लीने
हो तुर्या असवार परम सुख पाऊंगा॥२॥
उलटी पृथ्वी नीर मिलाऊं ओले नीर तेज में पाऊं
तेज पवन में मेल पवन नभ लाऊंगा॥३॥
टूट गई आस वास कित करिये अपना न कोई कहो कहां रहिये
आठ पहर संग्राम में कैसे सुख पाऊंगा॥४॥
छुट गया भोग स्वाद गया जीका जबलग रहा तबलग रहा फीका
देखत आवे छींक तुरत उठ जाऊंगा॥५॥

शब्द बिहंगम बास बसाऊं जी कोई सुने उसका जनम मिटाऊं
अजब रंगीला ताक उसी में लो लाऊंगा ॥६॥
संता दोनो मौज अगब घर छाऊं सुख सागर में डेरा लाऊं
गुण गावे भानीनाथ अधर घर छाऊंगा ॥७॥

३२१

दोहा-मन के मते न चालिए मन के मते अनेक।
मन पर जो असवार हैं ते साधु कोई एक ॥
जिन्होंने मन मार लिया मैं तो उन सन्तो का हूं दास टेक॥
आपा मार जगत् में बैठे नहीं किसो से काम।
उनमें तो कुछ अन्तर नाहीं सन्त कहो चाहे राम।
मन मारा तन बस किया सभी भरम भये दूर।
बाहर तो कुछ सूझे नाहीं अन्तर बरसे नूर।
प्याला पीलिया नामका जी छोड़ा जगत का मोह।
हमको सतगुरु ऐसे मिल गए सहज मुक्त गई होय।
नरसीजी के सतगुरु स्वामी दिया अमीरस प्याय।
एक बूंद सागर में मिल गइ कहा करे यमराय।

३२२

दोहा- जहां दया तहां धर्म्म है जहां लोभ तहां पाप।
जहां क्रोध तहां काल है जहां क्षमा तहां आप।
काम क्रोध मद लोभ मोह ने हो गुरु इनने मेरी मत मारी।
केवल ब्रह्म रूप था मेरा पंच तत्व में लिया बसेरा।
इन्द्रिय आदि कर्म से लागी बुद्धि है सबसे न्यारी।

आदि जन्म का हूं अधिकारी दुःख में याद आई बुधसारी।
मनुवा खोज कनौज के देखा बिगड़ रही केसर क्यारी।
शून्य समाधि में जाय समाया चेला गुरुवा कुछ नहीं पाया।
आपही आप पुकारत आया अब समझा मूर्ख सारी।
धुन ही आसन अमर सिंहासन धुन में प्राण करे सुखवासन।
शरण मछन्दर गोरख बोले जान जान हुआ हितकारी।

३२३

दोहा- जैसे लकड़ी ढाक की ऐसा ही तन देख।
वामें देशू छुप रहा या में पुरष अलेख॥

बंगला भला बना दरवेश जामें नारायण परवेश॥टेक॥

पांच तत्व की ईंट बनाई तीन गुणों का गारा।
छत्तीसों की छात बनाकर चिन गया चिनने हारा॥
इस बंगले के दस दरवाजे बीच पवन का थंबा।
आवत जावत कोऊ न जाने देखो बड़ा अचम्भा॥
इस बंगले में चौपड़ माढ़ी खेलें पांच पचीस।
कोई तो बाजी हार चला है कोई चला जुग जीत॥
इस बंगले में पातर नाचे मनुवा तान लगावे।
सुरत निरत के पहर घूंघरु राग छत्तीसों गावै॥
कहैं मछन्दर सुन बोले गोरख जिन यह बंगला गाया।
इस बंगले के गाने वाला बहुर जन्म नहीं आया॥

३२४

दोहा- गगन गरजे बर्षे अमी, बादल गहर गम्भीर।
चहुं दिश दमके दामिनी, भीजे दास कबीर ॥

बादल झुक आया भीजे म्हारी कायारो चीर ॥ टेक ॥

प्रेमघटा ओलर आइरें गगन से,
तनमन भीजगया हरि रङ्ग से।
बरषे निर्मल नीर इन्दु ज्यों लहराया ॥ १ ॥

जहाँ बर्षे जहां बिजली चमके,
घन गरजे और दामनी दमके ।
बर्षे अमृत धार इन्द्र ज्यों झड़ लाया ॥ २ ॥

बसती बसो चाहे बन उठ जावो,
तीरथ जावो चाहे मल मल न्हावो
जिनका तनमन होगया फकीर शब्दमें चतलाया ॥

नाथ गुलाब दिया गुरु हेला,
मानी नाथ सुनो निज चेला।
उलट पवन की डाट गगन थारो घर छाया ॥४॥

३२५

दोहा- नुगरा मानस मत मिलो पापी मिलो हजार ।
एक नुगरे की पीठ पै सौ पापियों का भार ॥

मरना तुझे है जरुर गुरु कोई धारो रे ॥ टेक ॥

बिरले जीव बचन गुरु माना उनको चा सरूर ॥ २ ॥
शाँति सरोवर मज्जन कीना छाडा सभी गरूर ॥ २ ॥
अन्तर दृष्टि करो घट भीतर निरखा झिलमिल नूर ॥ ३ ॥
पद्मदास फिर सत्यलोक में निरखा कुल्ल हुजूर ॥ ४ ॥

३२६

तू तो कोई अजब है तेरा अजब तमाशा जग में जोर ॥टेक॥

तुही राम तैंने रावण मारा तू है नन्द किशोर ॥
तुही इन्द्र इन्द्रासन तेरा तु बरसे घन घोर ॥
तुही ब्रह्मा तुही विष्णु महादेव तू कमला पति कोर ॥
रूपों में सब रूप धरै है तुही करे है किलोर ॥
पांच तत्व और तीन गुणो में तुही दशों दिशा चहूं ओर ॥
पिण्ड ब्रह्माण्ड में तुही विराजे तू पूर्ण सब ठौर ॥
तू ही गुप्ता तूही मुक्ता घट २ ब्रह्मा चकोर ॥
चरणदास रोचक ने भाषे दूजा नहीं है कई और ॥

३२७

चरखा तोहि अजब मिला तूतो कात सुहागन नार ॥ टेक ॥

कारीगर ने घड़ा चरखला चौंसठ बन्द लगाय ॥
पूर्व जन्म से तोहि मिल्यो है काते न मन हर्षाय ॥
शील धर्म व्रत नेम खूंटडी सुन्दर ना हिल जाय ॥
चित जतनी से बीस पंखड़ी चौकस बंद लगाय ॥
मन माल हैं न त्याग बावरी मत की नाय बनाय ॥
तप तकला और दया दमडका चरखा चित्त बनाय ॥
राम नाम की तार बांध ले सुरता मत गरवाय ॥
शम्भुनाथ की नाव झोझरी सतगुरु पार लंगाय ॥

३२८

दोहा- सहज ही धुन लाग रही, कहे कबीर घट मांह।
हृदय हर २ होत है, मुख की हाजत नाँह ॥
हर हर २ हो रही हिये में और वार्ता सब झूठी ॥टेक॥
प्रेम घटा म्हारे सत्गुरु लाये अमृत बूंदां हद मीठी।
तिरबेणी के रङ्ग महल में साधां लालां हद लूटी ॥
रुणझुण २ चाजे बाजैं जगमग झलक रही ज्योति ।
ओंकार के सोऽहंकार में हंसा चुग रहा निज मोती ॥
पांच चोर तेरी काया नगर में इनकी पकरो ना शिर चोटी।
पाँचोंकोमार पचीसोंको वसकर जब जानूंगा तेरी बुधचोखी
सत् सुमरण का सेल बनाले ढाल बनाले धीरज की।
काम क्रोध मन मार हटाले जब जानूंगा तेरी रजपूती ॥
पक्की घड़ी का तोल बनाले काण न राखो एक रती ।
शरण मच्छदर जति गोरख बोले अलख लले सोई खराजती

३२९

क्या तन मांजता रे आखिर माटी में मिल जाना ॥टेक॥
माटी ओढ़न माटी पहरन माटी का सिरहाना ।
माटी का कलवूत बनाया जामें भंवर समाना ।
मात पिता का कहना मानो हर से ध्यान लगाना ।
सत्य बचन तुम निशदिन बोलो सबको सुख पहुंचना ।
इक दिन दुहले बने बराती शिर पर दुले निशाना ।
इक दिन जाय जंगल में सोवे कर सूधे पग तान ।

पढ़ना लिखना कभी न छोड़ो जो चाहो कल्याणा ।
सबके स्वामी पालन कर्त्ता उनका हुकम बजाना ।

३३०

दोहा- धीरे धीरे रे मना धीरे सब कुछ होय ।
माली सींचे केवड़ा ऋतु आये फल होय ॥

रे भूले मन धीरी क्यों न धरे ॥टेक॥

अजगर पड़ी धरण में लोटे वो भी पेट भरे ।
अटल पंख वो भारी योधा दिन भर भूख मरे ।
कबहूं बूंद गगन में दरसे कबहुं तलाब भरे ।
कबहुं पत्थर तिरते देखे लोढे डूब मरे ।
मजारी सुत आवा में राखे शिर पे अग्न जरे ।
खम्भफार हिरणाकुश मारे नृसिंह रूप धरे ।
नरसी के प्रभु गिरधर नागर आकर भात भरे ।

३३१

दोहा- बहुत गई थोड़ी रही, नारायण अब चेत ।
काल चिरैया चुग रही निश दिन आयु खेत ॥

सुमरण कर श्री राम नाम, दिन नीके बीते जाते हैं ।
तज विषय भोग और सभी काम, तेरे संगना चलसी एकदाम
समझो इसको सुबहशाम जो देते हैं सो पाते हैं ।
कौन तुम्हारा कुटुम्ब परिवारा, किसके हो यहां कौन तुम्हारा ।
किसके बल हरि नाम बिसारा, सब जी के जी के नाते हैं ।
लख चौरासी भरम के आया, बड़े भाग्य मानुष तन पाया ।

ता पर भी नहीं कमाई, फिर पाछे पछताते हैं ।
जो तू लागे विषय विलासा, मूरख फंसे मौज की कांसा ।
क्या देखे श्वासन की आशा, गये फेर नहीं आते हैं ।

३३२

रङ्ग महल के बीच पुरुष मतवाला है ॥टेक॥
उलटे प्राण गर्भ में डारे,
अलख पुरुष का खेल भरम से न्यारा है ।
गगन मण्डल में अमी रस भरिया,
नुगरा प्यासा जाय हिये अन्धियारा है ।
पांच आत्मा अपनी सारो नागन का फल उलटो मारो,
मेरु दण्ड को शोध पवन दुधारा है ।

३३३

मेरी चुनरी के लागो दाग पिया ॥टेक॥
धोवत फिरूं दाग नहीं छूटे मन मूरख अभिमान किया ।
मंहगे मोल की मेरी आई चुनरिया तन मन धन कुर्बान किया
सत्गुरु धोबिया मिले सहज में दाग जिगर का साफ किया ।
जगमग जगमग करे चुनरिया कोटि भानु प्रकाश किया ।

३३४

हरि भज २ जन्म सुधर जाय कर्म कोट की कटे फांसी ॥टेक॥
तीरथ बरत धरम सब मनके क्या मथुरा भाई क्या काशी ।
भटक फिरे खाली रह जायगा अन्त समय यमकी हो फांसी ।
गम दीपक और तेल गरीबी श्रुति की बाती ला खासी ।

ज्ञान चांदना हुआ मन्दिर में दरश्यो पूरण अविनासी।
पूरण ब्रह्म सकल घट बासी क्या जोगी क्या सन्यासी।
घर बाहिर अरु है दर २ में सांचा साहिब अविनासी।
साधसत मिल सौदा करले भक्ति भावना है हांसी।
धोसा सन्त सरण सतगुरु की अगम महल के हैं बासी।

३३५

दोहा- ऊचा तरवर गगन फल विरला पच्छी खाय।
इस फल को तो जो भखै जीवत ही मर जाय॥

जब लग आशा शरीर की निरभय भया न जाय।
काया माया मन तजे चौरे रहे बजाय॥
कबीरा प्रेम रस जिन पिया अंतरगत लौं पाय।
रोम रोम मैं रम रहा और अमल क्या खाय॥

३३६

कोई पीवो रामरस प्यासा रे ॥टेक॥

गगन मंडल अमृत बरसे पीलो सासम सांसारे॥
ऐसा महंगा अमी बिकत है छै रति बारह मांसारे॥
जो पीवे सो जुग जुग जीवे कबहुं न होत विनाशा रे॥
इस रस कारण हुए नृप जोगी छोड़े भोग विलासा रे॥
गोपीचन्द भर्थरी रसिया और कबीर रहदासारे॥
गुरु दादु प्रसाद को चुनकर पाया सुन्दर दासा रे॥

३३७

मेरे सैयां डिगर गये मैं ना लड़ी थी ॥टेक॥
इस काया के दस दरवाजे,
ना जानूं, कौनसी खिड़की खुली थी ॥१॥
पांच जिठानियां दश दौरानियां,
नाजानूं इन में से कौनसी लड़ी थी ॥२॥
ना मैं बोली ना मैं चाली,
ओढ़े दुपट्टा सोई पड़ी थी ॥३॥
कहैं कमाली कबीर की बालकी,
इस ब्याही से मैं क्वारी भली थी ॥४॥

३३८

दोहा- पावक रूपी राम है, घट घट रहा समाय।
चित चकमत लागे नहीं धूंधा हो रह जाय॥
म्हारे प्रेम विरह के बाण लगेंगे काहू हरिजन के ॥टेक॥
माया बस होरहा अज्ञानी जिनके सत्गुरु लगे नहीं कानी।
चुबक चुबक रह जाय हथोड़ी जैसे घनके ॥२॥
धन संपति में फिरत भुलाया गुरु का शब्द नहीं चितलाया।
अन्त समय पछताय नर्क में जब लटके ॥३॥
बिरही की तो बिरही जाने बेदरदी नहीं पीड़ पिछाने।
फटा कलेजा जाय बीच गया सब तनके ॥४॥
जो दीखे सो रूप हमारा अलख लखे सोही लखने हारा।
रोम रोम के बीच एक हुआ हरि चमके ॥५॥
शुद्ध सच्चिदानन्द अमाया ओंकार अज ध्यान लगाया।
परमानन्द प्रकाश हुआ गया जम नसके ॥६॥

३३६

दोहा–माला जपूं न कर जपूं मुख से कहूं न राम।
मन मेरा सुमरण करे कर पाया विश्राम॥

हरदम तसबी ने फेर भाई तेरे अन्दर अमोला लाल ॥टेक॥
बिन तागे यह तसबी पोई बिना सार का बीज।
अदर सुमरणी एक न फेरी रहा काठ पर रीझ ॥१॥
मरजा जिकर मिटे सब तेरा मर के तेरा जीव।
लाख दुहाई तैंने तेरे सतगुरु की तेरे में तेरा पीव ॥२॥
एक हजार छैसो से बीसरे चांद सूरज के बीच।
नौ दरवाजे बंद कर राखे दशवें बसे जगदीश ॥३॥
पहले आपा खोजिये फिर मुंडाइये मूंड।
इधर उधर को क्या ढूंढे है इसी ढूंढ़ में ढूंढ़ ॥४॥
मौजी साध बंदगी वाको जिन गुरु दिया उपदेश।
कल्लर शाह ने सैन लखाई दिल अन्दर दरवेश ॥५॥

३४०

दोहा-तुलसी रसना तो भली जो तू सुमरे राम।
नातर काट बगाइए मुख में भलो न चाम॥

हर भजले रसना (जिह्वा) चाम की ॥टेक॥
राम भजन बिन कौन काम की आखिर जिह्वा तू है चाम की।
बेचूं तो नाह छदाम की ॥१॥
ना तीर्थ ना देव धाम की निज गूंगी गोविन्द नाम की
निन्दक तू है सारे ग्राम की ॥२॥

बहु स्वादन मेवा बादाम की उत्तर बहुरि लाकलाम की।
जैसे घोड़ी बिन लगाम की ॥३॥
शंभू सखी मैं चेरी श्याम की खता बार हूं आठों याम की।
खता बकसो निज गुलाम की ॥४॥

३४१

दोहा-एक शब्द गुरु देवका जाका अनन्त विचार।
पंडित थाके मुनि जना बेद न पावे पार॥
सुनो भाई साधो अक्षर पद का विचार ॥टेक॥
नित्य शुद्ध शिव रूप निरंजन निर्विकल्प निश्चय भव भंजन।
अजर अमर अज निर्गुण निर्मल निर्विशेष निराधार॥
विभु अनन्त अद्वैत अविनाशी पुरुषोत्तम स्वतन्त्र सुखराशी।
स्वयं प्रकाश असंग अनादि निष्क्रिय और निराकार॥
पूरण ब्रह्म अनन्त अनूपा अप्रमेय अव्यक्त अनूपा।
निर्विकार निरवयव सनातन अगम अखण्ड अपार॥

३४२

दोहा कबीरा करनी आपनी, कबहुं न निष्फल जाय।
सात समुद्र आड़े पड़े मिले अगाऊ आय॥
करले मन मेरा जो कुछ करना होय ॥टेक॥
काल करे सो आज कर जो कुछ करना होय।
अवसर चूके मौसर नाहीं पीछे झुरना होय॥
क्या तू फिरे मग्न मन अपने जंगल हिरना होय।
मवर फंसा चौकड़ी सारी भूला ही मरना होय॥

जोबन जोम ओस का मोती एक दिन ढलना होय।
अपनी चलती बुरा न करिये सब दिन डरना होय॥
मौत निमानी खड़ी शीश पर एक दिन मरना होय।
बांध रहा वर्षों के सामे पलकी खबर नहीं तोय॥
करले ना मन नाव राम की सत्गुरु शरना होय।

३४३

सुरता हे म्हारी धोबनियाँ म्हारा दाग जिगर का धोय ॥टेक॥

तनकर कूंडी मति मसाला याही में सौग करो।
लोभ लकरिया ठोक जराओ कुन्दी तो खूब करो॥
समता नीर ज्ञान का साबुन सत का मात्रा दो।
शील शिला पर दे फटकारो या विधि साफ करो॥
खैंच तान कर तह बनालो गुलझिट मत राखो।
जन्म २ के दाग लगे हैं अब के तो डारो याने धोय॥

३४४

भोर भयो पक्षी गण बोले उठो अब हरि गुण गाओरे ॥टेक॥

लखि प्रभात प्रकृति की शोभा, बार बार हर्षाओ रे।
प्रभु की दया सुमिर निज मन में सरल स्वभाव उपजाओरे।
हो कृतज्ञ प्रेम में उनके नैनन नीर बहाओ रे।
ब्रह्म रूप सागर में मन को, बारम्बार डुबाओ रे।
निर्मल शीतल लहरें लेवे, आत्म ताप बुझाओरे।

३४५

तारेंगे तहक़ीक सत्गुरु तारेंगे ॥टेक॥
घट ही में गंगा घट ही में जमना, घट ही में जगदीश ॥
तुम्हारे ज्ञाना तुम्हारे ध्याना, तुमरी तारन की परतीत ॥
मनकर धीरा बांधले, बांरे, छोड़दे पीछलो की रीति ॥
दास गरीब कबीर का चेला, टारे यम की रसीत ॥

३४६

नाम जपन क्यों छोड़ दिया ॥टेक॥
क्रोध न छोड़ा झूठ न छोड़ा, सत्य बचन क्यों छोड़ दिया।
झूठे जग में दिल ललचा कर असल वतन क्यों छोड़ दिया।
जिहीं सुमरन ते अति सुख पावे सो सुमरन क्यों छोड़ दिया।
खालक इक भगवान् भरोसे, तन धन क्यों न छोड़ दिया।

३४७

दोहा-जिसका कोई न होय हृदय से उसे लगावे।
प्राणी मात्र के लिये प्रेम की ज्योति जगावे॥
सब में विभु को व्याप्त जान सबको अपनावे।
है बस ऐसा वही भक्त की पदवी पावे॥

सूरलिया ने कियो है कठिन तप भारी ॥टेक॥
जन्मत ही ऐसी मत गाढ़ी वनमें रही एक पग ठाढी।
वर्षा शीत उष्णता बाढ़ी सो सही तन पर सारी॥
मुरली निज तप के फल लीने ब्रह्मा रुद्र इन्द्रवश कीने।
चेतन थे सो जड़ कर दीने अधःन चढ़ी मुरारी॥

एक मन्त्र विधि हरि से पावे ताते इतनी सृष्टि उपजावे।
हरि याकूं नित मन्त्र सुनाके अचरज भयो कहारी॥
हरि वृजमें निस वैन बजावे तीनलोक धुनि सुनि सुखपावे।
झब्बीलाल मनावे वृज का वास मिले बनवारी॥

३४८

देखोरी कैसो बालक रानी यशुमति जायो है ॥टेक॥
सुन्दर वरण कमल दल लोचन देखत चन्द्र लजायो है।
पूरण ब्रह्म अलख अविनाशी प्रगट नन्द घर आयो है।
मोर मुकट पीताम्बर सोहे केशर तिलक लगायो है।
कानन कुण्डल गल बिच माला कोटि भानु छवि छायो है।
शंख चक्र गदा पद्म विराजे चौभुज रूप दर्शायो है।
खम्भफार प्रकटे नर हरि वपु जन प्रह्लाद छुड़ायो है।
मच्छ कच्छ वराह अरु वामन राम रूप दर्शायो है।
परशुराम निहकलंक होय भुवि का भार मिटायो है।
काली मर्दन कंस निकन्दन गोपी नाथ कहायो है।
मधु सूदन माधव मुकन्द प्रभु भक्त वछल पद पायो है।
शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक शेष सहस्र मुख गायो है।
सो परब्रह्म प्रकट होय व्रज में लूट २ दधि खायो है।
परमानन्द कृष्ण मनमोहन चरण कमल चित्त लायो है।

३४९

दोहा-सब से भली मधूकरी, भांत भांत का नाज।
दावा काहू का नहीं बिना विलायत राज॥

ना रानी राव रङ्क बड़ा जो सुमरे नाम ।
कहे कबीर बड़पन बड़ा जो सुमरे निष्काम ॥

जिसको तू नर तन मानत है यह आप रूप भगवान है ।
अहंकार ने जब से घेरा कहन लगा मेरा और तेरा ।
भूल गया निज रूप अनेरा तू सर्वज्ञ सुजान है ॥
मैं हूं देह, देह है मेरी केवल यही भूल है तेरी ।
पांच तत्व की यह तो ढेरी जान क्यों भया अजान है ॥
बुरी भली करनी जब कर है बन्धन में तभी तो पड़ है ।
निष्क्रिय को नहीं कुछ डर है ताहे कर्म की आन है ॥
सतचित्त आनन्द भाव संभारो पांच कोस ते होजा न्यारो ।
नाम रूप कुछ नांहि निहारो यही तो निर्मल ज्ञान है ॥

३५०

आये आये बिदुर घर पावना जी ॥टेक॥

बिदुर नहीं घर थीं बिदुरानी आवत देखे सारंग पानी ।
फूली अंगन आवे चिन्ता भोजन कहा जिमावना जी ॥
केला एक प्रेम से लाई, गिरी गिरी सब देत गिराई ।
छिलका देत श्याम मुख माहीं लागे परम सुहावना जी ॥
इतने मांही बिदुर जी आये, खोटे खारे बचन सुनाये ।
छिलका देत श्याम मुख माहीं कहां गमाई भावना जी ॥
केला बिदुर लिये हाथो मांही गिरी देत गिरधर मुखमाहीं ।
कहैं कृष्णजी सुनो बिदुर जी वो सवाद नहीं आवनाजी ॥
बासी कूसे रूखे सूखे हम हैं बिदुर जी प्रेम के भूखे ।
धन्य २ गोप ब्रज नारी कृष्ण बिदुर घर पावनाजी ॥

३५१

जिधर देखता हूं उधर तू ही तू है ॥टेक॥

कि हर शै में जलवा तेरा हू बहू है।

चमन में सरू पर यह कहती है कुमरी।

तुही तू तुही तू तुही तू तुही है ॥१॥

गुलिस्तां में गुल पर यह कहती है बुल बुल,

तुही तू तुही तू तुही एक तू है॥२॥

मैं सुनता हूं हर वक्त तेरी कहानी।

कि तेरा जिकर हो रहा है कू बकू है॥३॥

बिना जिसके मावूद औरों को बोलो।

जुबां को सम्भालो यह क्या गुफ्तगू है ॥४॥

३५२

दाता एक राम भिखारी सारी दुनियां ॥टेक॥

राजा चढे रण घन दुर्जन दुनियां।

समर समूह पै दोऊ उन मुनियां ॥१॥

चोर चले चोरी करण ठग ठान ठनियां।

साहूकार रोकड़ बांधै लाद चले बनियां ॥२॥

जोगी जती जोग साधैं जपैं माला मनियां।

अंजली पसार मांगे बड़े ज्ञानी मुनियां ॥३॥

कोई नाचे गावे कोई तोड़े तान तनियां।

भजन भरोसे भीषण दास उन मुनियां ॥४॥

३५३

मनुवा नाहिं बिचारी रे तेरी मेरी कहतां ऊमर खोदई सारी रे
गर्भवास में रक्षा कीनी सदा बिहारी रे।
बाहर काढ़ो नाथ भक्ति करस्यूं थारी रे ॥१॥
बालक पन में लाड लड़ायो माता थारी रे।
पीछे तू माया संग लिपट्यो जोडी यारी रे ॥२॥
सतगुरु बात ज्ञान की कीनी लागी खारी रे।
जै काई कहता भजन करन की, जद दीनी गारी रे ॥३॥
पीछे तो मन सोच करयो, कुछ बनी न म्हारी।
पार लगाओ नाथ घानो, शरण तिहारो रे ॥४॥

३५४

बोले छै वाकी खबर नहीं, कोइ आवे छै कोई जाय ॥टेक॥
पानी को नर बन्यो बुलबुलो, धरो आदमी नाम।
कौल किया था भजन करण का, आय बसायो तैं तो गाम॥
हाथी छूटा थान से रे, लसकर पड़ी पुकार।
दश दरवाजा बन्द करारे, निकल गया असवार॥
जैसे पाणी ओस का रे, तैसे यो संसार।
कहत कबीर सुनो भाई साधो झूठो जगत व्यवहार॥
झिलमिल झिलमिल हो रही रे, जात न लावे वार।
राम नाम की नाव बनाले, उतर जायगा पार॥

३५५

प्रभु कुदरत खेल रचाया ॥टेक॥

तू निराकार, तू निर्विकार तू एक सार, यह सब असार,
कर नमस्कार सौ बार । बाजत हैं बाजा सितार,
गुण गावें तेरा तार तार, हैं ध्यावें तुझको बार बार,
सब प्रेमी तुझको गाया ॥ १ ॥

कड़कड़ात जो गरमी पड़त है, बादल कहीं नहिं नजर पड़त हैं,
आवो दाना पानी खाना, मिलता नहीं है शाम सुबह,
आई घटा घन घोर जोर से, बादल बरसे ठौर ठौर से।
इक पल में समय बदलाया ॥२॥

चिड़िया चिड़ चिड़, कोयल कू कू पी पी पपीहा, भाखत
हू हू करते हैं हरसू । हरयावल का फरश बिछा है,
शबनम के मोती से जड़ा है, बन पर्वत फूलों से लदा है।
और फलों से लदाया ॥३॥

३५६

गुरां संग मेला है सुनियो सन्त सुजान ॥ टेक ॥

प्रेम नगर की औघट बाटी, निर्भय पन्थ दुहेला है ॥१॥
लोक लाज कुल की मर्यादा, शीस दिया सो ही चेला ह ॥
उलटी पवन शिखर धुन लागी, घर रहा ध्यान अकेला है ॥
पाप पुण्य से न्यारा रहता, सत्गुरु आप नहेला है ॥
धीसा सन्त कहै सुनो भाई साधो, बाहर भीतर खेला है ॥

३५७

चलो नन्दलाल के संग में सब चल होरी मचावेंगी।
किसी विधि साथ छल बल कर पकड़ उसको बुलावेंगी ॥टेक।
चलो सब साज आभूषण कनक पिचकारी लेले कर।
चपल घनश्याम के ऊपर, सकल जल्दी से धावेंगी ॥१॥
छबीले लाल को आली पकड़ जिस वक्त पावेंगी।
उठा कर केशरी सारी, नई नारी बनावेंगी ॥ २ ॥
हमें जैसा नचाया है, उन्हें भी हम नचावेंगी।
पकड़ उस वक्त छोड़ेंगी, कि जब हा हा करावेंगी ॥ ३ ॥
फुवारे रंग केसर की सकल हिल मिल चटावेंगी।
उन्हे हम बोर कर रंग में यशोदा ढिंग लेजावेंगी ॥ ४ ॥
यशोदा देख छबि बाँका, बड़ा आनन्द मनावेंगी।
बहुत सत्कार से हम को हंस हंस के बुलावेगी ॥ ५ ॥
उठी कह कर सकल गोपी, यह अवसर फिर न पावेंगी।
शर्मा रस भरी होरी निश दिन खूब पावेंगी ॥ ६ ॥

३५८

रघुवर कौशल्या के लाल मुनि की यज्ञ रचाने वाले ॥ टेक ॥
पहुंचे जनक पुरी दरम्यान, तोड़ा सब राजन का मान।
उन्होंने नहीं किया अभिमान, शिव के धनुष तोड़ने वाले ॥
सीता व्याही आई रणवास, माता केकई भई उदास।
दिया बारह बरस बनवास, अहिल्या नार उधारन वाले।
जा बान्धा सिन्धु का सेत सुवरन लंका करदी खेत।

लंका भक्त विभीषण हेत, जल पर शिला तिराने वाले ॥
बेड़ा आन पड़ा मंझधार, तुम बिन कौन लगावे पार।
तुम तो होगये खेवन हार, मेरी धीर धराने वाले ॥

३५६

सच्चा सत्गुरु मिले तो चेला पलट कीड़े से भृंग होकर ।
समाया अपने में आप फिर में
मिसाले जल की तरंग होकर ॥१॥
इड़ा पिंगला और सुषुम्ना,
तीनों नाड़ी के संग होकर।
हमेशा बहती है यह त्रिवेणी।
हमारी भृकुटी में गंग हो कर ॥२॥
यह दिलको धोया मैं खूब मलमल,
मिसाले दर्पण के रंग होकर ।
दुई दूर कर हुवा मैं इकता,
दुरङ्ग से फिर एकरङ्ग होकर ॥३॥
रुप सच्चिदानन्द है मेरा,
कहा जबां से सोऽहं होकर।
समाया अपने में आप फिर मैं,
मिसाले जल की तरंग होकर ॥४॥
दिल कायर के कतर लिये पर,
हुवा वह बे पर अपंग होकर।
क्या मजाल है उड़ान भरले,
हमारा दिल यह मतंग होकर ॥५॥

ज्ञान का अंकुश लगाया हमने,
हमेशा सन्तों के संग होकर।
बिन सत्संगति कोई न सुधरे,
कुसंग छोड़ा सुसंग होकर ॥६॥
नाभी कमल से गया मैं सीधा,
ब्रह्म नाल की सुरंग होकर।
शून्य शिखर में सोया मैं सुख से
जन्म मरण से निशङ्क होकर ॥७॥
क्या मजाल है वहां काल की,
जो देखे मुझे बदरंग होकर।
योगी जुगत से जीवे हमेशा,
युगानयुग उस प्रसंग होकर ॥८॥
सूरज गिरि कहै सन्यासी से,
अडे कोई फुकरा मंगल हो।
तो खूब ठहरे बराबरी की,
सभा में शब्दों में जंग होकर ॥९॥
संसारी नहीं अड़े सन्त से,
अड़ै कोई नंगा निहंग होकर।
आखिर को फिर जले ज्ञान बिन,
मिसाले दीपक की पतंग होकर ॥११॥
कविता गिरि कहैं कविताई को,
ढंग से मत कर कुढंग होकर ॥११॥

३६०

प्रम हो तो श्री हरि का प्रेम होना चाहिये।
जो बने विषयों के प्रेमी उन पैं रोना चाहिये ॥टेक॥

दिन गंवाये ऐश और आराम में तुमने अगर।
रात को सुमरण हरि का करके सोना चाहिये ॥१॥
बीज बोकर बाग के फल खाये हैं तुमने अगर।
वास्ते परलोक के भी कुछ तो बोना चाहिये ॥२॥
मखमली गद्दों पै सोये तुम यहां आराम से।
सकर लम्बे के लिये भी कुछ तो बिछोना चाहिये ॥३॥
छोड़ गफलत तुमने यहां पाये हैं ये गिनती के सांस।
भोग में विषयों के फंस इनको न खोना चाहिये ॥४॥
हैंगे हृदय ही में हरि पर भक्ति बिन मिलते नहीं।
दूध से माखन जो चाहो तो बिलोना चाहिये ॥५॥

३६१

मत मारो बेदरदी कारी गैया हूं ॥ टेक ॥

दूध पिलाय मैंने तुमको है पाला अरे इस नाते से मैया हूं।
दूध दही मैं तुमको देती, भुस की आप खवैया हूं।
बल मेरे हल कूवों में चालें अरे मैं भारत बोझ खिवैया हूं।
गरुड़ पुराण में लिखा हुआ है बैतरणी की नैया हूं।

३६२

छबि दिखला जा प्यारे मोहना,

मैंनूं बंशी दी तान सुनाजा मोहना ।।टेक।।

मैंनूं ब्रजदीयां नारियां प्यारियां वे,

ओत्थे डुडियां कुव्वियां तारियां वे ।

कभी मुल्ल के पंजाब विच आजा मोहना ।।१।।

तैनूं मेरी जेइयां बहुतेरयां वें,

पर मैंनूं इक्क टंगा टेरियां वे।

मेरी ततड़ी दी प्यास बुझाजा मोहना ।।२।।

तू घर आ मेरे ब्रज वासिया वे,

बन्दी तेरे दरश दी प्यासियां वे ।

ऐसी प्यासी नूं पानी पिलाजा मोहना ।।३।।

मेरे ऐबोंपे रखना दे साइयां वें,

मेरी माफ कर सब ही बुराइयां वे।

चरणदास नूं पार लगाजा मोहना ।।४।।

३६३

आजारे मोहन आजा ।।टेक।।

शुभ गीता का ज्ञान सुना जा, लीलामय लीला दिखला जा।

कर्म बीर बनाना बतला जा बीणा ध्वनी सुनाजा ।।१।।

अभिमानी का मान घटा जा, निरंकुशों की शान घटा जा।

विमल ज्ञान भण्डार लुटाजा, प्रेम पीयूष पिलाजा ।।२।।

भारत को स्वातंत्र्य दिलाकर, दास प्रथाका अन्त करा कर।

मातृ भूमि को धीरज देकर, कुछ तो दुख मिटा जा ।।३।।

भीख मांगना भारत छोड़े, पाप कर्म से मुख को मोड़े।
सत्य धर्म से नाता जोड़े, जीवन ज्योति जगाजा ॥४॥

गोकुल वृन्दावन में जाकर, दधि माखन का चोर कहा कर।
दूध दही का स्रोत बहा कर, ऊधम फेर मचाजा ॥५॥

वह प्राचीन उमंग नहीं है निर्मल प्रेम तरंग नहीं है।
सच्चा सुख दिखता नहीं है किंचित् दया दिखाजा ॥६॥

मांगे हम लक्ष्मी मत देना, यश वैभव मांगे मत देना।
केवल मंजुल रूप दिखा कर किंचित् हृदय जुड़ाजा ॥७॥

माधव जो तू नही आवेगा, इस प्रकार जो तरसावेगा।
निश्चय ही तू पछतावेगा, प्रणयी नेह निभाजा ॥८॥

३६४

भजो राधे कृष्णा राधे कृष्णा राधे गोविन्द ॥ टेक ॥

केशोजी कल्याण गिरि धरण छबीला लाल ।
मदन मोहन श्रीवृन्दावन चन्द ॥ १ ॥

देवकी को छट्या बलभद्र जी को भय्या लाल ।
जाके मुख देखते मिटत दुःख द्वन्द्व ॥ २ ॥

व्रज पति व्रजराय सन्तन सदा सहाय ।
मुरली धरन नैना देखते आनन्द ॥ ३ ॥

जादों पति जादों राज सूरन के सारे काज ।
याही धुनि गावें स्वामी परमानन्द ॥ ४ ॥

३६५

श्रीमन्नारायण नारायण नारायण ॥टेक॥
चार वेद अरु भगवत गीता तुलसीदास जी की रामायण।
जाको नाम लेत अघ नासत काम क्रोध भये जारायण।
अजामेल गज गणिका तारे, नाम लेत भये पारायण।
कोट मुकट मकराकृत कुण्डल शंख चक्र गदा धारायण।
शिबरी के फल रुचि २ पाये, भक्त सुदामा तारायण।

३६६

हो नाथ म्हारे कांई बिगरे गो नाथ जी।
हो मेरे स्वामी लाजेगो बिरद तिहारो ॥ टेक ॥
औरां के पति एक है मैं पांच पत्यां की नारि जी।
इन पांचों ने त्याग दई हूं थे मत त्यागो बनवारी॥
कैरू कपट रच्यो दुर्योधन मन में यही तो विचारी जी।
जीत लिए हैं पांचो पण्डा छटी द्रौपदी नारी जी।
केश पकड़ कर लायो सभा में, त्रास तो दिखायो मोहे भारी।
दुर्योधन बद नीति भयो है देखन चाहे उघारी जी।
अब तक नाथ मारो कछु नहीं बिगरो द्रोपद दीन पुकारी जी
सहाय करो प्रभु थे भगतां की कहां गयो बेर तो हमारी जी।
गद २ बैन नैन जल छायो कृष्ण ही कृष्ण पुकारी जी।
फिर आवोगे लाज मरोगे दासी को देखोगे उघारी जी।
सुन बिनती प्रभु आयगए तब नख पर गिरवर धारी जी।
चीर में प्रवेश भयो है खैंचत खैंचत हारी जी।
महाभारत में कथा लिखी है श्रीवेदव्यासजी उचारी जी।
वहे कालूराम सुनो भाई धन्ना आ पहुंचे बनवारी जी।

३६७

तूही एक अनेक भयो प्रभु जी अपनी इच्छा धार ॥टेक॥
तूही सिरजे तूही पाले तूही करे संहार ।
जित देखें तित तूही तू है तेरा रूप अपार ॥१॥
तूही राम नारायण तूही तूही कृष्ण मुरार ।
साधों की रक्षा के कारण युग युग ले अवतार ॥२॥
तूही आदि और मध्य तूही है अन्त तेरो उजियार ।
दानव देव तुमही से प्रकटे तीन लोक विस्तार ॥३॥
जल थल में व्यापक है तू ही घट घट बोलन हार ।
तो बिन और कौन है ऐसा जासों करूं पुकार ॥४॥
तूही चतुर शिरोमणी है प्रभु तूही पतित उधार ।
चरणदास सुखदेव तुही है जीवन प्राण अधार ॥५॥

३६८

धर्म मत हारो रे जग में जिन्दगी दिन चार ॥टेक॥
अगम लोक से चल कर आया पल्ले खर्ची कुछ नहीं लाया ।
यहां आकर गढ़ कोट चिनाया यौंही जाता संसार ।
धर्मराज़ के जाना होगा सारा हाल सुनाना होगा ।
फिर पाछै पछतान होगा, करलो ना सोच विचार ।
अबतो चेत करो मेरे भाई तैंने वृथा उमर गंवाई ।
तैं धोके काया लुटवाई, भज राम नाम है सार ।
बार बार सतगुरु समझावें मिनखा जन्म बहुर नहीं पावे ।
गया वक्त फिर हाथ न आवे श्री स्वामीजी कहैं हर बार ।

३६६

म्हाने पार उतारो जी थाने थारे निज मक्कारी आन।

हमरो अवगुन नेक न चितवो अपनो ही कर जान ॥१॥
काम क्रोध मद लोभ मोह वश, भूलो पद निर्वान।
अवतो शरण गही चरणन की मत दीजो मोहे जान ॥२॥
लख चौरासी भटकत भटकत मोरी पड़ी पिछान।
भवसागर में बह्यो जात हूं रखिये श्याम सुजान ॥३॥
हूं तो कुटिल अधम अपराधी, ना सुमरो तेरो नाम।
नरसी के प्रभु अधम उधारन, गावत वेद पुरान ॥ ४॥

३७०

बाण बदलै सौ सौ बार बदलै बाण दो बेड़ा पार ॥ टेक ॥

सोना चँदी चौंच मंढ़ाई किया हंस की लार।
काका बाण कुबाण न छोड़े इत सत्संङ्ग लाचार ॥ १ ॥
युग युग सींचो दूध अरंड को लागै नाहिं अनार।
चूर चूर कर डारो चन्दन तजै नहीं महकार ॥ २ ॥
सज्जन के मुख अमी बसत है जब बोले तब प्यार।
दुर्जन का मुख बन्द कर रखियो मट्ठी भरे अङ्गार ॥ ३ ॥
अपनी करणी आप कहत हूं नहीं और सिर भार।
शम्भुदास वा घड़ी धन्य जब सुमरयो सिरजन हार ॥ ४ ॥

३७१

तैने नाहक में जन्म गंवाया प्रभु जी की भक्ति बिना ॥टेक॥
दिन धन्धे में रैन नींद में ना कभी हरि गुण गाया,
खोदिये वृथा दिना ॥१॥
होय निराशी भज अविनाशी छोड कपट छल माया,
मेरे मस्ताने मना ॥२॥
धन माया परिवार प्रभु का क्यों इन में रे भरमाया,
प्राणि फिरे करता गुना ॥३॥
पूर्ण ब्रह्म अजर अविनाशी पावन पवन सुहाया ऐजी,
प्रभु सबसे भिना ॥४॥

३७२

अब तो आँखें खोलो प्यारे अब तो आंखे खोलो रे ॥ टेक ॥
पूर्व दिशा अब अरुण भई है,
प्रकृति देवी पट बदल रही है।
यम ने तम की बांह गही है,
छुप कर भाजे तारे ॥ १ ॥
प्रमुदित नलिनी विहंस खिली है,
प्रिय समीर से सुरभी मिली है।
अति शोभा मय बनस्थली है,
अली गण हैं गुंजारे ॥२॥
नव जीवन संचार हुवा है,
ऐक्य भाव विस्तार हुवा है।

सुख मय सब संसार हुवा है,
जागे साथी सारे ॥ ३ ॥
उषा देवी के दर्शन पाकर,
हुए प्रफुल्लित सभी चराचर।
तुम क्यों सोवै शीश झुका कर,
सुध बुध सभी बिसारे ॥४॥

३७३

शंकर तेरी जटा में जल धार गंग है।
उठते हैं बार बार वारि के तरंग हैं ॥टेक॥
गले मुण्ड माल है कानों में है कुण्डल ।
खाने को कन्द मूल फल पीने को भंग है ॥१॥
मृग छाल कमर में कसी वृष राज पै चढ़े।
मस्तक में चन्द्र की कला विभूति अङ्ग है ॥२॥
डमरू त्रिशूल हाथ में गिरजा है अंक में।
त्रिनेत्र भूजा चार कण्ठ नील रंग है ॥ ३ ॥
कैलाश में निवास है गण साथ में रहें।
ब्रह्मानन्द अपने दास के सदा ही संग है ॥४॥

३७४

ले गयो चीर मुरारी जी मैं कैसे करूं ॥टेक॥
लेकर चीर कदम पर बैठ्यो हम जल मांहि उघारी जी ॥
तुमरो चीर जभी हम देंगे जल से हो जावो न्यारी जी ॥
जो हम जल से न्यारी होवें जायगी लाज तिहारी जी ॥
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छबि तुम जीते हम हारी जी ॥

३७५

विघन निवारण तुम हो गणेशा ॥टेक॥

पार्वती के पुत्र कहाओ,
शिव की पुरी के तुम हो गणेशा ॥

एक दन्त दूजी सूंड विराजे,
मूसे से वाहन गल बिच शेषा ॥

ध्याना के प्रभु दास दामोदर,
जैशिव जैशिव उज्वल भेषा ॥

३७६

विघ्न हरण सुख कन्द सिद्धि सदन वारण वदन।
दमन करो दुःख द्वन्द्व लम्बोदर गणपति सदा ॥

गणपति गिरिजा जी के लाल, सारे विघ्न मिटाने वाले।
हो तुम गौरी पुत्र गणेश, तुम्हें शिरनावें शारद शेष।
निश दिन रटते तुम्हें महेश, मोदक भोग लगाने वाले ॥१॥

प्रभु तुम हो मूषक असवार, मेटत विघ्न रूप अन्धियार।
तुमरा पाये न कोई पार, बिगरे काज बनाने वाले ॥२॥

गजानन लम्बोदर बागीश बहु नर कहें तुम्हें जगदीश।
सब ही देव नवावें शीश, प्रभो एकदन्त कहाने वाले ॥३॥

प्रथम सब धरें तुम्हारा ध्यान, हम हैं बाल मूढ अज्ञान।
दीजे बल विद्या अरु ज्ञान, विद्या बुद्धि बढ़ाने वाले ॥४॥

३७७

बंसिया बाजी रे मोहन की, छुट गया शिवशंकर का ध्यान।
बैल चढ़े शिव शंकर आये गरुड़ चढ़े भगवान्।
कृष्ण चन्द्र की बाजी बांसुरी शंकर तोड़े तान ॥१॥
शिव के कानन मुद्रा विराजे कृष्ण के कुण्डल कान।
कृष्णजी खाते माखन मिसरी, शिवजी फांके भांग ॥२॥
कृष्णजी देते मोक्ष पदार्थ, शंकर देते ज्ञान।
दास नारायण शरण आपको दो भक्ति का दान ॥३॥

३७८

मन वृन्दावन चाल बसारे,
मान घटो चाहे लोग हंसोरे ॥टेक॥
गुरु बिन ज्ञान गंग बिन तीरथ।
एकादशी बिन व्रत किसोरे।
बालू की भीत अटारी को चढबो,
ओछे की प्रीत कटारी को मरबो ॥१॥
दीप बिन मन्दिर छत्र बिन राजा,
बिन पूतां परिवार किसोरे ॥२॥
मन ना मिल्यो वासे मिलबो किसोरे,
प्रीत करी वासे परदो किसोरे ॥३॥
चन्द्र सखि भज बाल कृष्ण छबि,
नन्द को गोविन्द म्हारे हृदय बसोरे ॥४॥

३७६

भोर भयो पक्षिगण बोले, उठो अब हरि गुण गाओ रे ॥टेक॥
लखि प्रभात प्रकृति की शोभा, बार २ हर्षाओ रे ॥
प्रभुकी दया सुमर निज मनमें सरल स्वभाव उपजाओ रे।
हो कृतज्ञ प्रेम में उनके, नैनन नीर बहाओ रे ॥
ब्रह्म रूप सागर में मन को, बारम्बार डुबाओ रे ॥
निर्मल शीतल लहरें लेले, आत्म ताप बुझाओ रे ॥

३८०

मन तू क्यो पछतावै रे शिर पर श्रीगोपाल,
बेड़ा पार लगावै रे ॥ टेक ॥
निज करणी को याद करूं तो जी घबरावै रे ॥
वाकी महिमा सुन सुन मन में धीरज आवै रे ॥
जो कोई अनन्य मन से हरि का ध्यान लगावै रे ॥
वाके घर की योग क्षेम हरि आप निभावै रे ॥
शरणागत की लाज तो सब ही ने आवै रे ॥
तीन लोक को नाथ लाजको नहीं गंवावै रे ॥
जो मेरा अपराध गिनो तो अन्त न आवै रे ॥
ऐसो दीनदयाल चित्त में एक न लावेंरे ॥
पतित उधारन विरद वाको बेद बतावै रे ॥
महिमा अपरम्पार तो सुर नर मुनि गावै रे ॥
ऐसा नन्दकिशोर भक्त की ओर निभावै रे ॥
वो है रमा निवास भगत की आश मिटावै रे ॥
तू मत होय उदास कृष्ण को दास कहावै रे ॥

३८१

छवि अपनी दिखाजा मुरारी हमें ॥टेक॥

यमुना के तट पर जाय के गो गो पिलाय के।
मोहे थे तीनों लोक को वंशी बजाय के॥
वही वंशी सुनाजा मुरारी हमें ॥१॥

जाकर कदम्ब के पेड़ पर बसतर चुराय के।
बैठे थे आसन मार कर मुखड़ा छिपाय के॥
दीजे दर्शन मुरारी खरारी हमें ॥ २॥

बालक अवस्था बीच में माखन चुराय के।
माता के हाथ जाय के ऊखल बन्धाय के॥
वही सूरत दिखाजा बिहारी हमें ॥३॥

माटी जो खाई आपने ब्रज भूमि जाय के।
चौदह भुवन त्रैलोक्य को मुख में दिखाय के॥
दीजे भक्ति में प्रीति गिरधारी हमें ॥४॥

सुनिये हे आनन्द कन्द हो ब्रजचन्द आनके।
रक्षा कीजिए बालक जो जानके॥
दीजे भव सेती पार उतारी हमें ॥ ५ ॥

३८२

भगवन् तुम्हीं बतादो किसकी शरण हमें।
तज कर जगत् पिता को किस से विथा कहें हम ॥टेक॥
भव सिन्धु है अपारा सूझे न वार पारा।
तेरे बिना सहारा मझधार में बहें हम ॥१॥

हा जगत आह कल २ पछताये हाथ मल मल।
अब कल पड़े न पल पल मन मार कर रहें हम॥
मानो नहीं सुनो हा फिर सोचलो हृदय की।
ये धमकियां कहां तक कहदो भला सहें हम॥

३८३

निर्बल के प्राण पुकार रहे जगदीश हरे।
श्वासों के स्वर झनकार रहे जगदीश हरे॥ १॥
आकाश हिमालय सागर में पृथ्वी पाताल चराचर में।
यह मधुर बोल गुंजार रहे, जगदीश हरे॥ २॥
जब दया दृष्टि हो जाती खेती हरियाती है।
इस आशा पै जन उच्चार रहे जगदीश॥ ३॥
सुख दुःखोंकी चिन्ता है नहीं भय है विश्वास न जाय कहीं।
टूटे न लगा यह तार रहे, जगदीश हरे॥ ४॥
तुम हो करुणा के धाम सदा सेवक है राधेश्याम सदा।
बस इतना विचार रहे जगदीश हरे॥ ५॥

३८४

श्रीराधे रानी दे डारो ना बंसरी मोरी॥ टेक॥
जिस बंशी में मोरे प्राण बसत हैं सो बंशी गई चोरी॥
सोने की नांही कान्हा रूपे की नांहीं हरे २ बास की पोरी॥
काहे से गाऊं राधे काहे से बजाऊं काहे से लाऊं गैय्या घेरी
मुखसे गावो ध्यारे तालसे बजावो लकुटीसे लाओ गैय्या घेरी
चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छबि हरि चरणन की चेरी॥

३८५

दयार्द्र हो दयालु दासता विनाश कीजिये।
मिटा प्रमादशान्ति का विमल प्रकाश दीजिये॥
विमोह वश न हम कभी स्वदेश का अहित करें।
परोपकार के लिये प्रसन्न चित्त हो मेरे॥
यहां स्वतन्त्रतार्क की नवीन ज्योति जगमगे।
अनीति नाव न्याय सिन्धु में निराश्रय डगमगे॥
सुवीर भूमि वीर भूमि फिर बने जहान में,
परार्त्ति हारिणी बने स्वदेश समुत्थान में॥
समिष्टि प्रेम में सदा सामोत प्रीत हम बहें।
बचें प्रपंच जाल से सुमार्ग पर डटे रहें॥
न देश शत्रु भी बने स्वदेश में हमें कभी।
हो कष्ट भले ही हमें न हो कष्ट उसे कभी॥
जीवन परोपकार मय पवित्र प्रभो बनाइये।
कृपालु हो कृपा अबोध जनों पर दिखाइये॥
पथ में निराश्रयी बना न भूलना हमें प्रभो।
हम भूल जांय तदपि तुम हमें न भूलना प्रभो॥

३८६

दरशन देना प्रान पियारे नन्दलाला मेरे नैनों के तारे
दीनानाथ दयाल सकलगुण नवलकिशोर सुन्दर मुखवारे
मनमोहन मन रुकत न रोक्यो दरशन की चित चाह हमारे
रसिकखुशाल मिलनकी आशा निशिदिन सुमरन ध्यान लगारे

३८७

राम राम गाओ सन्तो राम राम गाओ ।
राम नाम गाय गाय राम को रिझाओ ॥
राम ही को नाम जपो राम ही को ध्याओ ।
राम राम राम कहत मगन होई जाओ ॥
राम राम सुनि सुनाय हिय अति हुलसाओ ।
राम राम राम रटत सब विधि सुख पाओ ॥
राम नाम मद्य पीवो विषय मद भुलाओ ।
राम रस पीय पीय तनु सुधि बिसराओ ॥
राम आदि मध्य राम राम अन्त पाओ ।
राम मय अखिल जगत राम में समाओ ॥

३८८

कर मन नन्दन नन्दन को ध्यान ॥
यह अवसर तोहे फिर न मिलैगो मेरो कह्यो अब मान ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे कुण्डल झलकत कान ॥
नारायण अलसाने नैना झूमत रूप निधान ॥

३८९

प्रभु मैं शरणागति तेरी, निवारो शीघ्र विपत मेरी ॥ टेक ॥
अज्ञानी जानत नहीं वर्माधर्म विचार ।
जो तोहे भावे धर्म है दूजा सभी असार ॥
नाथ काटो ममता मेरी ॥१॥

निराश्रयों का आसरा निरधारण आधार ।
मेरा तुम बिन कोई नहीं ऐ मेरे सिर्जन हार ॥
करो भव पार नाव मेरी ॥२॥

तू प्रभु अगम अपार है बेहद और बे थाह ।
निराकार परमात्मा सबसे बेपरवाह ॥
न जाने क्या मरजी तेरी ॥३॥

जो जो मैं हूं सो सो तू है तुझसा और न कोय ।
अहं आत्मा ब्रह्म हूं, यह ज्ञान समरपूं तोय ॥
प्रगट हो अब न करो देरी ॥४॥

३६०

काया का पिंजारा डोले एक सांस का पंछी बोले ॥
तन नगरी में मन मन्दिर परमात्म जिसके अन्दर ॥
दो नैन हैं पाक समुन्दर तू पापी पाप को धोले ॥
आने की शहादत जाना फिर जाने से क्यों घबराना ॥
यह दुदियो मुसाफिर खाना उठ जाग जगत मैया बोले ॥
मां बाप पति पत्नी का दो दिन का साथ सभी का ॥
यह रिश्ता जीते जी का तू पापी पाप क्यों तोले ॥

३६१

जिन्दा रह कर या मर मिटकर,
हम तुम से मिलेंगे कभी न कभी ॥ टेक ॥
आखिर हम आंखों वाले हैं,
तुम्हें देख लेंगे कहीं न कहीं ।

लाखों ही तुम पर मरते हैं,
दम तेरे प्रेम का भरते हैं ॥

जो सौ सौ इरादे करते हैं,
एक बार मिलेंगे कभी न कभी ।

परदे का न होगा नाम कहीं,
बन जायेंगे बिगड़े काम सभी ॥

तुम बात करोगे कहीं न कहीं,
हम बोल पड़ेंगे कहीं न कहीं ।

काशी न सही मथुरा में सही,
काबा न सही बुतखा में सही ॥

गर हम जो सच्चे आशिक हैं,
तुम्हें ढूंढ लेंगे कहीं न कहीं ।

आफत देखी और गम देखा,
गंगा देखि जम जम देखा ॥

रामा जब तुम हमसे मिलते नहीं,
हम डूब मरेंगे कहीं न कहीं ।

दाना न सही नादान सही,
और अमीरी न सही तो फकीरी सही ।

जिंदा रह कर या मर मिट कर,
तेरे दर्शन होंगे कहीं न कहीं ॥

——

३६२

प्रेम की झिल मिल है नगरी

अखिल अण्ड ब्रह्माण्ड पर सब लोकन ते अगरी ॥ १ ॥
अतिशय चित्र बिचित्र अलौकिक शोभा चहुं बगरी ॥ २ ॥
नहिं तहं चांद न सूरज तोहूं जागत जग मगरी ॥ ३ ॥
रसकी भूमि नीरहुं रसको रसमव है सगरी ॥ ४ ॥
भरयो रहत रस सदा एक रस पिये रस की गगरी ॥ ५ ॥

३६३

बजरंग बली मेरी नाव चली,
जरा कृपा की बल्ली लगा देना।
मुझे शेग शोक ने घेर लिया,
मेरे ताप को नाथ मिटा देना ॥ टेक ॥
मैं दास तो आप का जन्म से हूं,
सेवक और शिष्य भी धर्म से हूं।
बेशक बिमुख निज कर्म से हूं,
मेरा चित्त से दोष भुला देना ॥१॥
दुर्बल हूं गरीब हूं दीन हूं मैं,
निज क्रियागत क्षीण हूं मैं।
बलवीर तेरे आधीन हूं मैं,
मेरी बिगड़ी हुई को बना देना ॥२॥
बल देकर मुझे निर्भय करदो,
शक्ति महान् मेरी अक्षय करदो।

मेरे जीवन को सुखमय करदो,
सरजीवनी आय पिला देना ॥३॥
करुणानिधि आप का नाम भी है,
शरणागत राधेश्याम भी है।
इसके अतिरिक्त यह काम भी है,
श्रीराम से मुझे मिला देना ॥४॥

३६३

जब प्रेमका डंका बजा दिया मन मोहन वंशी वारेने।
मृतकों में जीवन जगा दिया मन मोहन वंशी वारेने॥
अज्ञान अंधेरी काली थी मुश्किल होना रखवाली थी।
सोते से हमको जगा दिया मन मोहन वंशी वारेने॥
गीता उत्तम पुस्तक रच कर, भर दिये प्रेम मोहक मन्तर।
अर्जुन को निर्भय बना दिया मन मोहन वंशी वारे ने॥
दुःशासन शकुनि दुर्योधन, करना चाहें द्रौपदी नगन।
बस बसन उसी दम बढ़ादिया मन मोहन वंशी वारेने॥
पल्टनें खड़ी लड़ने को, कट कट कर रण में अड़ने को।
तब बिगुल विजय का बजा दिया मन मोहन वंशी वारेने॥
दुर्योधन महारथी मारे छूटे थे खूं के फव्वारे।
अर्जुन का झण्डा खड़ा किया मन मोहन वंशी वारेने॥
अब गौवें दुःख से चिल्लातीं सुन कर दुःख से फटती छाती।
है यदा यद संकेत किया मन मोहन वंशी वारेने॥
गोपाल कृष्ण फिर आवेंगे बधिकों से गौ छुड़वावेंगे।
जिस तरह कंस विध्वंस किया मन मोहन वंशी वारेने॥

३६४

इतना तो करना भगवन जब जग में जन्म होवे।
तेरे चरण में हो मन जब० ॥ टेक ॥
पृथ्वी पै जब मैं आऊं तुम को न भूल जाऊं।
तेरे ही गीत गाऊं जब जग में जन्म होवे ॥१॥
माया नहीं सतावे वह ज्ञान दिल में आवे।
हरजा तुही दिखावे जब जग में जन्म होवे ॥२॥
जहां ज्ञान हो घनेरा गुण गान भी हो तेरा।
उस घर में हो बसेरा जब जग में जन्म होवे ॥३॥
जब काल की हो फेरी छवि सामने हो तेरी।
ईश्वर यह चाह मेरी जब जग में जन्म होवे ॥४॥

३६५

सब सखियां बनी दिलंगवा राधा सूबेदार बनी ॥ टेक ॥
लाल बनाती कुड़ती पहरें, और काछे कछनी।
तोसदर अरु पथर कलासी ज्यों चिमकत सेल अनी ॥
मात यशोदा बाहर निकली द्वारे भीड़ घनी।
कहां सन्तरी कहां ते आये कहो अपनी अपनी ॥
कंस राय ने हमें पठाया सुनो नन्द धरनी।
बहुत दिना दधि माखन खायो अब भुगतो करनी ॥
फौजदार बनी चन्द्रावल पकड़े श्याम धनी।
लालदास दरशन की प्यासी लीजो मेज अपनी ॥

३६६

मंगल मूर्ति नाथ तुम्हारी कब हमको दिखलाओगे ॥टेक॥
विरह ज्वाला से हृदय तपत है कब शान्ति बून्द बरसाओगे।
अब तो और रहा नहीं चारा ढूंढ फिरा मैं सब संसारा।
बिन तेरे नहीं कोइ हमारा कब यह तृष्णा मिटाओगे॥
अब तो प्रभु जी दर्शन पाऊं तेरा ही निशदिन ध्यान लगाऊं।
और न कोई वस्तु चाहूं अब विश्वासी बनाओगे॥
केशव नन्दने शब्द बजाया नव विधान की महिमा सुनाया।
किस विध उसने पद यह पाया कब विद्या बेगि सिखाओगे॥
अब हृदय को ऐसा बनाओ विश्वासी में भेद न लाओ।
ऐसी कृपा हम पर लाओ यह दास चरणों में बिठाओगे॥

३६७

हमारे गुरू हैं पूरन दातार।

अभय दान दीनन को दीन्हें, कीन्हें भव-जल-पार॥
जन्म-जन्म के बन्धन काटे, जमकी बन्ध निवार।
रंक ते सो राजा कीन्हें, हरि धन दियो अपार॥
देवैं ज्ञान भक्ति पुनि देवैं जोग बतावन हार।
तन मन बचन सकल सुखदाई, हिरदे बुधि- उजियार॥
सब दुख गंजन पातक भंजन, रंजन ध्यान विचार।
सज्जन दुर्जन जो चलि आवे, एकहि दृष्टि निहार॥
आनन्दरूप स्वरूपमई है, लिप्त नहीं संसार।
चरणदास गुरु सहजो केरे, नमो नमो बारम्बार॥

३६८

वाह २ रे मौज फकीरांदी ॥टेक॥
कभी चबावें चना चबीना कभी लपट लें खीरांदी ॥
कभी तो ओढें शाल दुशाला कभी गुदड़िया चीरांदी ॥
कभी तो सोवें रंग महल में कभी गली अहीरांदी ॥
ग त ग के टुकड़े खान्दे चाल चले अमीरांदी ॥

३६६

तृण जो दन्त धर धरही, तिनहिं मारत सबल कोई।
हम नित प्रति तृण चरहिं बैन उच्चरहिं दीन होई॥
हिन्दुहिं मधुर न देहिं, कटुक तुरकन न पिलावहि।
पय विशुद्ध अति स्रवहिं, बच्छ महिथम्बन जावहिं॥
सुन शाह अक्कबर, अरज, यह करत गौ जोरे करन।
सो कौन चूक मोहे मारियत, मुये चाम सेवहू चरण॥

४००

दांतों तले त्रिण दाब कर हैं दीन गायें कह रहीं।
हम पशु तथा तुम हो मनुज पर योग्य क्या तुमको यही॥
हमने तुम्हें मां की तरह है दूध पीने को दिया।
देकर क़साई को हमें तुमने हमारा वध किया॥
"क्या वश हमारा है भला हम दीन हैं बलहीन हैं।
मारो कि पालो, कुछ करो तुम, हम सदैव आधीन हैं॥
प्रभु के यहां कदाचित् आज हम असहाय हैं।
इससे अधिक अब क्या कहें हा! हम तुम्हारी गाय हैं॥

३६६

जरा वंशी की तान सुनादे तुझे माखन देगी ॥टेक॥
सारी सखियां हिल मिल आवें, पीछे २ कहती जावें।
कोई वंशी की तान सुनादे ॥ १ ॥
माधव विरखा पर चढ जावे, ग्वालिन नीचे शोर मचावे।
तू चीर हमारा लादे ॥ २ ॥
किसने बीज प्रेम का बोया, किसने सखियों का मन मोहा।
वंशीवारे तू सांच बतादे ॥ ३ ॥
तेरी नज़ीर नहीं इस जग में, यमुना आन पड़ी है मग में।
कोई प्रेम की धारा बहादे ॥४॥
परम सुहावन सावन आया, सब सखियों का मन हुलसाया
कोई प्रेम की पींग झुलादे ॥५॥

४००

सत्संगत् में जाके पतित पार हो जाते ॥टेक॥
बाल्मीक खुटकर्म करे थे लूट २ धन लाते।
सप्त ऋषि बनखण्ड में मिल गये सच्चा मार्ग पाते॥
वेश्या भाड़ली, कर्मा कूबड़ी धन्ना भक्त कहाते।
रैदास भक्त था तत्वदर्शी, शब्द जिन्होंने गाते॥
लिखमा माली नामदेव छीपा, सत्संगी फल पाते।
अजामील सुत हेत पुकारे, स्वर्ग लोक दशति॥
भीलनी जात अधमानारी थी, रामचन्द्र घर आते।
झूठे बेर तोड़ के लायी, रुची रुची भोग लगाते॥

लोहा भी कंचन हो जाता, पारस संग मिलाते ॥
लोहा काठ संग में लाके, जल के बीच तिराते ॥
जैसे पत्थर घसे रज्जु ते, ऐसे पाप कट जाते ।
सन्ता के शरणा जाके, कवि भीष्म सुख पाते ॥

४०१

लगेरे मोहि नाम निरंजन प्यारा ।
रसना कैसे न भजे तू हरि पद, अघनाशका ओंकारा ।
अति दुर्लभ मानव शरीर यह, मिलही न बारम्बारा ।
है प्रभु वही सृष्टि का कर्ता है, वही पालन हारा ।
जन्म मरण से रहित अमित गुण, बुद्धि विद्या भंडारा ।
उसे त्याग सुख चहत मन्दमति, सो अति मुढ़ गंवारा ।
करत सदा दीनन पर दाया, है सोई हाथ हमारा ।
औघट घाट नाव मेरी उरझी, सूझत नहीं किनारा ।
तुम्ही नाथ अब पार लगाओ, नहीं तो डूबत है मझधारा ।
कहत 'पलन्दर' हमहि उबारो हे प्रभु अधम अधारा ।

४०२

कर जोड़ विनय करूं तोरे ।
सब अपराध क्षमा करो मोरे ॥टेक॥
मैं छलिया कपटी अति कामी
तुम हो पतित उद्धारक नामी ॥१॥
तुम्हें छोड़ किस द्वारे जावें ।
मन की विथा हम किसे सुनावें ॥२॥

हम सेवक हैं अनुगत बालक ।
तुम स्वामी रक्षक प्रति पालक ॥३॥
आन गिरे हम शरण निहारी ।
जन्म मरण का है दुःख भारी ॥४॥
विनय करें प्रति दिन उठ प्राता ।
हमको कंठ लगाओ ताता ॥५॥
हे मङ्गल मय मङ्गल दाता ।
तुम हो मात पिता मम भ्राता ॥६॥
चारों पदारथ आप ही दीजे ।
दर दर का नहीं भिक्षुक कीजे ॥७॥

४०३

कर कृपा पार उतारियो मेरी टूटीसी किश्ती है ॥टेक॥
तुम अविनाशी अजर अमर हो, सारे भुमंडल के घर हो।
सब के भीतर अरु बाहिर हो, कारीगर बड़े भारी हो ॥
रची अजब सकल सृष्टि है ॥१॥
सबका न्याय करो तुम न्याई, बिन वजीर अरु बिना सिपाही
करो फैसला कलम न स्याही, ऐसे न्यायकारी हो ॥
नहीं गलती पड़ सकती है ॥२॥
हमने दुःख भोगे हैं भारी, बहुत हुई दुदर्श हमारी।
अब हम आये शरण तुम्हारी, तुम लग मेरी दौड़ है।
तारो तो तर सकती है ॥३॥
बिन कृपा करुणानिधि तेरी, कुछ नहीं पार बसाती मेरी।
कहे तेजसिंह भारत की बेड़ी, काट सभी दुःख टारियो ॥
जो हृदय कुमति बसती है ॥४॥

४०४

बसौ मेरे नैननि में दोउ चन्द ।
गौर बदनि वृषभानुनन्दिनी, स्याम बरन नन्दनन्द ॥१॥
गोकुल रहे लुभाय रूप में, निरखत आनन्दकन्द ।
जै श्रीभट्ट प्रेमरस बन्धन, ज्यों छूटे दृढ़ फन्द ॥२॥

४०५

सुमरूं गणेश शारदा माई ॥टेक॥
विघ्न हरण गौरी के नन्दन सुमरूं सदा सुखदाई ।
और सुमरूं खेड़े की मुइयां ऊजड़ खेड़ा दिया बसाई ॥१॥
रामचन्द्र जी ने ऐसो सुमरूं लंका करी चढाई ।
लंकापति रावण ने सुमरूं रामचन्द्रजी की सिया हरलाई ॥२॥
मेघनाथ ने ऐसा सुमरूं शक्ती बान चलाई ।
बालजती लक्ष्मन ने सुमरूं मारलियो मेघनाद बलदाई ॥३॥
पांचों तो पांडवां ने सुमरूं जिन की करी सहाई ।
हनूमान जोधा ने सुमरूं ठोक पीट बाकी लंका जलाई ॥४॥
तुलसी दास भजा भगवाना हरि चरणन चित लाई ।
विभीषण ने ऐसो सुमरूं लंका को राज दियो रघुराई ॥५॥

४०६

मुकुट परवारी जाऊं नागरनन्दा ॥टेक॥
सबदेवन में कृष्णा बड़े हैं ज्यों तारन बिच चन्दा ॥१॥
सबदेवन में राधे बड़ा है ज्यों नदियन बिच गंगा ॥२॥
डार २ में पात २ में तेरा ही नाम गोबिन्दा ॥३॥
मोर मुकुट पीताम्बर साहे बिच केसर को बिन्दा ॥४॥
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवि कट जाय यमके फंदा ॥५॥

४०७

प्रभु ने कैसी रेल बनाई ।।टेक।।

तन की गाड़ी मन का अंजन क्रोध की आग जलाई ।

पानी रुधिर अपार भरो है मन के वेग लै जाई ।।

श्वांस की सीटी बजाई ।।१।।

नाड़ी खबर तार देने को दशों ओर फैलाई ।

इन्द्रिन के तो बने स्टेशन ज्ञान की चश्मी बजाई ।।

धर्म की खेप लदाई ।।२।।

उत्तम मध्यम अधम तीन हैं दरजे इसके बनाई ।

कर्म अकर्म की टिकट बटत हैं पाप पुण्य पहुँचाई ।।

सुनिये कान लगाई ।।३।।

जीव आत्मा बैठयो इस में अपनी टिकट दिखाई ।

देखने वाला वह जगदीश्वर जिसने रेल चलाई ।।

देखिये अचरज भाई ।।४।।

४०८

जैसो रंग बरसे बरसाने सो रंग बैकुण्ठ में नाहिं ।।टेक।।

सुर तेतीसन की मत बोरी बन के चले स्वर्ग की पौरी ।

देख देख या ब्रज की होरी ब्रह्मा मन पछताय ।।१।।

सकरी गली बना पर्वत की दबी ले चली कुंवर कीरता की ।

आगे गाय चरें गिरधर की दीने सखा सिखाय ।।२।।

दे आओ दान कुंअर मोहन को अब छोडूं तिहारे मोहन को ।

मुरक सम्हारन लागी ग्वालिन मन में अति सकुचाय ।।३।।

उनके संग सखी मदमाती इनके संग सखा उत्पाति ।

घेर लई हथिया मदमाती आनन्द उर न समाय ॥४॥
जो या रसको सुने और जाने ब्रज सुर्वातन को देवी माने
ताके होय रोम रोम ज्ञाने तिनको जमपुर नाहि ॥ ५ ॥

४०९

डरते रहो यह जिन्दगी बेकार ना हो जाये ।
सुपने में किसी जीव का अपकार ना हो जाये ॥टेक॥
पाया है तन अनमोल सदाचार के लिये ।
विषयों में फंस के तुमसे अनाचार ना हो जाये ॥ १ ॥
सेवा करो निज धर्म की शुभ कर्म हरि भजन ।
इतना भी करके तुमको अहंकार ना हो जाये ॥ २ ॥
मंजिल असल मुकाम की तय करनी तुम्हें ।
जग ठग नगर में फंस कर गिरफ्तार ना हो जाये ॥ ३ ॥
मायो लगी है बाजी माया मोह जाल से ।
धोके में पड़के अबके कहीं हार ना हो जाये ॥ ४ ॥

४१०

रे मन क्यों न भजे रघुबीर। टेक ॥
जाहि भजत ब्रह्मादिक सुर नर ध्यान धरत मुनि धीर ॥ १ ॥
श्याम बरण मृदु गति मनोहर भंजन जन की पीर ॥ २ ॥
लछमन सहित सखा संग लीने विचरत सरयू तीर ॥ ३ ॥
मन्द मन्द मुसकात सखन संग बोलत बचन गम्भीर ॥ ४ ॥
पीत बसन दामिनी द्युति निन्दित कर कमलन धनु तीर ॥ ५ ॥
रामदास रघुनाथ भजन बिन धृग् धृग् जन्म शरीर ॥ ६ ॥

ी आनन्द उर न समाय
जाने ब्रज युवतिन को देवी
तिनको जमपुर नाहि ॥
४०६

दगी बेकार ना हो जाये ।
का अपकार ना हो जाये ॥टेक॥
सदाचार के लिये ।
अनाचार ना हो जाये ॥ १ ॥
शुभ कर्म हरि भजन ।
अहंकार ना हो जाये ॥ २ ॥
ी तह करनी तुम्हें ।
गिरफ्तार ना हो जाये ॥ ३ ॥
या मोह जाल से ।
ही हार ना हो जाये ॥ ४ ॥

रघुवीर । टेक ॥
ध्यान धरत मुनि धीर ॥ १ ॥
र भंजन जन की पीर ॥ २ ॥
ने विचरत सरयू तीर ॥ ३ ॥
बोलत वचन गम्भीर ॥ ४ ॥
र कमलन धनु तीर ॥ ५ ॥
गु भुगु जन्म शरीर ॥ ६ ॥

# उद्देश्य

१—श्री भगवान की भक्ति का प्रचार करना।

२—गौरक्षण और उसके लिये गोचर भूमि छुड़वाना।

३—जंगलों में वृक्ष लगवाना और बीच में जलाशय बनवाना।

४—शिक्षा का प्रचार करना जिसमें मनुष्यमात्र लाभ कर सकें और प्राचीन प्रथा का फिर करना।

५—बीमारियों के अवसर पर दवाई बांटना।

६—आस पास के ग्रामों में परस्पर के झग... वैमनस्य मिटा कर शान्ति और प्रेम बढ़ाना।

७—सब संस्थाओं में भगवद्भक्ति और धर्म का भाव जागृत करना।

८—राजा और प्रजा सब ही का हित चिन्तन करना।